PDF Compressor Free Version

इग्नू
जन-जन का
विश्वविद्यालय

इंदिरा गांधी
राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
शिक्षा विद्यापीठ

बीईएस-121
बाल्यावस्था और वृद्धि

खण्ड

2

वृद्धि : शैशवावस्था से प्रौढ़ावस्था

इकाई 4
वृद्धि और विकास की समझ 5

इकाई 5
बाल विकास में विभिन्न परिप्रेक्ष्य 26

इकाई 6
बाल विकास के आयाम 50

इकाई 7
बच्चों और किशोरों के अध्ययन की विधियाँ 76

PDF Compressor Free Version

विशेषज्ञ समिति

प्रो. आई.के. बंसल (अध्यक्ष)
पूर्व अध्यक्ष प्रारंभिक शिक्षा विभाग,
एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली

प्रो. श्रीधर वशिष्ठ, पूर्व कुलपति
लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ,
नई दिल्ली

प्रो. परवीन सिंक्लेयर
पूर्व निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी.
विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

प्रो. ऐजाज़ मसीह
शिक्षा संकाय, जामिया मिलिया इस्लामिया,
नई दिल्ली

प्रो. प्रत्युश कुमार मंडल
डी.ई.एस.एस.एच., एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली

प्रो. अंजु सहगल गुप्ता
मानविकी विद्यापीठ,
इग्नू, नई दिल्ली

प्रो. एन.के.दाश (निदेशक)
शिक्षा विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली

प्रो. एम.सी. शर्मा (कार्यक्रम समन्वयक, बी.एड.)
शिक्षा विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. गौरव सिंह (कार्यक्रम सहसमन्वयक, बी.एड.)
शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

विशिष्ट आमंत्रित सदस्य (शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू)

प्रो.डी. वेंकटेश्वरलू
प्रो. अमिताभ मिश्रा
सुश्री पूनम भूषण
डॉ. आइशा कन्नाड़ी
डॉ. एम.वी.लक्ष्मी रेड्डी

डॉ. भारती डोगरा
डॉ. वन्दना सिंह
डॉ. एलिजाबेथ कुरूविला
डॉ. निराधार डे
डॉ. अंजुली सुहाने

पाठ्यक्रम समन्वयक : डॉ. एलिजाबेथ कुरूविला, शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू

खंड निर्माण दल

पाठ्यक्रम योगदान

इकाई 4
डॉ. कामाक्षी अग्निहोत्री
एसोसिएट प्रोफेसर
शिक्षा विद्यापीठ,आई.ए.एस.ई.
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर

इकाई 5
डॉ. एलिजाबेथ कुरूविला
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू,
नई दिल्ली

इकाई 6
सुश्री सिद्धि सूद
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
श्री गुजराती समाज बी.एड.
कॉलेज, इन्दौर

इकाई 7
प्रो. मेहनाज अंसारी
आई.ए.एस.ई., शिक्षा संकाय
जामिया मिलिया इस्लामिया
नई दिल्ली

विषयवस्तु संपादन
प्रो. जेसी अब्राहम
आई.ए.एस.ई., शिक्षा संकाय,
जामिया मिलिया इस्लामिया
नई दिल्ली

पाठ्यक्रम संरचना तथा प्रारूप संपादन
डॉ. एलिजाबेथ कुरूविला
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू
नई दिल्ली

अनुवादक दल

अनुवादक
डॉ. सत्यवीर सिंह
एस.एन.आई. कॉलेज
पिलाना, उत्तर प्रदेश

हिन्दी पुनरीक्षण
डॉ. अभिषेक तिवारी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
श्री लाल बहादुर शास्त्री
राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ,
नई दिल्ली

प्रूफ रीडिंग
डॉ. दयाशंकर मिश्र
प्रवक्ता
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक
बाल विद्यालय, हौजरानी,
नई दिल्ली

सचिवालयीय सहायक
मो. इमरान राइनी
जे.ए.टी., शिक्षा विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली

सामग्री उत्पादन

प्रो. सरोज पाण्डेय
निदेशक, शिक्षा विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली

श्री.एस.एस. वेंकटाचलम
सहायक कुलसचिव (प्रकाशन)
इग्नू, नई दिल्ली

जुलाई, 2016 (संशोधित)

©इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय; 2016

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस कार्य का कोई भी अंश इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के विषय में और अधिक जानकारी विश्वविद्यालय के कार्यालय, मैदान गढ़ी, नई दिल्ली-110 068 से प्राप्त की जा सकती है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से निदेशक, शिक्षा विद्यापीठ द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

लेजर टाइप सेटिंग : राजश्री कम्प्यूटर्स, वी–166ए, भगवती विहार, उत्तम नगर, (नजदीक सेक्टर 2 द्वारका), नई दिल्ली–110059

मुद्रक :

PDF Compressor Free Version

खण्ड 2 वृद्धि : शैशवावस्था से प्रौढ़ावस्था

परिचय : इस खण्ड में हमारा लक्ष्य आपको मानव के विकास के बारे में एक समझ प्रदान करना है। आप जानते है कि विकास विभिन्न आयामों में होता है और इसे विभिन्न परिदृश्यों में देखा जा सकता है। इस खण्ड में आपके पास कुछ मूलभूत प्रश्नों को पूछने का अवसर होगा जैसे एक कोशिका मात्र से हम कैसे आज एक पूर्ण उन्नत वयस्क व्यक्ति के रूप में उन्नत हुए हैं? कौन से कारक हमारे जीवन को प्रभावित करते हैं? बचपन, किशोरावस्था और वयस्क अवस्था के विभिन्न चरण आपके विकास को कैसे गढ़ते हैं? इस तरह यह खण्ड बच्चा और किशोर के विकास के बारे में अधिक जानने की आपकी उत्सुकता को उत्तेजित करेगा।

इस खण्ड में चार इकाइयाँ हैं :

इकाई 4 में, हम मानव सत्ता की वृद्धि और विकास की संकल्पना पर चर्चा करेंगें। विकास बहुत से परिवर्तनों को अपरिहार्य बनाता है जो व्यवस्थित, क्रमागत और एक पैटर्न में हैं। यह इकाई कुछ संगत प्रश्नों जैसे विकास के बारे में हमें कैसे सोचना चाहिए? विकास के सिद्धांत क्या हैं? को संबोधित कर शेष इकाइयों के लिए आधार बनाती है। मानव विकास के अध्ययन में तीन मुद्दे महत्त्वपूर्ण हैं– प्रकृति–पोषण का मुद्दा, सततता–असततता का मुद्दा, क्रियाशीलता–निष्क्रियता का मुद्दा तथा सार्वभौमिकता–संदर्भ विशिष्टता का मुद्दा। आप विविध सामाजिक–आर्थिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में विकासात्मक कार्यों और बच्चों के विकास पर विद्यालय के प्रभाव का भी अध्ययन करेंगे।

इकाई 5 आपको विविध परिदृश्यों में विकास के दृष्टिकोण देगी। विकास पर विभिन्न परिदृश्य व्यवहार के साथ–साथ व्यवहार की भविष्यवाणी की व्याख्या करता है जिसका अवलोकन किया जा सकता है। सर्वप्रथम आप जैविक परिदृश्य और इसके दो दृष्टिकोणों जैसे परिपक्वन और संयोजन दृष्टिकोणों से परिचित होंगे। फिर आप जीवन–अवधि के परिदृश्य से परिचित होंगे। उसके पश्चात् आपका ध्यान जीव–पारिस्थितिकीय परिदृश्य की ओर आकृष्ट किया जाएगा जो व्याख्या करता है कि कैसे विभिन्न सामाजिक प्रक्रियायें विभिन्न अवधियों में विकास को प्रभावित करती हैं। संवेदनात्मक परिदृश्य देखता है कि हम कैसे सोचते हैं और संसार के साथ अंतः क्रिया करते हैं। और अंततः आप सामाजिक–सांस्कृतिक परिदृश्य का अध्ययन करेंगे जो बच्चे के विकास की प्रक्रिया में संस्कृति और सामाजिक अंतःक्रिया की भूमिका पर प्रकाश डालता है।

इकाई 6 में हम आपको इस विचार से परिचित कराते हैं कि विकास के विभिन्न प्रभाव–क्षेत्र हैं। यहाँ भौतिक, संज्ञानात्मक, मनो–सामाजिक और संवेगात्मक विकास को वर्णित किया गया है इस इकाई में हम जाँचते हैं कि बच्चे और किशोर कैसे नैतिक रूप से कार्य करने और तर्क करने की क्षमता विकसित करते हैं। विभिन्न चरणों के संबंध में प्रत्येक आयाम की अपनी सार्थकता है। आप विकास के समग्र उपागम और सुसाधक के रूप में शिक्षक की भूमिका को भी समझ सकेंगे।

इकाई 7 कक्षाओं में शोध के आयोजन की जरूरत को दिखाता है। विभिन्न विकासात्मक चरणों से गुजरते वक्त बच्चे कक्षाओं में व्यवहारात्मक समस्याओं को व्यक्त करेंगे। सुसाधक के रूप में आपको समस्याओं को हल करने में बच्चों की मदद करनी होगी। यह इकाई विविध विधियों का वर्णन करती है जिसका उपयोग बच्चों और किशोरों के अध्ययन में किया जा सकता है।

PDF Compressor Free Version

PDF Compressor Free Version

इकाई 4 वृद्धि और विकास की समझ

संरचना

4.1 परिचय

4.2 उद्देश्य

4.3 मानव विकास

4.3.1 वृद्धि और विकास की संकल्पना

4.3.2 मानव विकास के सिद्धांत

4.4 वृद्धि और विकास के चरण

4.5 विकास में मुद्दे

4.5.1 प्रकृति बनाम पोषण

4.5.2 सततता बनाम असततता

4.5.3 क्रियाशीलता बनाम निष्क्रियता

4.5.4 सार्वभौमिकता बनाम विशिष्ट संदर्भ

4.6 विविध सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों में विकासात्मक कार्य

4.7 विकास पर विद्यालय का प्रभाव

4.8 सारांश

4.9 इकाई अंत्य अभ्यास

4.10 प्रगति जाँच के उत्तर

4.11 संदर्भ और उपयोगी सामग्री

4.1 परिचय

क्या आपने अपने बचपन के फोटो देखे हैं? क्या आपने उन परिवर्तनों के बारे में सोचा है जो आप में अब तक हुए हैं? आपने आकार, आकृति, संवेदनाओं और अन्य मनोवैज्ञानिक विशिष्टताओं में बदलाव अनुभूत किया होगा। किंतु बदलाव की प्रक्रिया में व्यक्तिगत विभिन्नतायें होती हैं। इस प्रकार बदलाव का पैटर्न व्यक्ति से व्यक्ति में भिन्न होता है जो व्यक्ति की विशिष्टता को निर्धारित करता है। किंतु बदलाव की मौलिक प्रक्रिया एक समान रहती है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति विकास के समान चरणों से गुजरता है। बदलाव मुख्यत: दो प्रमुख कारकों जैसे आनुवंशिकता और वातावरण से निर्धारित होते हैं। आप एक व्यक्ति के रूप में अपनी अद्भुत आनुवंशिकता और वातावरण से वृद्धि और विकास की यात्रा करते हैं। आपकी यही विशिष्टतायें आपको अद्भुत बनाती हैं। इस प्रकार व्यक्ति की अद्भुत विशिष्टताओं को समझने के लिए वृद्धि और विकास से संबद्ध विविध संकल्पनाओं को समझना महत्त्वपूर्ण है। इस इकाई में आप मानव की वृद्धि और विकास की संकल्पना, विकास के सिद्धांतों, विकास के चरणों तथा वृद्धि एवं विकास से संबद्ध मुद्दे को समझेंगे। आप विविध सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में विकासात्मक कार्यों तथा विकास पर विद्यालय के प्रभाव का भी अध्ययन करेंगे जो आपके विद्यार्थियों के व्यवहार को समझने में आपकी मदद करेगा ताकि आप विकास की प्रक्रिया को उसकी अपनी विशिष्टता के अनुसार सुसाध्य कर सकें।

PDF Compressor Free Version

4.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आप योग्य होंगे :

- वृद्धि और विकास की संकल्पना की व्याख्या करने में;
- वृद्धि और विकास की संकल्पना को विभेदीकृत करने में;
- विकास के सिद्धांतों की व्याख्या करने में;
- दैनिक जीवन के उदाहरणों के साथ विकास के विविध चरणों का वर्णन करने में;
- विकास से संबद्ध विविध मुद्दे पर चर्चा करने में;
- भिन्न सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में विकासात्मक कार्यों को पहचानने में; और
- विकास पर विद्यालय के प्रभाव की व्याख्या करने में।

4.3 मानव विकास

मानव जीवन भर परिवर्तन की प्रक्रिया से गुज़रता है। आपने स्वयं में जिन बदलावों का अनुभव किया है उसे अपनी बीती स्मृतियों में जाकर महसूस कर सकते हैं। पर्यावरणात्मक मांगों की प्रतिक्रिया के रूप में ये बदलाव प्रकृति में प्रगतिशील हैं। ये बदलाव न केवल व्यक्ति दर व्यक्ति बल्कि चरण दर चरण भी भिन्न होते हैं। एक बच्चा शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों में तीव्र परिवर्तनों को प्रदर्शित कर सकता है किंतु बाद में कार्य की गति बदल जाती है। ये परिवर्तन कभी-कभी आनुवंशिक वंशानुक्रम से और कभी-कभी पर्यावरणात्मक कारकों से निर्धारित होते हैं। यदि आप शिशु और किशोर में बदलावों के दर की तुलना करें तो आप पाएंगें कि न केवल बदलाव की दर में भिन्नता है बल्कि बदलाव के पहलू भी चरण दर चरण भिन्न होते हैं।

4.3.1 वृद्धि और विकास की संकल्पना

आप जानते हैं कि व्यक्ति मौत की संकल्पना से परिवर्तन को अनुभूत करती है। मानवीय परिवर्तनों से संबद्ध दो संकल्पनायें हैं : **वृद्धि और विकास**। सामान्यतः ये शब्द एक दूसरे के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं किन्तु व्यक्तियों में आये परिवर्तनों की प्रकृति के संदर्भ में ये एक दूसरे से भिन्न हैं।

वृद्धि मूलतः शरीर के अनुपात में मात्रात्मक परिवर्तनों को प्रदर्शित करती है जैसे ऊँचाई, वजन, आंतरिक अंगों आदि में परिवर्तन। दूसरे शब्दों में वृद्धि का तात्पर्य न केवल ऊँचाई और वजन के संदर्भ में शरीर के संपूर्ण आयामों में बढ़ोत्तरी है बल्कि शरीर के अंगों जैसे सिर, भुजायें, धड़, ह्रदय और मांसपेशियों में बढ़ोत्तरी से भी है। यह वृद्धि के प्रारंभिक चरण से अंतिम चरण तक बदलता है। इस प्रकार वृद्धि शारीरिक परिवर्तनों तक सीमित है जो कि परिमाण योग्य है। आपको अवश्य जानना चाहिए कि जन्म के समय एक नवजात शिशु के विवरणों जैसे शरीर का वजन, ऊँचाई और लिंग चिकित्सा दस्तावेज में दर्ज होते हैं। वृद्धि की संकल्पना से संबद्ध विविध पहलुओं को समझने के लिए आप किसी भी नवजात शिशु की किसी चिकित्सा फाइल का अध्ययन कर सकते हैं।

दूसरी तरफ विकास व्यक्ति में गुणात्मक परिवर्तनों को प्रदर्शित करता है। यह व्यवस्थित, संगत परिवर्तनों की एक क्रमिक शृंखला के रूप में परिभाषित हो सकता है। **क्रमिक** शब्द

PDF Compressor Free Version

प्रदर्शित करता है कि परिवर्तन आगे आते हैं। **व्यवस्थित एवं संगत** से प्रतीत होता है कि आये हुए बदलावों और जो आगे आयेंगे या उनका अनुकरण करेंगे उनके बीच एक निश्चित संबंध है। ये बदलाव व्यक्ति में कार्यात्मक परिपक्वता लाते हैं। अतः विकास व्यक्ति में गुणात्मक परिवर्तन हैं जो व्यक्ति के कार्य करने में सुधार के रूप में प्रदर्शित होता है। उदाहरणार्थ, यदि हम एक बच्चे की ऊँचाई और वजन मापते हैं तो हम वृद्धि की संकल्पना का उपयोग कर रहे होते हैं किंतु जब हम कार्य करने में सुधार के संदर्भ में बात करते हैं जैसे कलम से लिखना, या वस्तुओं को ऊँचे स्थान पर रखना तो ये परिवर्तन बच्चे में विकासात्मक प्रक्रिया को प्रदर्शित करते हैं। इस प्रकार हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि वृद्धि एक निश्चित आयु के बाद रूक जाती है जबकि विकास आगे जारी रहता है।

अपनी प्रगति जाँचें - 1

नोट: (अ) नीचे दिये गए स्थान में अपने उत्तर लिखें।

(ब) अपने उत्तर की तुलना इकाई के अंत में दिये गए उत्तरों से करें।

i) दिये गए कथन में वृद्धि के लिए G और विकास के लिए D लिखें।

(अ) एक तीन महीने का बच्चा पढ़ना प्रारंभ कर देता है।

(ब) एक वर्ष का बच्चा 'माँ' शब्द का उच्चारण करना प्रारंभ कर देता है।

(स) एक बच्ची की लंबाई उसके जन्म के 6 महीने बाद आठ इंच बढ़ जाती है।

(द) एक 10 वर्ष का लड़का अतिथियों को पानी देने में सक्षम हो जाता है।

ii) वृद्धि और विकास की संकल्पना में कोई पाँच अंतर लिखें।

....

....

....

....

....

iii) विभिन्न आयु वर्ग के दो बच्चों का अवलोकन करें और उनमें वृद्धि और विकास के किन्हीं पाँच बिन्दुओं की पहचान करें।

....

....

....

....

....

4.3.2 मानव विकास के सिद्धांत

ऊपर के अनुच्छेदों से आप समझ चुके होंगे कि विकास गुणात्मक परिवर्तनों की एक क्रमिक शृंखला है जो परिपक्वता और अनुभव के कारण आता है। इस प्रकार मानव का विकास निश्चित सिद्धांतों पर आधारित है। आइए हम नीचे दिये गए मानव विकास के सिद्धांतों को समझने का प्रयास करें।

PDF Compressor Free Version

- **सततता का सिद्धांत**

विकास सततता के सिद्धांत का अनुकरण करता है जो संकल्पना से प्रारंभ होता है और मृत्यु पर समाप्त होता है। यह कभी भी समाप्त न होने वाली प्रक्रिया है। एक बच्चा विकासात्मक प्रक्रिया के माध्यम से सतत परिवर्तनों से गुजरता है फिर भी परिवर्तन की गति और मात्रा चरण दर चरण बदलती रहती हैं। यद्यपि ऐसा प्रतीत होता है कि बच्चा परिपक्वता स्तर को प्राप्त कर चुका है तथापि वह परिवर्तन का अनुभव करता रहता है। उदाहरणार्थ, एक 4 वर्ष का बच्चा कुछ शब्दों को सीख चुका होता है किंतु बाद में इनसे वह वाक्य बनाना सीख लेता है। अतः विकास कभी समाप्त नहीं होता अपितु यह मृत्यु तक जारी रहता है।

- **व्यक्तिगत भिन्नताओं का सिद्धांत**

> **केस 1 :** ऋषभ एवं चित्रांशु सहोदर हैं। वे समान पारिवारिक वातावरण में पले हैं। ऋषभ फुटबाल खेलना पसंद करता है किंतु चित्रांशु हमेशा ऐसे खेलों को खेलने से इंकार करता है जिसमें कठिन शारीरिक प्रयासों की माँग है। जब शिशुरोग विशेषज्ञ ने जाँचा तो उसकी माँ को पता चला कि चित्रांशु हृदय के बड़े होने की समस्या से ग्रसित है।

उपर्युक्त स्थिति से आपने क्या अनुमान लगाया? आप कह सकते हैं कि यद्यपि दोनों बच्चे समान परिवार में पैदा हुए थे किंतु उनके शारीरिक विकास में भिन्नता है। जैसा कि हमने पहले ही चर्चा किया है, प्रत्येक व्यक्ति स्वयं में विशेष है किंतु आनुवंशिकता एवं पर्यावरणात्मक कारण उन्हें अन्यों से भिन्न बनाता है। अतः विकास इस सिद्धांत पर भी आधारित है कि यद्यपि विकास के कुछ पहलू सबके लिए सामान्य होंगे किंतु चूँकि वे भिन्न आनुवंशिक विशेषताओं और वातावरण को धारण करते हैं अतः वे एक दूसरे से भिन्न होते हैं। उदाहरणार्थ यदि एक बच्चे में जन्मजात संगीत की क्षमता है, वह संगीत में प्रशिक्षित बच्चे की तुलना में संगीत के कौशल का समान मात्रा में प्रदर्शन नहीं कर सकता।

- **क्रमबद्धता का सिद्धांत**

क्रमबद्धता का सिद्धांत कहता है कि यद्यपि प्रत्येक व्यक्ति बदलाव में भिन्नता प्रदर्शित करता है किंतु वे बदलाव के समान क्रम का अनुकरण करते हैं। विकास के प्रसव पूर्व चरण में एक आनुवंशिक क्रम का अनुकरण किया जाता है जो विशिष्ट लक्षणों के साथ निश्चित अंतराल पर उपस्थित होता है। क्रम और विकास की दिशा को बनाये रखने में **सेफ्लोकौडल (Cephalocaudal)** और **प्रोक्सीमोडिस्टल (Proximodistal) प्रवृत्तियाँ** पाई जाती हैं। **सेफ्लोकौडल (Cephalocaudal) प्रवृत्ति** प्रदर्शित करती है कि विकास लम्बवत दिशा में आगे बढ़ता है जैसे सिर से पैर की तरफ। यही कारण है कि बच्चा सर्वप्रथम चलना शुरू करने से पूर्व सिर पर नियंत्रण करता है। **प्रोक्सीमोडिस्टल (Proximodistal) प्रवृत्ति** नजदीक से दूर की ओर प्रवृत्त होती है और पहले शरीर के अंगों के नजदीक केन्द्र विकसित होता है फिर छोर पर। अतः विकास के प्रारंभिक चरण में बच्चा मौलिक मांसपेशियों पर अभ्यास (व्यायाम) करता है फिर छोटी मांसपेशियों पर या उत्तम गति कौशलों पर। इस प्रकार बच्चा विकास की प्रक्रिया में क्रम का अनुकरण करता है क्योंकि वह अक्षर लिखने से पूर्व कुछ अव्यवस्थित रेखायें खींचता है।

चित्र 4.1 : क्रमबद्धता का सिद्धांत

PDF Compressor Free Version

• सामान्य से विशिष्टता का सिद्धांत

जैसा कि हम पहले ही चर्चा कर चुके हैं कि विकास की प्रक्रिया एक क्रम का अनुकरण करती है। यह सिर से पैर तथा केन्द्रीय अक्ष से शरीर के दूरस्थ अंगों तक प्रवृत्त होता है। उसी प्रकार क्रमबद्धता का सिद्धान्त यह भी सुझाव देता है कि विकास की प्रकृति सामान्य से विशिष्टता के सिद्धांत का अनुकरण करती है। विकास की प्रक्रिया बच्चों द्वारा दिखायी गयी सामान्य प्रतिक्रियाओं से प्रारंभ होती है क्योंकि वह बाद के चरणों से गुजरता है, और विशिष्ट व्यवहारों को प्रदर्शित करना प्रारंभ कर देता है। उदाहरणार्थ, एक बच्चा एक ध्वनि का उच्चारण करता है जो प्रत्येक वस्तु और व्यक्ति के लिए सर्वनिष्ठ है जैसे इन्ना किंतु बाद में वह विशिष्ट वस्तुओं या व्यक्तियों को इंगित कर विशिष्ट शब्दों का उच्चारण करता है जैसे माँ, पा और अन्य।

क्रियाकलाप-1

अपने पड़ोस में 3 वर्ष से कम उम्र के बच्चों का अवलोकन करें और सामान्य से विशिष्टता के सिद्धांत के लिए अधिक उदाहरण दें।

....

....

....

• परस्पर संबंध का सिद्धांत

केस 2 : पिंकी 16 वर्ष की है जो शारीरिक परिपक्वता अर्जित कर रही है पहले वह पड़ोस में सभी शिशुओं के साथ खेलती थी, किंतु अब उसका सामाजिक दायरा घटकर केवल लड़कियों तक रह गया है यद्यपि कि विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण को देखा जा सकता है। इससे पता चलता है कि पिंकी के शारीरिक पहलू में परिवर्तन ने उसके सामाजिक एवं संवेदनात्मक व्यवहार को प्रभावित किया है।

जैसा हम सभी जानते हैं कि विकास मानव जीवन के सिर्फ शारीरिक पहलू में नहीं आता है बल्कि यह संज्ञानात्मक, सौंदर्यात्मक, सामाजिक और नैतिक पहलुओं को भी शामिल करता है। इस प्रकार एक व्यक्ति का विकास जीवन के सभी पहलुओं के साथ संतुलित परस्पर संबंधों के माध्यम से प्रदर्शित होता है। किसी एक पहलू में विकास दूसरे अन्य पहलुओं को भी प्रभावित करता है। उदाहरणार्थ, यदि एक किशोरी लड़की शारीरिक पहलू में एक महत्वपूर्ण बदलाव के दौर से गुजरती है तो उसका सामाजिक, संवेदनात्मक एवं नैतिक पहलू भी बदलेगा।

क्रियाकलाप-2

अपने विद्यालय में 11-16 वर्ष के बच्चों का अवलोकन करें। जब वे शारीरिक लैंगिक आविर्भाव को प्रकट करना शुरू करते हैं तब लड़कों और लड़कियों में हुए व्यवहारात्मक बदलाव को संज्ञान में लें। क्या जो प्रारंभ में परिपक्व हो गये उनको हुई किसी परेशानी से आप अवगत हुए?

....

....

....

PDF Compressor Free Version

- ## अंतःक्रिया का सिद्धांत

अंतःक्रिया का सिद्धांत सुझाता है कि एक व्यक्ति आनुवंशिकता और पर्यावरण का उत्पाद है दूसरे शब्दों में अंतःक्रिया बच्चे के आंतरिक और बाह्य शक्तियों के कारण उत्पन्न होती है। जैसा कि हमने पहले अध्ययन किया कि समाज के समक्ष खड़ा व्यक्ति आनुवंशिकता का अकेला उत्पाद नहीं है बल्कि वह क्या है और वह वातावरण से क्या प्राप्त करता है इन दोनों के समुच्चय के कारण है। उदाहरणार्थ, यदि एक बच्चा मानसिक क्षमता में कमजोर है, यह उसके आनुवंशिक विन्यास के कारण है। किंतु यदि वह कुछ घरेलू कार्यों को करने में सक्षम है तो यह वातावरण के कारण संभव है। समाज में भी कुछ लोग काफी सफल हैं और कुछ लोग नहीं। इसके पीछे कारण व्यक्ति के वातावरण में भिन्नता हो सकती है। इस प्रकार, यह कहा जा सकता है कि विकास वातावरण और आनुवंशिकता के बीच अंतःक्रिया का उत्पाद है।

- ## दर में भिन्नता का सिद्धांत

दर में भिन्नता दर्शाती है कि व्यक्ति में विकास के दर में भिन्नता होती है। हम देख सकते हैं कि लड़कियों एवं लड़कों में विकास के दर में भिन्नता है – जैसे विकास के प्रारंभिक चरण में लड़कियाँ लड़कों की अपेक्षा तीव्रता से वृद्धि करती हैं। दूसरा पहलू यह है कि विकास के दर की प्रक्रिया चरण और आयाम के अनुसार भी भिन्न होती है। उदाहरणार्थ - पैर, नाक और हाथ किशोरावस्था के प्रारंभिक चरण में विकसित होते हैं किंतु कंधा धीरे-धीरे वृद्धि करता है। उसी प्रकार मानसिक विकास की प्रकृति भी एक समान नहीं होती है। उदाहरणार्थ - एक बच्चा संकल्पनाओं या तथ्यों को विकास के प्रारंभिक चरण में याद करना प्रारंभ कर देता है किंतु बाद में वह तार्किक ढंग से सोचना प्रारंभ करता है।

- ## एकीकरण का सिद्धांत

एकीकरण का सिद्धांत विकास के विविध पहलुओं जैसे शारीरिक, मानसिक, संवेदनात्मक, सामाजिक और नैतिक के एकीकरण को दिखाता है। व्यक्ति जिसका हम अवलोकन कर रहे हैं अकेला किसी एक पहलू का प्रतिबिम्ब नहीं है बल्कि वह विकास के सभी आयामों का एकीकरण है। यद्यपि हम पहले ही अध्ययन कर चुके हैं कि किसी आयाम में परिवर्तन किसी अन्य आयाम को भी प्रभावित करता है किंतु एक बच्चे का व्यक्तित्व सभी पहलुओं का संतुलित एकीकरण है। उदाहरणार्थ - एक बच्चा जो किसी परीक्षा में बेहतरीन प्रदर्शन कर रहा है वह न केवल उसके मानसिक विकास का प्रतिबिम्ब है बल्कि उसका प्रदर्शन उसके विकास के सभी पहलुओं का संतुलित प्रतिबिम्ब है।

- ## अनुमान योग्यता का सिद्धांत

विकास अनुमान योग्य है जो पैटर्न की समरूपता और विकास की क्रमबद्धता की सहायता से होता है। हम एक बच्चे की वृद्धि और विकास के एक निश्चित चरण में एक या अधिक वस्तुओं में काफी हद तक उसके व्यवहार की भविष्यवाणी कर सकते हैं। जैसे- एक किशोर की भविष्यवाणी उसके विकास के चरण में जो लक्षण वह प्रदर्शित करता है उसके आधार पर की जा सकती है। उदाहरणार्थ - एक किशोर बच्चे का पहनावा उसके दोस्तों की पसंद से अधिक निर्देशित होता है। इस प्रकार, हम अनुमान लगा सकते हैं कि कपड़े खरीदने में अभिभावकों के हस्तक्षेप के मामले में प्रतिक्रियात्मक व्यवहार कर सकता है या फिर वह इसे खरीदने में रूचि नहीं दिखाता है। अतः एक वृहद स्तर तक विकास की प्रकृति अनुमान योग्य है।

PDF Compressor Free Version

चिंतन करें

मान लो आपने कक्षा XI के छात्रों को पढ़ाने का एक अवसर प्राप्त किया, जिन्हें आपने पहले कक्षा VIII में पढ़ाया था। अनुमान योग्यता के सिद्धांत के आधार पर आप शिक्षण की विधियों एवं रणनीतियों के बारे में कैसे निर्णय करेंगे?

अपनी प्रगति जाँचें - 2

नोट: (अ) नीचे दिये गए स्थान में अपने उत्तर लिखें।

(ब) अपने उत्तर की तुलना इकाई के अंत में दिये गए उत्तरों से करें।

i) दिये गए कथन को प्रतिबिम्बित करने वाले सिद्धांत को चिन्हित करें।

(अ) सीता एक कान्वेन्ट विद्यालय और गीता एक सरकारी विद्यालय में पढ़ रही है। वे एक दूसरे से विज्ञान प्रदर्शनी में मिले और सीता को अपने प्रोजेक्ट की व्याख्या करने के लिए लैपटॉप का उपयोग करते देखकर गीता बहुत आश्चर्य चकित थी।

(ब) ममता ने अपनी भतीजी को सात वर्षों के बाद देखा और वह देखकर आश्चर्यचकित थी कि उसकी लंबाई काफी बढ़ी हुई है।

(स) मेरे मित्र की पुत्री अब एक परिपक्व लड़की हो गई है, उसने केवल लड़कियों के साथ खेलने को प्राथमिकता देना प्रारंभ कर दिया है।

(द) पानी को 'मम' के रूप में उच्चारण करना और बाद में 'पानी' बोलना।

ii) एक उदाहरण की सहायता से एकीकरण और अंतर्संबंध के सिद्धांत में भिन्नता दिखायें।

....

....

....

4.4 वृद्धि और विकास के चरण

विकास की प्रक्रिया, जिसके बारे में हम पहले ही पढ़ चुके हैं, कि यह निश्चित चरणों से गुजरता है। ये चरण एक दूसरे से भिन्न हैं। विकास का प्रत्येक चरण अद्वितीय है और उसके कुछ विशिष्ट लक्षण होते हैं।

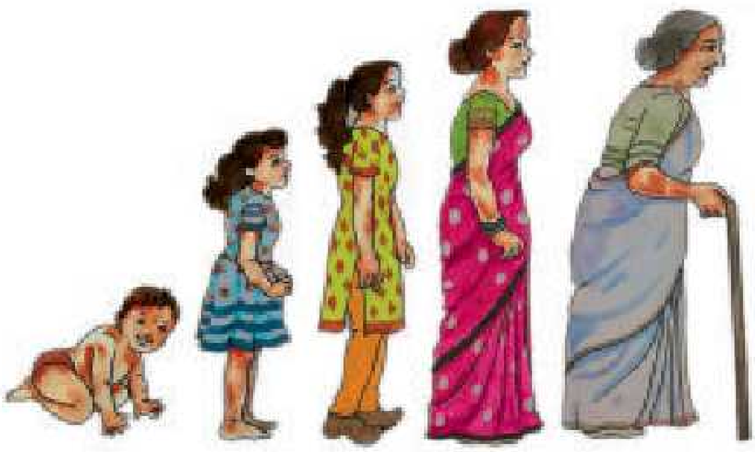

चित्र 4.2 : विकास के चरण

PDF Compressor Free Version

मनोवैज्ञानिक वर्गीकरण के अनुसार, उम्र की सीमा का विकास के चरण का विशेष रूप से उल्लेख करने के लिए उपयोग किया गया है। विकास के चरण को निम्नलिखित ढंग से वर्गीकृत किया गया है :

चरण का नाम	अवधि और अनुमानित आयु
प्रसव पूर्व	जन्म का संकल्पन
शैशवावस्था और बचपन	जन्म से 2 वर्ष की आयु
पूर्व बाल्यावस्था	2 से 6 वर्ष की आयु
उत्तर बाल्यावस्था	6 से 12 वर्ष की आयु
किशोरावस्था	13 से 18 वर्ष की आयु
प्रौढ़ावस्था	18 वर्ष और अधिक

अब हम प्रसव पूर्व विकास के अतिरिक्त विकास के प्रत्येक चरण के विशिष्ट लक्षणों को समझने का प्रयत्न करें।

शैशवावस्था

शैशवावस्था में बच्चे के विकास के विद्यालय पूर्व का चरण आता है। शैशवावस्था की अवधि तीव्र वृद्धि और विकास का चरण है। आंतरिक के साथ-साथ बाह्य अंग तीव्रता से विकसित होते हैं जिसे लंबाई और वजन की वृद्धि में देखा जा सकता है। पहले दो सप्ताह के शिशु नवजात शिशु कहलाते हैं। उनकी त्वचा झुर्रीदार और मुलायम होती है और वे लगभग 18 से 20 घंटे तक सोते हैं। वे केवल तभी चिल्लाते हैं जब भूखे होते हैं। जैसे ही उनकी भूख संतुष्ट होती है वे पुनः सो जाते हैं। इस चरण में वे अधिकांशतः परिवार के सदस्यों विशेष रूप से माँ पर निर्भर होते हैं। बच्चा माँ को पहचानना प्रारंभ कर देता है। कुछ महीनों बाद बच्चा बड़बड़ाने में सक्षम हो जाता है और कुछ मांसपेशीय गतियाँ प्रदर्शित करता है। बच्चा अपने शरीर पर एकाग्र करना प्रारंभ कर देता है। जब वह रेंगना प्रारंभ करता है, उसकी उत्सुकता बढ़ जाती है। शिशु पहले सिर पर नियंत्रण प्राप्त करना प्रारंभ करता है उसके बाद शरीर के निचले भाग की मांसपेशियों पर।

6 महीनों के पश्चात् वह पारिवारिक सदस्यों से संवेदनात्मक संतुष्टि अनुभूत करना प्रारंभ कर देता है। इस चरण के मुख्य लक्षणों में से एक है हठधर्मिता। यद्यपि बच्चा दूसरों पर निर्भर है तथापि वह चाहता है कि उसकी इच्छायें पूरी हों। यह आधारहीन कल्पना की अवधि है। वह अपनी वास्तविक क्षमताओं के बजाय कल्पना और आकांक्षायें करता है। विकास के इस चरण में बच्चा आत्मकेन्द्रित होता है। वह वातावरण से प्रत्येक चीज की माँग करता है। वह सामाजिक नियमों के बारे में जागरूक नहीं होता है। बच्चा केवल जरूरतों की तुष्टीकरण पर ध्यान केन्द्रित करता है। यह चरण संवेदनात्मक चरण के रूप में वर्णित होता है जो चिन्हित होता है प्रतिवर्ती क्रिया से लक्ष्य निर्देशित व्यवहार की ओर।

क्रियाकलाप - 3

किशोर के माता-पिता का साक्षात्कार लें। विकासात्मक पैटर्न की रूपरेखा तैयार करें।

• पूर्व बाल्यावस्था

इस चरण को विद्यालय पूर्व के चरण के रूप में जाना जाता है। बच्चा अपने व्यवहार को परिष्कृत करता है और लोगों के साथ संबद्ध होने के क्षेत्र को विस्तृत करता है। यद्यपि शारीरिक वृद्धि की दर सामान्य रूप से जारी रहती है, बच्चे की संज्ञानात्मक एवं भाषाई योग्यताओं में अंतर दिखाई पड़ता है। विकास के इस चरण में संज्ञानात्मक योग्यताओं का

PDF Compressor Free Version

विस्तार होता है। इस चरण में बच्चा लाक्षणिक कार्यों को प्रदर्शित करता है जिसका अर्थ है प्रतीकों के साथ कार्य करने की योग्यता। यद्यपि बच्चा प्रतीकों के बारे में सोचने में सक्षम है फिर भी उसमें प्रतिवर्तिता का अभाव होता है। यहाँ प्रतिवर्तिता का अर्थ है बच्चे ने जिस तरह से कोई चीज सीखी है उसे समझने में सक्षम नहीं है यदि उसे थोड़ा उलट दिया जाये तो। उदाहरण - यदि आपने पानी के दो एक समान गिलास दिखाया तो वह जवाब देगा कि दोनों में समान मात्रा में पानी है किंतु यदि इसे आप एक संकरे गिलास में उड़ेल दें तो गिलास पहले की अपेक्षा अधिक भरा हुआ दिखाई देगा। अतः बच्चा पानी की सही मात्रा का अनुमान लगाने में सक्षम नहीं है।

दूसरा पहलू है भाषा के विकास का। इस चरण में बच्चा कुछ हद तक व्याकरण के नियमों का उपयोग कर अपने वाक्य विकसित करना प्रारंभ कर देता है। इसके अतिरिक्त शैशवावस्था की तुलना में बच्चे की संवेदनायें अधिक सामान्य, तीव्र और विशिष्ट होती हैं जबकि सामाजिक रूप से बच्चा सीखने, वृद्धि करने और साथ खेलने में खुशी प्रदर्शित करता है।

चित्र 4.3 : पूर्व बाल्यावस्था का चरण

- **उत्तर बाल्यावस्था**

विकास के प्रारंभिक चरण की तुलना में 7 से 12 वर्ष की अवधि में विकास धीमा होता है। परवर्ती बचपन बौद्धिक, नैतिक और सामाजिक विकास से अभिलक्षित होता है। विद्यार्थी अपनी उपलब्धियों एवं समूह बनाने के बारे में अधिक जागरूक होते हैं। वे नियमों को समझना और नियमों को स्वीकार करना प्रारम्भ कर देते हैं। वे एक या दो घनिष्ठ मित्र रखते हैं और समान लिंग वाले बच्चों के साथ खेलने को प्राथमिकता देते हैं। उनमें गत्यात्मक समन्वय सुधरता है और वे पेड़ पर चढ़ने जैसे खेल खेलने में आगे बढ़ते हैं। जैसे-जैसे उनकी बौद्धिक योग्यतायें बढ़ती हैं वे अपने आस-पास के लोगों के बारे में धारणा बनाने में सक्षम हो जाते हैं।

- **किशोरावस्था**

किशोरावस्था संक्रमण का चरण है। बच्चा बचपन से विकास के अत्यधिक परिपक्व चरण की ओर बढ़ता है। यह चरण शारीरिक, संज्ञानात्मक एवं सामाजिक पहलुओं में महत्त्वपूर्ण बदलाव से अभिलक्षित होता है।

शारीरिक बदलाव इस चरण में बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। लड़के एवं लड़कियों दोनों की लंबाई एवं वजन में बदलाव होता है। लंबाई में तेज वृद्धि होती है। व्यक्ति से व्यक्ति में आयु सीमा में

PDF Compressor Free Version

अंतर आता है। किंतु लंबाई में वृद्धि यौवन में वृद्धि के साथ संबद्ध होती है। लैंगिक अंतर अवलोकित होते हैं। 13 वर्ष की आयु में लड़कियाँ लड़कों को मात दे देती हैं किंतु 15 वर्ष की आयु में लड़के लड़कियों को मात दे देते हैं। बहुसंख्यक मामलों में लड़कियाँ 17 वर्ष की आयु तक और लड़के 18 वर्ष की आयु तक अपनी अधिकतम लंबाई प्राप्त कर लेते हैं।

लंबाई एवं वजन में बदलाव के साथ-साथ एक महत्त्वपूर्ण शारीरिक बदलाव लैंगिक अंगों में परिपक्वता के रूप में देखा जाता है। लैंगिक परिपक्वता के रूप में इस बदलाव का प्रभाव बच्चे के सामाजिक, संवेदनात्मक पहलू पर होता है। वे अपनी शारीरिक बनावट के बारे में अधिक सचेत हो जाते हैं। इस चरण में हम देख सकते हैं कि बच्चे विपरीत लिंग के प्रति अधिक आकर्षित होते हैं। यह भी देख सकते हैं कि सम्मोहन की समस्या भी उठती है। अब उनके पास उनका अपना संसार है जो मूलतः उनके मित्रगणों से प्रभावित होता है।

यदि हम संवेदनात्मक पहलू पर आते हैं तो यह चरण अत्यधिक संवेदनात्मकता से अभिलक्षित होता है। किशोरावस्था के संवेदनात्मक चढ़ाव के पीछे कई कारण हैं। हार्मोन में बदलाव के कारण किशोर संवेगात्मक अशांति जैसे- स्व चेतनता, हीन भावना एवं अभिभावकों के साथ तनावग्रस्त रिश्ते का सामना करते हैं जो सामाजिक संबंधों में एक विचलन को जन्म देता है।

अतः इस चरण का एक और अन्य महत्त्वपूर्ण पहलू है सामाजिक बदलाव। इस चरण में बच्चे अपने सहपाठियों से अधिक प्रभावित होते हैं जो उनके लिए एक मानक का कार्य करता है। उनकी पसंद मूलतः उस समूह से निर्देशित होती है जिससे वे जुड़े होते हैं। किंतु इस चरण में मित्र कम संख्या में होते हैं। बच्चे अपने दोस्तों का चयन कुछ कसौटी के आधार पर करते है। वे फंतासी के संसार में जीते हैं। नायक उनके रोल मॉडल होते हैं। पहनावा और फैशन की उनकी पसंद सामान्यतः सहपाठी समूहों या नायकों से निर्देशित होती है। इसके अतिरिक्त दिन में सपने देखना इस अवधि का एक लक्षण है। इसके साथ बच्चे अपनी जीवन वृत्ति के बारे में सचेत हो जाते हैं और उस दिशा में सोचना प्रारंभ कर देते हैं।

यह चरण सार्थक संज्ञानात्मक विकासों से चिन्हित होता है। इस चरण का एक महत्त्वपूर्ण लक्षण है कि बच्चों में तथ्यों का सामान्यीकरण करने की योग्यता विकसित हो जाती है। ये तार्किक चिंतन करना प्रारंभ कर देते हैं और इसके लिए वे अमूर्त चिंतन करने में सक्षम होते है। इस प्रकार यह अवधि मानव के विकास की सबसे महत्त्वपूर्ण अवधि है क्योंकि यह एक संक्रमणात्मक अवधि है जिसमें बच्चा सार्थक शारीरिक, संज्ञानात्मक, संवेदनात्मक एवं सामाजिक बदलावों से गुजरता है जो बच्चे के भविष्य के जीवन के लिए आधार है। यही कारण है कि यह चरण **'तनाव और तूफान'** के चरण के रूप में भी जाना जाता है। अब हम इसे एक केस अध्ययन की मदद से समझते हैं।

केस - 3

अपूर्व की माँ उसके जन्मदिन के अवसर पर कुछ विशेष पका रही है। सभी तैयारियों के लिए उन्होंने कार्यालय से आधा दिन की छुट्टी ले ली। अपूर्व खुशीपूर्वक घर लौटा और अपनी माँ को रसोई में व्यस्त पाया। उसने अपनी माँ से पूछा कि वह क्या कर रही हैं। माँ उससे कहती है कि वह उसके जन्मदिन पर शाम की पार्टी के लिए विशेष भोजन तैयार कर रही है। अपूर्व ने उत्तेजना पूर्ण प्रतिक्रिया व्यक्त की और अपनी माँ को सूचित किया कि वह अपने मित्रों के साथ बाहर जा रहा है। वह पार्टी के लिए रूपये माँगता है। इन्कार करने पर वह उत्तेजित हो गया और जोर से चिल्लाने लगा कि वह अब बड़ा हो गया है और उसके कोई भी मित्र जन्मदिन घर पर नहीं मनाते हैं। वह अपने मित्रों के सामने अपमानित होना नहीं चाहता है।

PDF Compressor Free Version

चिंतन

राज कक्षा XII में पढ़ रहा है। वह एक अमीर परिवार से है और उसके माता-पिता दोनों बहुराष्ट्रीय कम्पनियों में उच्च पद पर कार्यरत हैं। वे घर देर से आते हैं और सप्ताहांत में भी देर रात तक पार्टी में व्यस्त रहते हैं। अतः राज अपना समय अपने मित्रों के साथ बिताता है। एक दिन कमरे की सफाई करते समय उसकी माँ ने कुछ अवांछनीय वस्तु पाया। वह अशांत हो गई और तत्काल उसके पिता से संपर्क किया। आगे जाँच पड़ताल से वे जान पाये कि उनका बच्चा ड्रग्स लेना शुरू कर चुका है।

एक शिक्षक के रूप में आप राज के अभिभावकों को क्या समझाने जा रहे हैं?

....

....

....

....

....

- **प्रौढ़ावस्था** : यह अवस्था पूर्णतः एक परिपक्व चरण है। इस चरण के प्रारंभिक समय में व्यक्ति अपनी जीवन वृत्ति और भविष्य के जीवन के प्रति अत्यधिक चिंतित रहता है। अब सामाजिक अपेक्षायें भी बदल जाती हैं। यह चरण मूलतः व्यावसायिक जीवन और शादी की योजना की माँग करता है। यह जीवन का सर्वाधिक उत्तरदायी चरण है।

प्रौढ़ावस्था के उत्तरार्द्ध में व्यक्ति की भूमिका भी बदल जाती है। अब उसके पास संपूर्ण परिवार का उत्तरदायित्व आ जाता है। इसके अतिरिक्त वह अपने जीवन में प्राप्त अनुभवों के आधार पर एक परिपक्व व्यक्ति के रूप में दूसरों को जीवन वृत्ति आदि के बारे में दिशा निर्देश देने में सक्षम हो जाता है।

प्रौढ़ावस्था का अंतिम भाग वृद्धावस्था से संबद्ध है। इस चरण में व्यक्ति सेवानिवृत्त हो जाता है या होने के करीब होता है। उनकी संबद्धता बदल जाती है और व्यक्ति अपनी स्वास्थ्य समस्या के प्रति अधिक सचेत हो जाता है। कुछ लोगों में अध्यात्म के प्रति झुकाव विकसित हो सकता है और अंततः वे जीवन के अंत के लिए तैयार होना प्रारंभ कर देते हैं।

अपनी प्रगति जाँचें - 3

नोटः (अ) नीचे दिये गए स्थान में अपने उत्तर लिखें।

(ब) अपने उत्तर की तुलना इकाई के अंत में दिये गए उत्तरों से करें।

i) विकास के चरणों की सूची बनायें।

....

....

....

....

PDF Compressor Free Version

ii) बचपन के चरण पर एक छोटी टिप्पणी लिखें।

....

....

....

....

....

4.5 विकास में मुद्दे

हमने पहले ही अध्ययन कर लिया है कि प्रत्येक व्यक्ति विकास के निश्चित चरणों से होकर गुजरता है। विकास के कुछ निश्चित सिद्धांत हैं जो कम या अधिक सभी व्यक्तियों के लिए समान होते हैं। फिर भी मनोविज्ञानी और शिक्षाविद् विकास के सिद्धांत और प्रकृति के बारे में अपनी भिन्न राय रखते हैं। जैसा हमने पहले ही स्थापित किया है कि आनुवंशिकता और वातावरण दोनों व्यक्ति की वृद्धि और विकास को प्रभावित करते हैं। इस परिदृश्य से संबद्ध कुछ अन्य मुद्दे हैं। हम उन्हें एक-एक कर भिन्न शीर्षकों के अंतर्गत समझने का प्रयास करते हैं।

4.5.1 प्रकृति बनाम पोषण

क्या विकास प्रकृति या पोषण का उत्पाद है? मनोवैज्ञानिक एवं शिक्षाविदों में इस मुद्दे पर बहस किया था। जब हम बाल विकास में प्रकृति के बारे में बात करते हैं तो हम बात कर रहे हैं कि आनुवंशिकता से बच्चे में क्या आता है। जब हम पोषण के बारे में बात करते हैं तो हम वातावरण के प्रभाव को देख रहे हैं। जो लोग प्रकृति के पक्ष में हैं वे सुझाव देते हैं कि विकास के लिए केवल प्रकृति ही उत्तरदायी है। दूसरी तरफ, वे जो पोषण के पक्ष में हैं, सुझाव देते हैं कि एक व्यक्ति का विकास वातावरण पर निर्भर करता है कि कैसे वह व्यक्ति का पोषण करता है। इस प्रकार प्रकृति बनाम पोषण का मुद्दा उभरता है।

किंतु यदि हम व्यक्ति के विकास का विश्लेषण करते हैं तो यह न तो अकेले प्रकृति का उत्पाद प्रतीत होता है न ही अकेले पोषण का घटक, बल्कि यह प्रकृति और पोषण दोनों का उत्पाद है।

इसे हम एक उदाहरण की सहायता से समझने का प्रयास करते हैं।

केस - 4

राजू और निखिल जुड़वा थे। जब वे 2 वर्ष के थे उनकी माँ की मृत्यु हो गई। राजू को उसकी दादी के पास तमिलनाडु के नजदीक एक गाँव में भेज दिया गया था। कुछ वर्षों के पश्चात् राजू अपने पिता से मिलने गया। राजू के पिता उसे देखकर बहुत आश्चर्यचकित थे। वह अपने शारीरिक विकास में ही नहीं अपितु भाषा, सामाजिक व्यवहार तथा दोनों के संज्ञानात्मक भाग में पूर्ण भिन्न देखा गया। दोनों भाइयों में असमानता का कारण था भिन्न वातावरण । इस प्रकार यदि प्रकृति समान रहती है तो वातावरण में भिन्नता विकास प्रक्रिया में सार्थक भिन्नता लाती है। अतः व्यक्ति का विकास प्रकृति और पोषण के बीच अंतःक्रिया का परिणाम है।

PDF Compressor Free Version

4.5.2 सततता बनाम असततता

क्या आप मानते हैं कि मानव क्रमशः बदलते हैं, उन तरीकों में कि जहाँ उन्हें छोड़ा था वो इस तरीके से भिन्न नहीं था या क्या आप मानते हैं कि मानव अचानक और नाटकीय ढंग से बदलता है?

सततता बनाम असततता मुद्दे का एक पहलू इस बात पर केन्द्रित करता है जिन बदलावों से मानव पूरे जीवन गुजरता है वे क्रमशः हैं या अचानक। सततता का सिद्धांत सुझाव देता है कि व्यक्ति का विकास एक सहज एवं क्रमिक प्रक्रिया है। जैसा आप चित्र 4.4(अ) में देख सकते हैं कि एक लड़की शैशवावस्था से वयस्कावस्था में एक क्रमिक तरीके से जाती है। विकास के सभी चरण पथ का आधार समान है। यहाँ, आप देख सकते हैं कि विकास का प्रारंभिक चरण संगत चरण के लिए एक आधार प्रदान करता है।

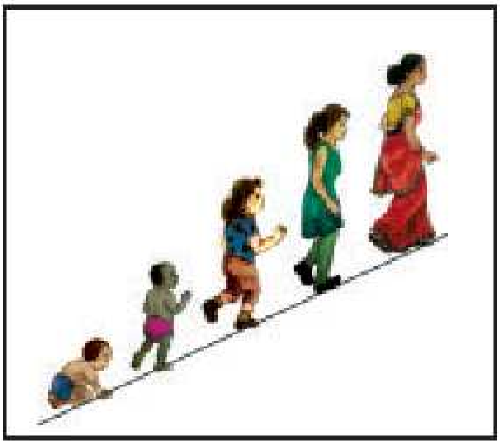

चित्र 4.4 : (अ) सतत विकास

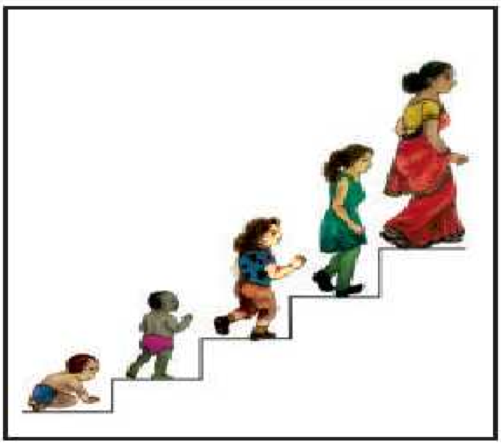

चित्र 4.4 (ब) असतत विकास

किंतु असततता का सिद्धांत सुझाव देता है कि जीवन अवधि के दौरान बदलाव अचानक आते हैं। यह विश्वास भी करता है कि विकास का प्रत्येक चरण अद्भुत है और विशिष्ट लक्षणों से अभिलक्षित है। उदाहरणार्थ - यदि एक बच्चा शैशवावस्था में है तो वह उस चरण के विशिष्ट व्यवहार को प्रदर्शित करेगा, जो उसी बच्चे के किशोरावस्था के चरण का लक्षण नहीं होगा (चित्र 4.4 ब)। दूसरे शब्दों में असततता के सिद्धांत के आलोक में विकास-चरण विशिष्ट होता है।

4.5.3 सक्रियता बनाम निष्क्रियता

आइए एक केस के माध्यम से विकास से संबद्ध, दूसरे मुद्दे को समझने की कोशिश करते हैं।

केस - 5

अपराजिता और माधवी समान कक्षा में पढ़ रही हैं। यद्यपि अपराजिता कक्षाओं को बहुत हल्के ढंग से लेती है लेकिन उसमें उच्च अंक प्राप्त करने के लिए संज्ञानात्मक योग्यता है। वह मूलतः अध्ययन में रूचि नहीं लेती है। दूसरी तरफ, माधवी एक औसत संज्ञानात्मक योग्यता वाली लड़की है किंतु वह अधिगम संकल्पनाओं में कड़ी मेहनत करती है। माधवी ने स्वेच्छा से प्रवेश लिया था और वह पाठ्यक्रम को पूर्ण करने के लिए बहुत उत्सुक थी। प्रथम जाँच में अपराजिता ने माधवी की अपेक्षा अधिक अंक अर्जित किया, जबकि बाद में दूसरे जाँच में उसमें अद्भुत सुधार देखा गया। ऐसा उसके अपने प्रयासों के कारण हुआ था, उसने अपनी कमजोरी को पहचान कर उस पर कठिन परिश्रम किया।

PDF Compressor Free Version

ऊपर वर्णित केस से हम विश्लेषण कर सकते हैं कि व्यक्ति के विकास से संबंधित दो मुद्दे हैं। सक्रियता का पहला मुद्दे मानता है कि विकास की प्रक्रिया में व्यक्ति सक्रिय रहता है। वह स्वीकार नहीं करता है कि सब कुछ स्वाभाविक तरीके से आ रहा है। बल्कि वे विकास के अपने तरीकों को चुनने का प्रयास करते हैं, जैसा कि हम माधवी की उपलब्धि में सुधार के लिए उसके प्रयासों को देख सकते हैं।

दूसरी तरफ विकास में निष्क्रियता सुझाव देता है कि विकास के रास्ते में जो कुछ भी आ रहा है उसे व्यक्ति ज्यों का त्यों स्वीकार लेता है। दूसरे शब्दों में, मनोवैज्ञानिकों ने विकास को व्यक्ति की निष्क्रियता के उत्पाद के रूप में विश्लेषित किया है तथा माना है कि व्यक्ति स्वाभाविक रूप से आ रहे बदलाव को स्वीकार करते हैं। अपराजिता के केस के समान, जो अपने अंकों को सुधारने के लिए प्रयास नहीं करती जैसा कि वह अध्ययन में बहुत निष्क्रिय थी।

4.5.4 सार्वभौमिकता बनाम विशिष्ट संदर्भ

हम पहले ही अध्ययन कर चुके हैं कि विकास एक सतत प्रक्रिया है जो जन्म से मृत्यु तक जारी रहती है। व्यक्ति का विकास कुछ निश्चित सिद्धांतों पर आधारित है। क्रमबद्धता और समान पैटर्न का सिद्धांत नेतृत्व करता है सार्वभौमिकता के एक महत्त्वपूर्ण मुद्दे को। विकास की सार्वभौमिक मान्यता यह स्वीकार करती है कि विकास का रास्ता सभी व्यक्तियों के लिए समान है। उदाहरणार्थ - विकास के चरण शैशवावस्था से प्रारंभ होकर वयस्क अवस्था तक सभी के लिए एक समान हैं। दूसरे शब्दों में, प्रत्येक व्यक्ति संस्कृति, समुदाय एवं समाज की बजाय विकास के क्रमबद्ध पैटर्न से गुज़रता है।

कुछ हद तक विकासात्मक बदलाव संस्कृतियों, समुदाय, समाज से भिन्न हैं और व्यक्ति संदर्भ-विशिष्ट विकास का एक मुद्दा है। एक संस्कृति में अपनाया गया विकास का रास्ता, दूसरी संस्कृति में अपनाये गए विकास के रास्ते से थोड़ा भिन्न हो सकता है। यह मुद्दा बताता है कि विकास विभिन्न पहलुओं जैसे समुदाय, संस्कृति, व्यक्ति आदि के विशिष्ट संदर्भ में होता है। उदाहरणार्थ- जनजाति पृष्ठभूमि के एक व्यक्ति में सामाजिक व्यवहारों का एक समुच्चय हो सकता है जो शहरी व्यक्ति से भिन्न है। इसके अतिरिक्त बधाई देने का तरीका, भाषा, कला और सौंदर्य भी व्यक्ति के संदर्भ विशिष्ट विकास को प्रदर्शित करता है। इस प्रकार एक निश्चित संस्कृति के अंदर विकासात्मक बदलाव उपसंस्कृति, परिवार से परिवार एवं व्यक्ति में भिन्न हो सकता है। किंतु यह देखा गया है कि संदर्भ विशिष्ट विकास के बावजूद व्यक्ति समान विकासात्मक चरणों से गुजरता है।

अपनी प्रगति जाँचें – 4

नोटः (अ) नीचे दिये गए स्थान में अपने उत्तर लिखें।

(ब) अपने उत्तर की तुलना इकाई के अंत में दिये गए उत्तरों से करें।

i) बच्चों और वयस्कों के अध्ययन के केन्द्र में कौन-कौन से मुद्दे हैं?

....

....

....

....

....

PDF Compressor Free Version

4.6 विविध सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों में विकासात्मक कार्य

व्यक्ति के विकास की प्रकृति से संबद्ध मुद्दों का अध्ययन हम पहले ही कर चुके हैं। सामाजिक आर्थिक स्थिति के संदर्भ में तथा संस्कृति एवं विविधकृत विद्यार्थियों के परिदृश्य में विकासात्मक कार्यों का विश्लेषण एवं विवेचन करना अब महत्त्वपूर्ण है। एक अध्यापक के रूप में हम अपनी जीवन वृत्ति के दौरान ऐसी स्थिति का सामना कर सकते हैं कि जिस व्यक्ति के साथ हम कार्य कर रहे हैं वह विविधकृत प्रकृति के अनुरूप हमसे कार्य योजना करने की अपेक्षा करता हो। यहाँ शिक्षक के लिए चुनौती आ जाती है।

विविधीकरण की चुनौती को समझने से पूर्व हमें यह जानना बहुत महत्त्वपूर्ण है कि विकासात्मक कार्य है क्या। एक विकासात्मक कार्य वह कार्य है जो व्यक्ति के जीवन में एक निश्चित अवधि में उठता है। व्यक्ति जन्म से मृत्यु तक सामाजिक रूप से नियंत्रित एक चक्र से गुजरता है और जीवन की प्रमुख घटनाओं को प्रस्तुत करने के लिए सामाजिक रूप से प्रस्तावित एक अनुसूची है। कायदे कानून संस्कृति से संस्कृति एवं सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि के अनुरूप बदलते रहते हैं।

राबर्ट हाविगर्स्ट ने 1951 में विकास से सम्बद्ध व्यक्ति की निश्चित सामाजिक योग्यताओं या मनोवृत्तियों की प्रवीणता की रूपरेखा प्रस्तुत करने के लिए विकासात्मक कार्य शब्दावली बनाई। विकासात्मक कार्य कौशल, ज्ञान, कार्य या मनोवृत्तियाँ हैं जो व्यक्ति के जीवन में आई अधिक मुश्किल भूमिकाओं को सफलतापूर्वक समायोजित करने के क्रम में अपने संपूर्ण जीवन के दौरान विविध चरणों में अर्जित करता है। आपको जानना चाहिए कि ये कार्य शारीरिक परिपक्वता, सामाजिक सम्पादन और व्यक्तिगत प्रयास से किये जाते हैं। इन कार्यों की सफलतापूर्वक प्रवीणता एक व्यक्ति को पूर्ण समायोजित और विकास के स्तरों का भविष्य में सामना करने में समर्थ बनाता है। इसके विपरीत इन कार्यों को करने में असफलता अव्यवस्था को जन्म देती है, चिंता बढ़ाती है और भविष्य में अधिक मुश्किल कार्यों का सामना करने में अयोग्यता बढ़ाती है। हाविगर्स्ट ने यह भी बल दिया है कि किसी भी दिये गए चरण के विकासात्मक कार्य प्रकृति में क्रमिक हैं; प्रत्येक कार्य प्रत्येक परवर्ती कार्य के लिए एक पूर्वापेक्षा है। वे बताते हैं कि विकासात्मक कार्यों के प्रकार जिनके माध्यम से व्यक्ति अवश्य आगे बढ़ता है, वो संस्कृति से संस्कृति में भिन्न होता है; और जैविक रूप से निर्धारित कार्य अधिक संभव है कि सुगठित सांस्कृतिक घटक वाले कार्य की अपेक्षा सांस्कृतिक रूप से सार्वभौम हो।

जैसे माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में हम किशोरों पर अधिक केन्द्रित कर रहे हैं, अब हम उन महत्त्वपूर्ण कार्यों पर चर्चा करते हैं जो किशोरावस्था में जरूरी हैं। किशोरावस्था के संदर्भ में हाविगर्स्ट ने नौ प्रमुख कार्यों को चिन्हित किया है :

किशोरावस्था के विकासात्मक कार्य

1. अपनी शारीरिक संरचना को स्वीकार करना और एक पुरूषोचित या स्त्रियोचित भूमिका स्वीकारना।

PDF Compressor Free Version

2. अपने लिंगों के समान आयु वालों के साथ उपयुक्त संबंध विकसित करना।
3. अभिभावकों एवं अन्य वयस्कों के प्रति संवेदनात्मक रूप से स्वतंत्र होना।
4. आश्वासन प्राप्त करना कि वह भी आर्थिक रूप से स्वतंत्र होगा।
5. अपनी जीवन वृत्ति का निर्धारण एवं तैयारी तथा कार्यक्षेत्र में प्रवेश।
6. सामाजिक सक्षमता के लिए आवश्यक संज्ञानात्मक कौशल और संकल्पनायें विकसित करना।
7. सामाजिक रूप से उत्तरदायी व्यवहार को समझना एवं उसके अनुरूप आचरण करना।
8. विवाह एवं परिवार के लिए तैयार होना।
9. मूल्य प्राप्त करना जो एक उपयुक्त वैज्ञानिक विश्व दृष्टि के साथ सुसंगत है।

स्रोत : हविगर्स्ट (1972) विकासात्मक कार्य और शिक्षा (तीसरा प्रकाशन)- न्यूयार्क, डेविड मैके

अब हम इस केस पर विचार करें :

केस - 6 : सुन्दर ने एक शहरी विद्यालय में कक्षा 9 में प्रवेश लिया। वह मूलतः ग्रामीण पृष्ठभूमि से संबंध रखता है। वह एक बड़े शहर में पढ़ने के लिए बहुत उत्सुक है। विद्यालय में अपने पहले ही दिन वह अपने गाँव के विद्यालय की तुलना में पूर्णतः भिन्न रूप देखता है। वह अपने सहपाठियों के साथ सामंजस्य बनाने में और कक्षाओं को समझने में कठिनाई का सामना करता है।

अब यह केस शिक्षक के समक्ष एक चुनौती रखता है। यदि आप सुन्दर के शिक्षक हैं तो आप इस केस को कैसे सुलझायेंगे? एक शिक्षक के रूप में आपको सुन्दर की पृष्ठभूमि को समझना होगा और धीरे-धीरे उसे इस वातावरण के साथ समायोजित कराना होगा। एक शिक्षक को सभी विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि को भूलकर कर बदलाव लाना होता है। विकासात्मक कार्यों की रूप रेखा विद्यार्थियों की बहुसांस्कृतिक माँगों के आधार पर तैयार करना होगा। उदाहरणार्थ किसी संकल्पना को पढ़ाते समय आपको विभिन्न संस्कृतियों से उदाहरण देने चाहिए। एक प्रयास यह हो सकता है कि यदि आप एक ऐसे विद्यालय में पढ़ा रहे हैं जहाँ विद्यार्थी ग्रामीण पृष्ठभूमि से आते हैं तो आप विविध संकल्पनाओं को पढ़ाने के लिए स्थानीय बोली का प्रयोग कर सकते हैं जो अच्छी तरह समझने में विद्यार्थियों की मदद कर सकता है।

जैसे विद्यार्थियों का विकास समाज में भविष्य के समायोजन को लक्षित करता है वैसे ही कक्षा में ऐसा वातावरण सृजित करने की जरूरत होती है ताकि वे न केवल आधुनिक शब्दावलियों को सीखें बल्कि अपनी संस्कृति को सुरक्षित रखने के प्रति संवेदनशील भी हों। शिक्षा प्रक्रिया के बहुत से घटक हैं जिन्हें विविध पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों की माँगों की पूर्ति करने के लिए परिष्कृत किया जा सकता है (चित्र 4.6)।

PDF Compressor Free Version

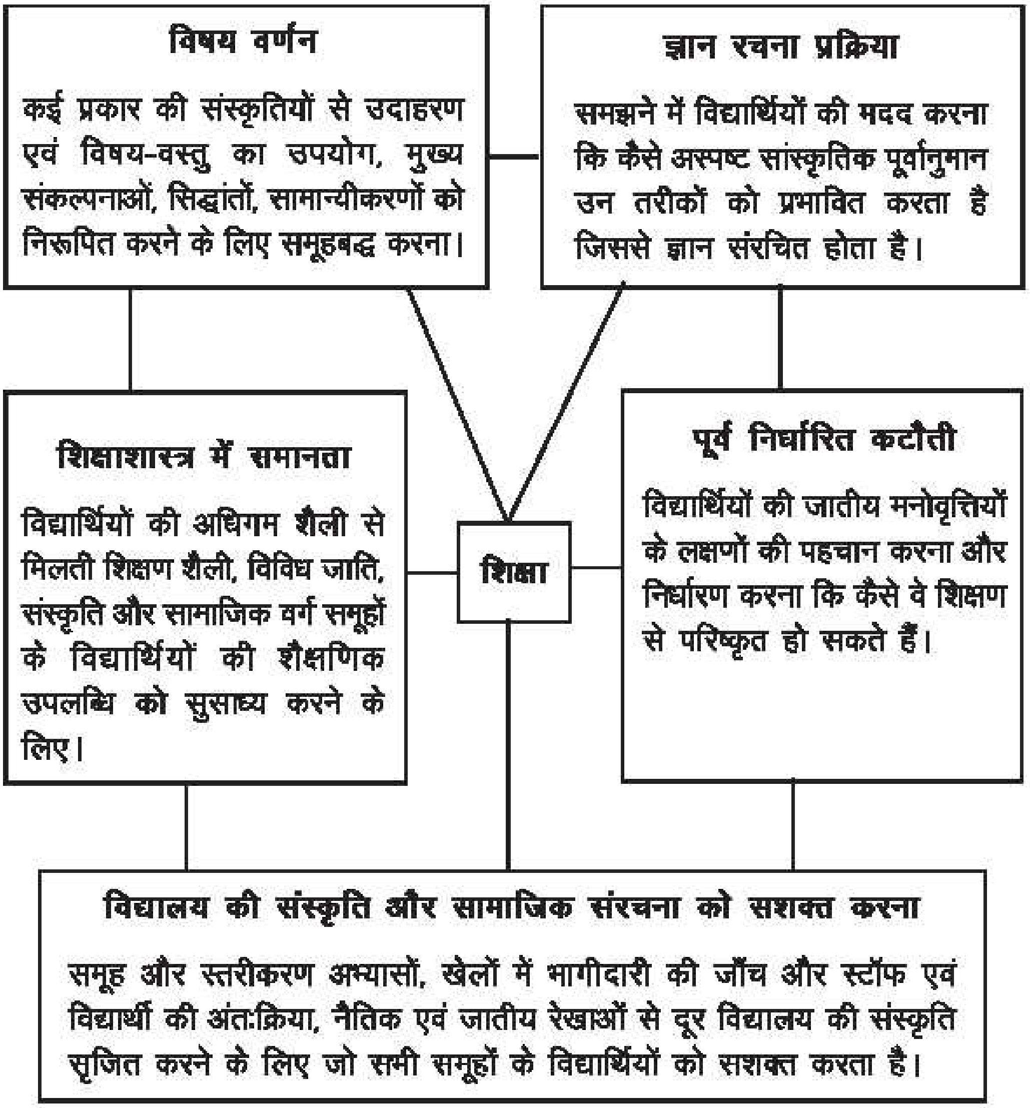

चित्र 4.5 : विविधकृत शैक्षणिक जरूरतों को समावेशित करने के लिए शिक्षा के घटक

4.7 विकास पर विद्यालय का प्रभाव

शिक्षा प्रक्रिया में विकास एक नाजुक मुद्दा हो चुका है। विद्यार्थियों के लिए निर्धारित विकासात्मक प्रक्रिया में विद्यालय एक केन्द्रीय भूमिका रखता है। वह विद्यार्थियों के लिए दीर्घतम, संघटित और अत्यधिक पारिवारिक संदर्भ बनाये हुए है। जब से वे विद्यालय में प्रवेश करते हैं तथा जब तक वे विद्यालयी शिक्षा पूर्ण नहीं कर लेते विद्यार्थी अपना अधिक समय घर के बाहर किसी अन्य स्थान पर बिताने के बजाय विद्यालयों में व्यतीत करते हैं। परिणामस्वरूप, शैक्षणिक संस्थायें विद्यार्थियों के ज्ञान अर्जन करने को प्रोन्नत करने और तरीकों को बनाने में जिससे वे धारण, संवेदना और व्यवहार को नियंत्रित करने में एक केन्द्रीय भूमिका निभाती हैं।

जब हम एक विद्यालय की कल्पना करते हैं तो जो विचार हमारे मस्तिष्क में आता है वह है शैक्षणिक गतिविधियाँ। विद्यालय विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक विकास के लिए शैक्षणिक गतिविधियों का आयोजन करता है। हम विद्यालयों में विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक विकास में सार्थक अंतर देख सकते हैं। इसके पीछे कारण हो सकता है वो तरीका जिसमें प्रस्तावित विषय संचारित होता है। कुछ विद्यालयों के विद्यार्थी विषय की उच्च स्तर की समझ प्रदर्शित

PDF Compressor Free Version

करते हैं साथ ही इसके व्यावहारिक निहितार्थ भी प्रदर्शित करते हैं। जबकि कुछ विद्यार्थी अपने पाठ्यक्रम के सैद्धांतिक भाग में बहुत अच्छे हैं। अतः ये शैक्षणिक कार्य और निर्देश विविध गतिविधियों जैसे वाद-विवाद, परिचर्चा, समूह कार्य, प्रोजेक्ट आदि को शामिल करते हैं ताकि वे इसे याद करने की बजाय संकल्पना को अंतस्थ कर सकें। कक्षा में स्थित व्यक्तिगत भिन्नता के संदर्भ में शैक्षणिक कार्यों और निर्देशों की डिजाइन करते समय शिक्षक के योगदान पर ध्यान दिया जाना चाहिए। अतः कक्षाकक्ष गतिविधियों के लिए समूह कभी-कभी विद्यार्थियों की योग्यता के स्तर के आधार पर बनाया जा सकता है। एक सहयोगात्मक कार्य व्यवस्था में योग्यताओं के विविध विन्यास को प्रस्तुत करने के आधार पर भी समूह बनाये जाते हैं। इसलिए कक्षाकक्ष का वातावरण सहयोगात्मक एवं प्रतिस्पर्धात्मक बनाया जा सकता है।

विद्यार्थियों की विकासात्मक प्रक्रिया का सबसे सशक्त घटक है शिक्षक। शिक्षकों का व्यवहार तीन महत्त्वपूर्ण घटकों को शामिल करता है जो संपूर्ण कक्षाकक्ष वातावरण को प्रभावित करता है। ये इस प्रकार हैं- (i) योग्यता की भूमिका एवं प्रकृति के बारे में शिक्षकों की धारणा (ii) निर्देशात्मक कार्य (iii) शिक्षक-विद्यार्थी संबंध।

प्रथम पहलू है कि शिक्षक अपने व्यवसाय को कैसा महसूस करता है। यदि एक शिक्षक स्वयं को केवल निर्देशक के रूप में महसूस करता है, उसकी भूमिका सिर्फ तथ्य साझा करने की होगी। दूसरी तरफ यदि वह अपना उत्तरदायित्व विद्यार्थियों के व्यवहार को एक आकार प्रदान करने वाले के रूप में समझता है तो उसका उपागम भिन्न हो सकता है। वह अपना अधिक प्रयास विद्यार्थी के जीवन के संज्ञानात्मक, सौंदर्यात्मक के साथ-साथ मनोगत्यात्मक दिशा को बढ़ाने में करेगा। एक शिक्षक भिन्नात्मक शिक्षण-अधिगम कार्यों को करके विविध व्यक्तियों की विभिन्न अपेक्षाओं का मान रख सकता है।

शिक्षक का प्रेरणात्मक एवं संवेदनात्मक सहयोग विद्यार्थियों की संतुष्टि, प्रेरणा, संपूर्ण उपलब्धि एवं स्व-संकल्पना को प्रभावित करता है। विद्यार्थी उस कक्षा में अधिक आरामदेह महसूस करते हैं जहाँ उनकी संवेदनायें संतुष्ट होती हैं। शिक्षक के सहयोगात्मक व्यवहार का महत्त्वपूर्ण प्रभाव विद्यार्थियों एवं शिक्षक के संबंध को सशक्त करता है। जो शिक्षक विश्वसनीय ध्यान रखने वाले एवं विद्यार्थियों के आदरणीय हैं वे उन बच्चों को सामाजिक-संवेदनात्मक समर्थन प्रदान करते हैं जो उनके शैक्षणिक अधिगम कार्यों पर और स्व-संकल्पना एवं मूल्यों से संबद्ध, सकारात्मक उपलब्धि विकसित करने पर समीप जाने, व्यस्त रहने और दृढ़ रहने के लिए जरूरी है। विद्यालय एक औपचारिक संगठन के रूप में भी कार्य करता है। संगठनात्मक तथ्य बच्चों की वृद्धि, सामाजिक-संवेदनात्मक और व्यवहारात्मक विकास को प्रभावित करता है। विद्यालय का वातावरण विकासात्मक प्रक्रिया में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उदाहरणार्थ – सभा में प्रोत्साहन, रिपोर्ट कार्ड में रैंक देना, विविध योग्यता स्तर के लिए पाठ्यचर्या प्रस्तावित करना और प्रतियोगिता विद्यार्थी की विकासात्मक प्रक्रिया को बढ़ाती है। शैक्षणिक गतिविधियों एवं गृह कार्य के मानीटरिंग के रूप में अभिभावकों की सहभागिता, गृहकार्य में सहायता प्रदान करती है, बच्चों को विद्यालय से बाहर शैक्षणिक गतिविधियों में व्यस्त करती है तथा कक्षाकक्ष गतिविधियों एवं विद्यालय की गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी विद्यालय वातावरण के साथ सक्रिय जुड़ाव सृजित करता है। इसके अतिरिक्त विद्यालय समुदाय एवं समाज के लिए प्रोजेक्टों एवं सेवाओं के आयोजन के द्वारा उनके साथ जुड़ाव स्थापित कर सकता है।

PDF Compressor Free Version

अपनी प्रगति जाँचें – 5

नोट: (अ) नीचे दिये गए स्थान में अपने उत्तर लिखें।

(ब) अपने उत्तर की तुलना इकाई के अंत में दिये गए उत्तरों से करें।

i) उन पाँच क्षेत्रों की सूची बनायें जिस पर विद्यार्थियों की विविधकृत जरूरतों को चिन्हित किया गया है।

....

....

....

....

ii) विविधकृत प्रकृति की कक्षा में शिक्षण करते समय शिक्षक द्वारा मस्तिष्क में रखने वाले बिन्दुओं का वर्णन करें।

....

....

....

....

iii) विद्यालय प्रशासन द्वारा समुदाय के साथ जुड़ाव स्थापित करने के लिए किन्हीं पाँच गतिविधियों की सूची बनायें।

....

....

....

....

4.8 सारांश

विकास शिक्षा में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण मुद्दा बन चुका है। मानव विकास की प्रकृति गतिशील है। व्यक्ति के विकास प्रक्रिया में दो प्रक्रियायें सम्मिलित हैं – वृद्धि और विकास। ये दो शब्द कभी-कभी परस्पर एक दूसरे के लिए प्रयुक्त होते हैं। किंतु ये दोनों भिन्न अर्थ का संकेत करते हैं। वृद्धि मूलतः शरीर अनुपात में मात्रात्मक बदलावों का द्योतक है जैसे लंबाई, वजन, आंतरिक अंगों आदि में बदलाव। दूसरे शब्दों में वृद्धि का अर्थ न केवल शरीर के संपूर्ण आयामों में बढ़ोत्तरी से है अपितु दूसरी तरफ विकास व्यक्ति में गुणात्मक बदलावों को प्रदर्शित करता है। यह क्रमागत संगत बदलावों की एक उन्नतशील श्रेणी के रूप में परिभाषित हो सकता है। विकास के बहुत से सिद्धांत हैं, जैसे – सामान्यीकरण से विशेषीकरण का सिद्धांत, अंर्तसंबंध का सिद्धांत, अंतःक्रिया का सिद्धांत, दर के विभेदीकरण का सिद्धांत, एकीकरण का सिद्धांत, भविष्य कथन का सिद्धांत।

विकास को चार प्रमुख चरणों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है- शैशवावस्था, बचपन (प्रारंभिक बचपन और परवर्ती बचपन), किशोरावस्था एवं वयस्क अवस्था। प्रत्येक चरण के अपने लक्षण होते हैं।

PDF Compressor Free Version

मनोवैज्ञानिकों के पास विकास की प्रकृति से संबद्ध बहुत से मुद्दे हैं। वाद-विवाद चार प्रमुख मुद्दों पर आधारित हैं। ये हैं - प्रकृति बनाम पोषण, सततता बनाम असततता, सक्रियता बनाम निष्क्रियता तथा सार्वभौमिकता बनाम संदर्भ विशिष्ट।

व्यक्ति विकासात्मक पहलू पर भिन्न हो जाता है जिसके कारण कक्षाकक्ष की प्रकृति विविधकृत है। शिक्षा के बहुत से घटक हैं जिनका विद्यार्थियों की विविध जरूरतों को संतुष्ट करने के लिए पुनः संरचित होना जरूरी है। ये विविधतायें हैं- विषय वर्णन, ज्ञान संरचना, शिक्षा शास्त्र, पूर्वाग्रह में कटौती, विद्यालय की संस्कृति और सामाजिक संस्कृति। इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों के विकासात्मक पहलू पर विद्याालय का बहुत प्रभाव है। विद्यालय का वातावरण विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक, सौंदर्यात्मक और मनोगत्यात्मक विकास को प्रभावित करता है। विद्यालय के घटकों में से एक है शिक्षक। विद्यार्थियों एवं विषय के प्रति मनोवृत्ति एवं व्यवसाय के बारे में शिक्षक का प्रत्यक्ष ज्ञान भी विद्यार्थियों के विकास के क्षेत्र में मदद करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका ही नहीं निभाता बल्कि संस्कृति और समुदाय के साथ जुड़ाव स्थापित करने में भी मदद करता है।

4.9 इकाई-अंत्य अभ्यास

1. विकास के चरण को उपयुक्त लक्षणों के साथ मिलायें।

	चरण	लक्षण
(अ)	शैशवावस्था	वृद्धि की धीमी गति
(ब)	बचपन	अमूर्त चिंतन
(स)	किशोरावस्था	स्वास्थ्य जोखिम के बारे में सचेत
(द)	वयस्क अवस्था	लाक्षणिक कार्य

2. मानव विकास के सिद्धांतों का वर्णन करें।
3. विकास में चार प्रमुख मुद्दों पर चर्चा कीजिए।
4. कक्षा 9 के कम से कम 35 बच्चों पर उनकी विविध शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों के अध्ययन हेतु सर्वेक्षण करें।

4.10 प्रगति जाँच के उत्तर

1. (i) a.G, b.D, c.G, d.D

   (ii) खण्ड 4.2.1 देखें।

   (iii) अपने स्वयं के अवलोकन लिखें।

2. (i) (अ) व्यक्तिगत विभिन्नता का सिद्धांत (ब) क्रमबद्धता का सिद्धांत

   (स) भविष्यकथन का सिद्धांत (द) सामान्य से विशिष्टता का सिद्धांत

   (ii) खण्ड 4.3.2 देखें।

3. (i) शैशवावस्था, बचपन, किशोरावस्था, वयस्क अवस्था

   (ii) खण्ड 4.4 देखें।

4. (i) प्रकृति बनाम पोषण, निरंतरता बनाम अनिरंतरता, सक्रियता बनाम निष्क्रियता, सार्वभौमिकता बनाम संदर्भ विशिष्ट

PDF Compressor Free Version

5. (i) वृद्धि, अभिरूचि, रूचि, संस्कृति और आवासीय पृष्ठभूमि

(ii) खण्ड 4.6 और चित्र 6 देखें।

(iii) ग्रामीण क्षेत्र में कैम्प, एन.एस.एस. की गतिविधि, जागरूकता कार्यक्रम प्रोजेक्ट आदि।

4.11 संदर्भ और उपयोगी सामग्री

अग्रवाल, जे.सी. (2013). चाइल्ड डेवलप्मेन्ट ऐण्ड प्रोसेस ऑफ लरनिंग, नई दिल्लीः शिप्रा पब्लिकेशन.

बॉर्न्सटिन, एम.ए. (1999). डेवलप्मेन्टल सायकोलॉजी : एन एड्वान्स्ड टेक्स्टबुक. न्यू जर्सी : लॉवरेन्स इर्लबॉम . एसोसिएट्स, पब्लिसर्स.

बर्क, एल.ई. (2011) चाइल्ड डेवलप्मेन्ट, दिल्ली : पी.एच.आई. लर्निंग प्रा.लि.

चौहान, एस.एस. (2009). एडवांस्ड एजूकेशन सायकोलॉजी, नोएडा : विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा.लि.

दाश, बी.ए. (2005). ए टेक्स्टबुक ऑफ एजूकेशन सायकोलॉजी, नई दिल्ली : डॉमिनेन्ट पब्लिशर्स ऐण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स.

क्राउस, के., तथा बॉकनर, एस.ए. (2007). एजूकेशनल सायकोलॉजी. फॉर लर्निंग ऐण्ड टीचिंग. ऑस्ट्रेलिया : थॉमस पब्लिकेसन्स.

मंगल, एस.के. (2014). इसेन्सिअल्स ऑफ एजूकेशनल सायकोलॉजी. दिल्ली : पी.एच.आई. लर्निंग प्रा.लि.

ऑर्मड, जे. (2000). एजेूशनल सायकोलॉजी : डेवलपिंग लर्नर्स. न्यू जर्सी : प्रेन्टिस-हॉल इंचार्ज.

सिगमैन, सी. ऐण्ड राइडर, ई. (2014). लाइफ-स्पान ह्यूमन डेवलप्मेन्ट. यू.एस.ए.: सिन्गेज लर्निंग.

स्किनर, सी. (2006). एजूकेशनल सायकोलॉजी. नई दिल्ली : प्रेन्टिस हॉल ऑफ इंडिया प्रा. लि.

वुलफॉक, ए. (2006). एजूकेशनल सायकोलॉजी, नई दिल्ली : पियर्सन एजूकेशन, डोर्लिंग किंडर्सले (इंडिया) प्रा. लि.

PDF Compressor Free Version

इकाई 5 बाल विकास में विभिन्न परिप्रेक्ष्य

संरचना

5.1 परिचय

5.2 उद्देश्य

5.3 विकास : एक संकल्पना

5.4 बाल विकास के विभिन्न परिप्रेक्ष्य और उनके शैक्षणिक निहितार्थ

5.4.1 जैव वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य

5.4.1.1 परिपक्वन दृष्टिकोण

5.4.1.2 आसक्ति दृष्टिकोण

5.4.2 जीवन विस्तार परिप्रेक्ष्य

5.4.2.1 क्षतिपूर्ति मॉडल के साथ चयनात्मक अभीष्टतमीकरण

5.4.2.2 जीवन विस्तार परिप्रेक्ष्य के लक्षण

5.4.2.3 जीवन विस्तार परिप्रेक्ष्य के शैक्षणिक निहितार्थ

5.4.3 जैव पारिस्थितिकी परिप्रेक्ष्य

5.4.3.1 जैव पारिस्थितिकी परिप्रेक्ष्य के निहितार्थ

5.4.4 संज्ञानात्मक परिप्रेक्ष्य

5.4.4.1 पियाजे का उपागम या संज्ञानात्मक विकासात्मक उपागम

5.4.4.2 सूचना-प्रसंस्करण उपागम

5.4.4.3 विकासात्मक संज्ञानात्मक तंत्रिका विज्ञान उपागम

5.4.5 सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य

5.4.5.1 संज्ञानात्मक परिप्रेक्ष्य के निहितार्थ

5.5 सारांश

5.6 इकाई अंत्य अभ्यास

5.7 प्रगति जाँच के उत्तर

5.8 संदर्भ और उपयोगी सामग्री

5.1 परिचय

विकास के संबंध में हम सभी के व्यक्तिगत अनुभव हैं और हम सभी अपने-अपने अभिभावकों, बच्चों और दोस्तों के व्यवहार को समझने में दिलचस्पी रखते हैं परंतु कभी-कभी यह समझना मुश्किल होता है कि क्यों हम में से कुछ लोग एक निश्चित तरह का व्यवहार करते हैं और अन्य दूसरे भिन्न तरीके का व्यवहार करते हैं। ऐसे प्रश्नों में से हम कुछ प्रश्नों के बारे में इस इकाई में चर्चा करेंगे : किस प्रकार पर्यावरणात्मक प्रभाव मानव विकास को आकार देते हैं? जैसे-जैसे बच्चों की उम्र बढ़ती है उनमें किस प्रकार शारीरिक और मानसिक बदलाव आता है।

यह इकाई आपको उपर्युक्त प्रश्नों का जवाब ढूंढ़ने में मदद करेगी और इस प्रकार उम्र बढ़ने के साथ बच्चों के भिन्न व्यवहार के कारण को आप समझ सकेंगे। हम अपनी चर्चा मानव विकास की संकल्पना की व्याख्या से प्रारंभ करेंगे। मानव विकास की संकल्पना से परिचित

PDF Compressor Free Version

होने बाद फिर आप बच्चे के विकास के विभिन्न परिप्रेक्ष्यों का अध्ययन करेंगें। यह इकाई बच्चों के विकास के विभिन्न परिप्रेक्ष्यों का एक संक्षिप्त परिचय देकर खण्ड - 2 में परवर्ती इकाइयों के लिए आधार प्रदान करेगी। यह कुछ तरीके भी प्रस्तुत करेगी जो सकारात्मक विकास को प्रोन्नत करने में बच्चों के बारे में ज्ञान देगा। अंततः यह इकाई विविध परिप्रेक्ष्यों को मजबूती प्रदान करने के आधार पर बच्चों के साथ अंतःक्रिया करते समय आपके अपने परिप्रेक्ष्यों का गठन करने में एक शिक्षक के रूप में संबोधित करेगी। आशा करते हैं कि इस इकाई को पढ़कर आप आनंद प्राप्त करेंगे और प्राप्त ज्ञान का अपनी कक्षाकक्ष में उपयोग करेंगे।

5.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आपको तैयार हो जाना चाहिए :

- विकास की संकल्पना को परिभाषित करने में;
- बाल विकास के विविध परिप्रेक्ष्यों पर चर्चा करने में;
- बाल विकास के जैव वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य की व्याख्या करने में;
- बाल विकास के जीवन विस्तार परिप्रेक्ष्य का परीक्षण करने में;
- बाल विकास के संदर्भ में पारिस्थितिकी परिप्रेक्ष्य का विश्लेषण करने में;
- बाल विकास के संज्ञानात्मक एवं सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्यों पर चर्चा करने में; और
- बच्चों के साथ कार्य करते समय बाल विकास के विविध परिप्रेक्ष्यों के ज्ञान को लागू करने में।

5.3 विकास : एक संकल्पना

इकाई 4 में आप वृद्धि और विकास शब्दों के बारे में तथा दोनों एक दूसरे से कैसे भिन्न हैं इस बारे में अध्ययन कर चुके हैं। अब आप जानते हैं कि विकास शब्द पूरे जीवन विस्तार, गर्भ से मृत्यु तक मानव सत्ता की वृद्धि को वर्णित करता है। यह बच्चे की वृद्धि में गुणात्मक एवं मात्रात्मक परिवर्तनों को प्रदर्शित करता है। विकास बहुत से परिवर्तनों को अपरिहार्य बनाता है जो चार विस्तृत क्षेत्रों में आते हैं : (i) शारीरिक विकास (ii) संज्ञानात्मक विकास (iii) मनोवैज्ञानिक विकास तथा (iv) नैतिक विकास। आप इकाई 6 में विस्तार से इन परिवर्तनों का अध्ययन करेंगे। संक्षेप में, आप विकास की व्याख्या समग्र परिवर्तनों की एक श्रेणी के रूप में कर सकते हैं जो एक व्यक्ति में जैव वैज्ञानिक एवं पर्यावरणात्मक कारकों के बीच अंतःक्रिया के कारण आती है।

5.4 बाल विकास के विभिन्न परिप्रेक्ष्य और उनके शैक्षणिक निहितार्थ

मानव के व्यवहार का विश्लेषण करने व समझने के विविध तरीके हैं। मनुष्य कैसे सोचता, अनुभव एवं व्यवहार करता है उसका अध्ययन करते समय बाल विकास के कई प्रकार के परिप्रेक्ष्यों का उपयोग कर सकते हैं। हम बाल विकास के बारे में जो जानते हैं वह विकास के विविध परिप्रेक्ष्य में निहित है। विकास के विभिन्न परिप्रेक्ष्य व्यवहार के साथ-साथ अनुमानित व्यवहार की व्याख्या करते हैं जिन्हें अवलोकित किया जा सकता है।

PDF Compressor Free Version

निम्नलिखित दृष्टांत पर विचार करते हैं :

> **केस - 1** साढ़े तीन वर्ष की निशा ने प्रत्येक सुबह स्वयं से कपड़े पहनने की कोशिश करना शुरू कर दिया था। वह अपना जूता नियमित तौर पर गलत पैर में पहनती है और अपना फ्रॉक उलटा पहनती है। जब कोई उसकी मदद के लिए आता वह क्रोधित हो जाती और चिल्लाने लगती "नहीं मैं इसे खुद करूँगी।"
>
> निशा इस तरह का व्यवहार क्यों करती है?
>
> क्या उसका यह व्यवहार उसकी आयु, व्यक्तिगत मानसिकता, पारिवारिक संबंध या पालन-पोषण से संबंधित है?

जब आप इन प्रश्नों का जवाब पता लगाने की कोशिश करते हैं तो आपको विविध परिप्रेक्ष्यों को सोचना होगा जैसा कि विकासात्मक मनोवैज्ञानिक अपनाते हैं। वे व्यवहार को समझने एवं व्याख्या करने का प्रयास करते हैं जो हमारे जीवन में आता है। मानव के विकास के विविध पहलुओं की व्याख्या करने के लिए विभिन्न विकासात्मक परिप्रेक्ष्यों को विकसित किया जा चुका है। आप चित्र 5.1 में दिये गए कुछ प्रमुख परिप्रेक्ष्यों को पढ़ सकते हैं।

उपर्युक्त चित्र में आप देख चुके हैं कि ये विभिन्न परिप्रेक्ष्य हैं जिनसे एक बच्चे के विकास का अध्ययन किया जा सकता है। ये परिप्रेक्ष्य मानव के विकास की व्याख्या एवं वर्णन करते हैं। वे अपसारी लेन्सों को आफर करते हैं जिसके माध्यम से हम विकासात्मक परिदृश्य को समझते हैं। अगले उप खण्ड में हम निम्नलिखित परिप्रेक्ष्यों पर चर्चा करेंगें :

- जैव वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य
- जीवन-विस्तार परिप्रेक्ष्य
- जैव पारिस्थितिकी परिप्रेक्ष्य
- संज्ञानात्मक परिप्रेक्ष्य
- सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य

5.4.1 जैव वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य

हम परिदृश्यों की परिचर्चा जैव वैज्ञानिक परिदृश्य से प्रारंभ करते हैं। मनोविज्ञान के विकास में शरीर विज्ञान एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है और इसलिए यह परिदृश्य जैव वैज्ञानिक मनोविज्ञान के रूप में जाना जाता है। कभी-कभी व्यवहार के शारीरिक एवं जैविक आधारों पर बल देने के कारण उसे जैव मनोविज्ञान या शरीर क्रियात्मक मनोविज्ञान का नाम दिया जाता है। जैविक परिदृश्य में हम विभिन्न व्यवहारों को कैसे आनुवंशिकी प्रभावित करता है

PDF Compressor Free Version

को देखते हैं या मस्तिष्क के विशिष्ट क्षेत्र की क्षति कैसे एक व्यक्ति के व्यवहार और व्यक्तित्व को प्रभावित करती है। यह प्रतीत होता है कि मानव व्यवहार और चिंतन प्रक्रिया का एक जैव वैज्ञानिक आधार है। इस परिदृश्य में मानवीय समस्याओं और क्रियाओं को विभिन्न तरीकों से देखा और अनुभूत किया जाता है। उदाहरणार्थ - उत्साह (आक्रमण) को विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न परिप्रेक्ष्यों में देखा गया है। मनोविश्लेषणवादियों ने उत्साह (आक्रमण) को बचपन के अनुभवों का परिणाम या अचेतन आवेगों के रूप में देखा है। व्यवहारवादियों ने आक्रमण को पुनर्बलन या दण्ड द्वारा बनाये एक व्यवहार के रूप में अनुभूत किया है। दूसरी तरफ जैव वैज्ञानिक परिदृश्य आक्रमण व्यवहार के पीछे स्थित जैव वैज्ञानिक जड़ों को देखता है। ये आनुवंशिक कारकों या मतिभ्रंश के प्रकार पर विचार करते हैं जो इस प्रकार के व्यवहार को दिखाते हैं। हम जैव वैज्ञानिक परिदृश्य से संबद्ध कुछ दृष्टिकोणों पर चर्चा करेंगे। दो प्रकार के दृष्टिकोण हैं : (i) अर्नाल्ड गेसेल (Arnold Gesell) का परिपक्वन दृष्टिकोण (ii) जॉन बॉवल्बी और मैरी एन्सवर्थ का आसक्ति दृष्टिकोण।

आइए हम प्रत्येक दृष्टिकोण पर विस्तृत चर्चा करते हैं।

5.4.1.1 परिपक्वन दृष्टिकोण

चित्र 5.2 : अर्नाल्ड गेसेल (1880–1961)

गेसेल पहले मनोवैज्ञानिक थे जिन्होंने मानव के विकास के मात्रात्मक अध्ययन के माध्यम से बच्चों के शारीरिक, सामाजिक और संवेदनात्मक व्यवहार का व्यवस्थित वर्णन किया। वे बच्चों के विकास के परिपक्वात्मक दृष्टिकोण के सशक्त प्रस्तावक थे। परिपक्वात्मक दृष्टिकोण के अनुसार, सभी बच्चे अपने मस्तिष्क और शरीर की परिपक्वता पर आधारित विकास के उसी चरण से गुजरते हैं। यह उन सभी चीजों को सम्मिलित करता है जो बदलाव की योग्यता से लेकर शैशवावस्था में वस्तुओं को पकड़ने तक को शामिल करता है जो वस्तुओं को अर्जित करने या संग्रह करने को अलग तरीके से करते हैं। आपने अवश्य नोट किया होगा कि विकास एक सुव्यवस्थित क्रम की अनुकरण करता है और यह कि प्रजातियों का जैविक एवं विकासात्मक इतिहास इस क्रम की व्यवस्था का निर्णय करता है। इस दृष्टिकोण की आलोचना की गई है क्योंकि यह बच्चे के विकास में वैयक्तिक एवं सांस्कृतिक भिन्नताओं का ध्यान नहीं रखता है। परवर्ती शोध के लिए उन्होंने एक आधार सृजित किया है। जिसने औसत विकास की प्रवृत्तियों और विकास में वैयक्तिक भिन्नताओं दोनों का वर्णन किया है। इस दृष्टिकोण पर आधारित बच्चों के अध्ययन के लिए एक आदर्श उपागम प्रवर्तित किया गया था। आदर्श उपागम के अनुसार विविध आयु के बहुत सारे बच्चों का अवलोकन किया गया है और विविध विकासात्मक कार्यों को प्राप्त करने के लिए एक विशेष आयु आदर्श निश्चित किया गया है।

परिपक्वनात्मक दृष्टिकोण के शैक्षणिक निहितार्थ

हम अर्नाल्ड गेसेल के परिपक्वनात्मक दृष्टिकोण का प्रभाव बच्चों के विद्यालय जाने की तैयारी और प्रारंभिक बचपन के कक्षाकक्षों में देख सकते हैं। परिपक्वनात्मक दृष्टिकोण के अनुसार तैयारी को एक परिदृश्य के रूप में देखा गया है जो बच्चे के अंतर्गत होता है। फिर भी हम जानते हैं कि सभी बच्चों के विकास दर में भिन्नतायें होंगी।

एक अन्य क्षेत्र था प्रारंभिक बचपन जहाँ परिपक्वनात्मक दृष्टिकोण का कक्षाकक्षों में अपना प्रभाव था। इनके अनुसार बच्चों को पढ़ने के लिए तब तक उपयुक्त नहीं माना जाता जब तक वे साढ़े छः वर्ष की मानसिक आयु प्राप्त न कर लें (मार्फेट एवं वाशबर्न 1931)। बाद में कुछ प्री स्कूल एवं किंडरगार्टेन में उन बच्चों के लिए तैयारी गतिविधियाँ विकसित की गईं थीं जो तब तक पढ़ने जाने के लिए तैयार नहीं थे। किंडरगार्टेन एवं प्री विद्यालयों की स्थापना के लिए यह सिद्धांत आंशिक रूप से उत्तरदायी है।

PDF Compressor Free Version

5.4.1.2 आसक्ति दृष्टिकोण

आगे हम आसक्ति सिद्धांत का परीक्षण करेंगे जो सर्वप्रथम जॉन बाल्बी (John Bowlby) द्वारा एवं बाद में मैरी एन्सवर्थ (Mary Ainsworth) द्वारा प्रस्तुत किया गया था। इस दृष्टिकोण के विस्तार में जाने से पूर्व हम निम्नलिखित केस पर विचार करते हैं :

> **केस - 2 :** 11 वर्ष का रॉबी बोलने की गंभीर अशक्तता एवं व्यवहारात्मक परेशानियों के कारण बहुत छोटी आयु से ही विशेष विद्यालय में जाने लगा था। बचपन एव सामाजिक बहिष्कार के कारण उत्पन्न उसकी अपनी सीमाओं के बावजूद उसके अभिभावक एक लम्बे समय से उसके विकास में रूचि ले रहे थे। उन्होंने विद्यालय के उत्सवों में भाग लिया, उसे वार्षिक अवकाशों पर ले गये और उसके स्वास्थ्य के प्रति विशेष ध्यान दिया। जब उसके अभिभावकों ने बच्चे के प्रति शत्रुता का भाव रखना प्रारंभ कर दिया तो इन सभी सकारात्मक विशेषताओं के बावजूद रॉबी के जीवन से सकारात्मकता लुप्त होने लगी। जब उसके पिता ने उसे छोड़ दिया तो उसने उनसे संपर्क करने की कोशिश की परंतु इससे उसे इस हद तक पीड़ा मिली कि वह अपनी गुस्सैल माता से दूर भागकर पिता के पास रहने चला गया। फिर वह अपने कार्य पर पश्चाताप करने लगा और माँ के पास लौट आया परंतु पुनः वह अपने पिता के प्रति प्यार महसूस करने लगा। रॉबी के अध्यापकों ने उसमें कुछ बदलाव पाया कि वह एकाग्र नहीं रह सकता, विद्यालय के मैदान से वह अंत में जाता, अपनी शिक्षा में वाणी उपचार (Speech Therapy) के प्रावधानों को पूरी तरह से इंकार करने लगा। कक्षाकक्ष के अंतर्गत उसकी बौद्धिक उपलब्धियाँ समाप्त हो गई।
>
> रॉबी की रूचि अध्ययन में लुप्त क्यों हो गई थी?
>
> बाद में किस चीज ने रॉबी को अपने माता-पिता के साथ नजदीकी रिश्ते रखने से दूर रखा?
>
> शिक्षक रॉबी की मदद किस तरह से कर सकते हैं?

इस केस को पढ़ते समय ये प्रश्न आपके मस्तिष्क में उठे होंगे। इन प्रश्नों के बारे में आप अपने मित्रों से चर्चा कर सकते हैं। उपर्युक्त केस **अभिभावक – बच्चे** के रिश्ते के साथ-साथ शिक्षक-शिष्य रिश्ते के स्थायित्व के दौरान **आसक्ति-दृष्टिकोण** एवं आसक्ति जरूरतों के विवरणों पर चर्चा करता है।

आसक्ति सिद्धांत सर्वप्रथम ब्रिटिश मनोविज्ञानी जॉन बॉवल्वी (1907-91) ने सूत्रबद्ध किया था और बाद में उनके सहयोगी एक अमेरिकन विकासात्मक मनोविज्ञानी मैरी एन्सवर्थ ने परिष्कृत किया था। आसक्ति का सिद्धांत अभिभावक-बच्चा के प्रारंभिक संबंध के महत्त्व पर केन्द्रित है जो बच्चों में विकासशील, सामाजिक, संवेदनात्मक एवं संज्ञानात्मक विकास में वांछनीय है। आप आसक्ति का वर्णन एक मजबूत भावनात्मक गठबंधन के रूप में कर सकते हैं जो एक व्यक्ति को एक अंतरंग सहयोगी से जोड़ता है। आप जानते हैं कि परिवार वह पहला स्थान है जहाँ एक बच्चा सीखता है और आसक्ति को अनुभूत करता है। अभिभावक और बच्चे के बीच संबंध की गुणवत्ता भविष्य में बच्चे की वृद्धि और विकास के लिए महत्त्वपूर्ण है। आसक्ति शैशवावस्था से प्रारंभ होती है और संपूर्ण जीवन विस्तार तक बना रहती है। हममें से अधिकांश के लिए पहली आसक्ति 6-7 माह की आयु के आस-पास होती है अपने अभिभावक से। विशेष मामलों में पहला पालनकर्ता सहोदर हो सकता है या अन्य कोई रिश्तेदार। जैसा इकाई 3 में पढ़ा गया, प्रारंभिक पालनकर्ता बच्चे के चरित्र और व्यक्तित्व के

PDF Compressor Free Version

निर्माण के लिए उत्तरदायी है। माँ का बच्चे के साथ स्वाभाविक रूप से कुछ जुड़ाव होता है क्योंकि वह उसे गर्भ में 9 माह तक रखती है। जबकि पिता को जन्म के बाद बच्चे के साथ एक जुड़ाव स्थापित करना पड़ता है। पालनकर्ताओं के साथ अंतःक्रियाओं के आधार पर शिशु **आंतरिक कार्य प्रक्रियाओं** के रूप में संबंधों की अपेक्षा करते हैं जो सामाजिक संबंधों की प्रक्रिया का साधन है। **आंतरिक कार्य प्रणाली** का अर्थ है बच्चे का स्वयं एवं अन्यों के बारे में विकसित संज्ञानात्मक प्रतिरूपण। सुरक्षित रूप से आसक्त शिशु अन्यों के साथ एक प्यार प्रदर्शित करने वाला संबंध आंतरिक कार्य प्रणाली के रूप में गठित करेगा। सुरक्षित आसक्ति को सिद्धांतबद्ध किया गया है — बाद में बचपन, किशोरावस्था और वयस्क अवस्था में मनोवैज्ञानिक विकास के लिए एक महत्त्वपूर्ण आधार बनने के लिए। इसके विपरीत असुरक्षित आसक्त शिशु अनुचित या गलत पालन-पोषण के अधीन प्रत्येक के साथ एक अस्वीकृति की भावना विकसित कर सकता है और दूसरों को अविश्वास योग्य मानता है। असुरक्षित आसक्ति को सिद्धांतबद्ध किया गया है — बाद के विकास में संबंधों और समस्याओं में भिन्नताओं से संबद्ध होने के लिए।

आसक्ति सिद्धांत में एन्सवर्थ का सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान है — 'अद्‌भुत स्थिति', जो आसक्ति की गुणवत्ता को मापने की एक सुविख्यात प्रक्रिया है। इसमें 8 भाग होते हैं जो सारणी 5.1 में प्रस्तुत हैं।

सारणी 5.1 : अद्‌भुत स्थिति के भाग

भाग	घटनायें	अवलोकित आसक्त व्यवहार
1.	प्रयोगकर्त्ता अभिभावक एवं शिशु को खेलने के लिए छोड़ देता है।	
2.	जब शिशु खेलते हैं तो अभिभावक देखते हैं।	अभिभावक को सुरक्षित आधार मानता है।
3.	अजनबी आते हैं और अभिभावक से बात करते हैं।	अजनबी की चिंता
4.	अभिभावक चले जाते हैं, अजनबी शिशु को खेलने देता है, यदि जरूरी हो तो आराम देता है।	पृथकता की चिंता
5.	अभिभावक लौटते हैं और शिशु को सांत्वना देते हैं, अजनबी चला जाता है।	पुनः जुड़ने की प्रतिक्रिया
6.	अभिभावक चला जाता है।	पृथकता की चिंता
7.	अजनबी प्रवेश करता है, आराम अहसास होता है।	अजनबी की चिंता
8.	अभिभावक लौटता है, आराम का अहसास होता है, शिशु खेलने लगता है।	पुनः जुड़ने की प्रतिक्रिया

(स्रोत : एन्सवर्थ ईटी.एल. (1978). पटर्न्स ऑफ अटैचमेंट। हिल्सडेल, एन.जे. एर्लबउम।)

PDF Compressor Free Version

उपर्युक्त सारणी दिखाती है कि तनाव के स्तर में क्रमिक वृद्धि शिशु अनुभव करते हैं क्योंकि वे एक वयस्क अजनबी के उपागम पर और उसके पालनकर्ता के आने व जाने पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। आगे एन्सवर्थ ने आठ भागों में से शिशु के व्यवहार के पैटर्न के आधार पर आसक्ति की गुणवत्ता को चार प्रकारों में वर्गीकृत किया है। निम्नलिखित सारणी को पढ़ें :

सारणी 5.2 : आसक्ति का वर्गीकरण और विकासात्मक परिणाम

आसक्ति के प्रकार	मुख्य विचार	बच्चों में संभावित विकासात्मक परिणाम
सुरक्षित आसक्ति	संबंध जिसमें शिशु विश्वास करते हैं और अपनी माँ पर निर्भर होते हैं।	• उच्च सामाजिक सामर्थ्य • जोश, विश्वास एवं दूसरों के साथ सुदृढ़ संबंध बनाये रखता है। • बेहतर विद्यालय समायोजन • स्वयं का अधिक सकारात्मक बोध
विरोधी/उभयभावी आसक्ति	संबंध जिसमें, एक संक्षिप्त पृथकता के पश्चात् शिशु क्रोधित रहते हैं और सांत्वना देने में मुश्किल आती है।	• अभिभावकों एवं किशोरों के बीच बार–बार विवाद • शिक्षकों द्वारा सुरक्षा संभावित है। • विद्यालय में शिकार होने की संभावना है। • अव्यस्थित चिंता
बचाव/आसक्ति को निरस्त करना	संबंध जिसमें शिशु अभिभावकों से दूर रखें जाते हैं, जब वे पुनः मिलते हैं एक संक्षिप्त पृथकता को पाते हैं।	• संवेदनात्मक निकटता से परेशानी • सामाजिक रूप से न्यूनतम सामर्थ्य • विद्यालय में शिकार बनना संभव है। • शिक्षकों द्वारा अस्वीकार किया जाना संभव है।
विघटित/विस्मृत आसक्ति	संबंध जिसमें बच्चा नहीं समझता कि क्या हुआ जब माँ से पृथक किया गया और बाद में जब पुनः माँ से मिलाया गया।	• पहचान के एकीकरण की समस्या • वास्तविक आक्रोश प्रदर्शित करता है। • स्वयं को चोट पहुँचाता है। • अव्यवस्थित हो पाता है।

सारणी 5.2 से आपने समझ लिया होगा कि बचपन की आसक्ति की गुणवत्ता का जीवन के बाद के चरणों पर बहुत प्रभाव पड़ता है। आपने ऐसे बच्चों को देखा होगा जो सम्मान देने वाले और आपके नजदीक होते हैं जबकि कुछ आपसे दुर्व्यवहार करते हैं। हम सभी कुछ ऐसे अभिभावकों से मिलते हैं जो शिकायत करते हैं कि किशोरावस्था में उनका बच्चा उनके प्रति कम आसक्ति दिखाता है और अपने सहपाठियों के साथ अधिक। क्योंकि जब वे किशोरावस्था में होते हैं तो उनकी सहपाठियों के साथ समान विचार धारा होती है और उनके संबंध मजबूत हो जाते हैं। आसक्ति संबंध सामाजिक अधिगम का आधार प्रदान करता है।

शिशुओं के समान किशोरों को स्वतंत्र और स्व पर्याप्त व्यक्ति होने के लिए अभिभावकों का समर्थन और सुरक्षा जरूरी है। कभी-कभी आप अवलोकन करते हैं कि जो किशोर अपने

PDF Compressor Free Version

अभिभावकों के साथ सुरक्षित आसक्ति संबंधों में रहते हैं उनके पास सामान्यत: पहचान, स्वाभिमान, बृहद सामाजिक सामर्थ्य, बेहतर संवेदनात्मक नियंत्रण और न्यून व्यवहारात्मक समस्याओं की एक मजबूत समझ होती है।

आसक्ति दृष्टिकोण के शैक्षणिक निहितार्थ

जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता है वह बाहर के संसार के साथ मिलना-जुलना प्रारंभ कर देता है। विद्यालयों को परिवार के अतिरिक्त पहली सामाजिक प्रणाली माना जाता है जहाँ बच्चे सहपाठियों एवं शिक्षकों के प्रति आसक्ति विकसित करते हैं। ऐसा क्यों है कि विद्यालय को 'घर के अलावा एक घर' माना जाता है। आप ऐसे किशोरों का सामना अवश्य करते होंगे जो कुछ प्रकार की व्यवहारात्मक समस्याओं को व्यक्त करते हैं विशेषत: जब शिक्षकों एवं सहपाठियों का सामना करते है। इस केस को देखते हैं :

केस-3 : स्नेहा सात वर्ष की आयु में आवासीय विद्यालय का हिस्सा हो गई और उसके अभिभावक दूसरे बच्चे के साथ बाहर चले गए। उसकी शैशवावस्था में उसके अभिभावक उसकी जरूरतों को पूर्ण करने में असफल रहे। अब वह आवासीय विद्यालय में भर्ती है और उसके मस्तिष्क में छोड़े जाने का डर विकसित होता है। वह कक्षाकक्ष में अविश्वास व्यक्त करती है। वह संवेदनात्मक रूप से शांत रहती है और किसी उदास या क्रोधजनक स्थिति में जड़ हो जाती है। वह आवासीय विद्यालय की दैनिक समय सारणी को नापसंद करती है और अपने दोस्तों और शिक्षकों के साथ दुर्व्यवहार करना प्रारंभ कर देती है। वह यह कहने लगी कि उसके अभिभावक उसके छोटे भाई के साथ चले गये क्योंकि वह एक अवांछित बच्ची है।

स्नेहा की समस्या क्या है? उसके अभिभावकों ने उसे किस प्रकार की आसक्ति दी? यद्यपि उसके अभिभावक उसके अध्ययन के लिए धन प्रदान करते हैं फिर भी वह एक अवांछित बच्ची की तरह महसूस क्यों करती है? यदि आप स्नेहा के कक्षाध्यापक होते तो आपका क्या जवाब होता?

स्नेहा के केस से हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि एक बच्चे के पोषण के लिए सुरक्षित वातावरण जरूरी है। स्वयं की एक सुरक्षित समझ के साथ बच्चे अपने शिक्षक एवं अपने सहपाठी समूह के साथ साझा करने में सक्षम होंगे। वे शिक्षक को प्रतिस्थापन आसक्ति की आकृति के रूप में कार्य करने वाला मानते हैं। वे मानते हैं कि वयस्कों के साथ अंत:क्रिया उनके अपने मूल्य को दृढ़ करेगा। यह उन्हें जोखिम उठाने से मुक्त करता है और अधिगम प्रक्रिया में कुण्ठाओं को दूर करता है।

हालाँकि आसक्ति में परेशानियों वाले बच्चे विशेष रूप से कक्षाकक्ष में अविश्वास व्यक्त करेंगे जिसकी परिणति एकाग्रता में अभाव के रूप में हो सकती है। ऐसी समस्याओं को दूर करने और बच्चों की आसक्ति की परेशानियों को दूर करने के लिए विद्यालयों में आसक्ति के प्रति जागरूकता जरूरी है। उसके द्वारा बच्चों और स्टॉफ दोनों के फायदे और व्यवहार में सुधार में मदद मिलती है। यद्यपि शिक्षक एक बच्चे की माँ नहीं हो सकता, तथापि वे बच्चे के प्रतिनिधि के रूप में कार्य कर सकते हैं। बच्चों के मनोसामाजिक और अधिगम जरूरतों को समझना भी जरूरी है।

मनोविज्ञान में यह एक सामान्य धारणा है कि 'प्रकृति शिशु को एक अभिभावक देता है', इसका अंतिम परिणाम इस पर निर्भर करता है कि वे इसका पोषण कैसे करते हैं। अच्छा पोषण प्रकृति की बहुत सी गलतियों की भरपाई कर सकता है। पोषण का अभाव प्रकृति के सर्वोत्तम प्रयास को खराब कर सकता है। (हैरिस 1988 पृष्ठ 2)। अब हम जीवन-विस्तार परिप्रेक्ष्य पर चर्चा करते हैं।

PDF Compressor Free Version

अपनी प्रगति जाँचें – 1

नोट: (अ) नीचे दिये गए स्थान में अपने उत्तर लिखें।

(ब) अपने उत्तर की तुलना इकाई के अंत में दिये गए उत्तरों से करें।

बच्चे के विकास के उनके स्पष्टीकरण में परिपक्वन दृष्टिकोण आसक्ति दृष्टिकोण से किस प्रकार भिन्न है?

....

....

....

....

5.4.2 जीवन विस्तार-परिप्रेक्ष्य

अब तक चर्चा किए गये बाल विकास के परिदृश्यों ने जीवन के वयस्क वर्षों पर बहुत थोड़ा ध्यान दिया है। आधुनिक परिदृश्यों का परीक्षण करते समय हम देख सकेंगे कि वे मानव विकास को एक जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया के रूप में देखने के महत्त्व पर प्रकाश डालते हैं। यदि विकास संकल्पन से मृत्यु तक जारी रहता है तो विकास का विज्ञान उन बदलावों और सततताओं को धारण करता है जिस पर जीवन विस्तार परिप्रेक्ष्य विचार करता है। यह विकास के एक विशिष्ट क्षेत्र से संबद्ध नहीं है (उदाहरणार्थ–मनोसामाजिक) या आयु अवधि (किशोरावस्था) बल्कि यह एक बदलते सामाजिक सांस्कृतिक परिदृश्य में एक व्यक्ति के समस्त जीवन के अंतर्गत विकास को समझने की कोशिश करता है। एक शिशु, एक बच्चा, एक किशोर और एक वयस्क के रूप में स्वयं सोचें और कल्पना करें उन वर्षों की जिसने व्यक्ति को प्रभावित किया जो आज आप हैं। अब हम एक व्यक्ति के विकास को समझने में जीवन विस्तार विकास की संकल्पना ओर इसके महत्त्व का अन्वेषण करते हैं और परिदृश्यात्मक प्रभावों के विविध स्रोतों पर भी चर्चा करते हैं। जीवन विस्तार परिदृश्य के विस्तार में जाने से पूर्व हम निम्नलिखित प्रश्नों पर चिंतन करें :

- किस प्रकार विश्व की हमारी समझ संपूर्ण जीवन के दौरान उन्नत होती और बदलती है?
- जीवन के संपूर्ण विस्तार के दौरान हमारे व्यक्तित्व और संबंध किस प्रकार विकसित होते हैं?
- बचपन से वयस्क अवस्था में एक बच्चे की उपलब्धि प्रेरणा कैसे बदलती है?

ऊपर वर्णित प्रश्न प्रकाश डालते हैं कि जवाबों को पाने के क्रम में जीवन विस्तार परिप्रेक्ष्य अनिवार्य है। जीवन विस्तार परिप्रेक्ष्य के अनुसार मानव का विकास बहुगुणित निर्धारित होता है और इसे एक मात्र ढाँचे के क्षेत्र के अंतर्गत समझा नहीं जा सकता। यह अध्ययन का क्षेत्र है जो व्यवहार में वृद्धि, बदलाव और स्थायित्व के पैटर्न की जाँच करता है जो संपूर्ण जीवन विस्तार के दौरान आते हैं। हम सभी जानते हैं कि व्यक्ति के जीवन के एक मात्र चरण (जैसे बचपन, किशोरावस्था, मध्य आयु या बुढ़ापा) को इसकी उत्पत्ति और इसके परिणामों को पृथकता से नहीं समझा जा सकता। एक विशिष्ट चरण को समझने के लिए सामाजिक, पर्यावरणात्मक और ऐतिहासिक बदलावों के आपसी सम्बन्ध पर भी अवश्य विचार करें। अगले खण्ड में हम पॉल बेट्स (Paul Bates) और उनके सहयोगियों द्वारा विकसित एक मॉडल पर चर्चा करेंगे।

PDF Compressor Free Version

5.4.2.1 क्षतिपूर्ति मॉडल के साथ चयनात्मक अभीष्टतमीकरण

पॉल बेट्स एवं सहयोगियों ने **क्षतिपूर्ति मॉडल के साथ चयनात्मक अभीष्टतमीकरण** नामक एक मॉडल विकसित किया जिसमें तीन प्रक्रियाओं-**चयन, क्षतिपूर्ति और अभीष्टतमीकरण** के बीच एक परस्पर क्रिया चित्रित होती है। चयन प्रक्रिया लक्ष्यों और जीवन कार्यों का चयन करती है जबकि अभीष्टतमीकरण और क्षतिपूर्ति चुने गये लक्ष्यों को बढ़ाने का काम करते हैं। उदाहरणार्थ- पुराने संगीतज्ञ बजाये जाने वाले वाद्यों को कम कर सकते हैं (चयन), प्रायः उनका अधिक अभ्यास करते हैं (अभीष्टीकरण) और उसे एक नीचे स्वर में गति है (क्षतिपूर्ति) इस प्रकार वे अपने संगीत के कार्यक्रमों को जारी रखते हैं। दूसरा उदाहरण लेते हैं, मानो एक बच्चे की महत्त्वाकांक्षा सभी जीवन वृत्तियों में से एक डॉक्टर बनना है, वह एक डॉक्टर के व्यवसाय को अपनी रूचियों और अभिवृत्ति के आधार पर चुनता है (चयन)। उसे विज्ञान विषयों में अधिक अंक प्राप्त करने के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है (अभीष्टीकरण)। यदि उसमें वर्तमान वैज्ञानिक ज्ञान का अभाव है तो नये वैज्ञानिक क्षेत्रों में ज्ञान बढ़ाने के लिए उसे अतिरिक्त अध्ययन करना होगा (क्षतिपूर्ति)। यहाँ आप देख सकते हैं कि इच्छित महत्वाकांक्षा को प्राप्त करने के लिए बच्चा लक्ष्य से संबंधित साधनों को अर्जित करता है और उनका प्रयोग करता है तथा लक्ष्य से संबंधित कौशलों का अभ्यास करता है। क्षतिपूर्ति मॉडल के साथ चयनात्मक अभीष्टतमीकरण की मूल धारणा है कि तीन प्रक्रियायें व्यवहारात्मक कार्य की एक प्रणाली का गठन करती हैं जो विकास और आयु को सृजित और नियंत्रित करती हैं।

पुराने होने पर व्यक्ति दो कारणों से संभावनाओं का चयन करता है- (i) वैकल्पिक चयन और (ii) हानि आधारित चयन। वैकल्पिक चयन तब आता है जब नये कार्यों के परिणामस्वरूप कोई कुछ क्षेत्रों से किसी की सहभागिता को कम करने के लिए किसी को चुनता है। उदाहरणार्थ- 10 वीं कक्षा के दौरान विद्यार्थी कुछ संगठनों को छोड़ देते हैं क्योंकि उन्हें अपने अध्ययन के लिए अधिक समय चाहिए होता है। हानि आधारित चयन तब आता है जब कोई वैयक्तिक या पर्यावरणात्मक संसाधनों में अपेक्षित हानियों के परिणाम स्वरूप कुछ अन्य गतिविधियों में सहभागिता घटाये या सबसे महत्त्वपूर्ण लक्ष्य पर प्रकाश डालकर किसी के लक्ष्य वंशानुक्रम की पुनः संरचना को प्रदर्शित करता है। क्षतिपूर्ति का तात्पर्य है जब पहले की विधियाँ अपने प्रभाव को खो देती हैं तब वैकल्पिक विधियों का उपयोग। यह इस अर्थ में चयन से भिन्न है कि चयन लक्ष्यों की पसंद को प्रदर्शित करता है जबकि क्षतिपूर्ति विधियों की पसंद को प्रदर्शित करता है। उदाहरणार्थ- एक दृष्टि बाधित विद्यार्थी जो पढ़ने की अपनी योग्यता को खो देता है वह ब्रेल प्रणाली का उपयोग कर इसकी क्षतिपूर्ति कर सकता है।

अंतिम प्रक्रिया है **अभीष्टतमीकरण** जो चयनित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अपनायी गई विधियों के अनुप्रयोग को प्रदर्शित करता है। अभीष्टतमीकरण हानियों को कम करता है और उपलब्धियों को बढ़ाता है। अभीष्टीकरण का केन्द्रबिंदु है किसी के संसाधनों (जैविक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक-सांस्कृतिक) और किसी के इच्छित लक्ष्यों के बीच सर्वोत्तम संभावना पर जैसे व्यक्ति सभी चीजों में अभीष्ट परिणामों को प्राप्त नहीं कर सकता, विकास सही लक्ष्यों का चयन करने के लिए एक सक्रिय प्रक्रिया होती है और कभी-कभी इच्छित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए क्षतिपूर्ति करता है।

5.4.2.2 जीवन विस्तार परिप्रेक्ष्य के लक्षण

जीवन विस्तार विकास के विशेषज्ञ पॉल बेट्स एवं उनके सहयोगियों ने इस परिप्रेक्ष्य पर आधारित मानव विकास के बहुत से मुख्य उपागम प्रदान किये हैं। उन्होंने जीवन विस्तार परिप्रेक्ष्य के निम्नलिखित लक्षणों को प्रकाशित किया है जो इस प्रकार हैं :

PDF Compressor Free Version

सारणी 5.3 : जीवन विस्तार परिप्रेक्ष्य के लक्षण

मुख्य लक्षण	प्रमुख विचार	उदाहरण
• विकास एक आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है।	• यह इस परंपरागत धारणा को अस्वीकार करता है कि विकास की मुख्य अवधि बचपन है। • आयु की कोई अवधि विकास से ऊँची नहीं होती है। • विकास को संपूर्ण जीवन विस्तार के संदर्भ में सर्वोत्तम रूप से देखा गया है।	आध्यात्मिक विकास
• विकास बहुआयामी है।	• प्रत्येक आयु में मस्तिष्क, शरीर, रूचि, संवेदना और संबंध बदलते हैं और एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। विकास विविध आयामों में आता है जैसे शारीरिक, मनो–सामाजिक, संज्ञानात्मक आयाम। • प्रत्येक आयाम के विविध घटक होते हैं।	स्मृति, चिंतन, बुद्धिमत्ता, सूचना प्रसंस्करण, ध्यान संज्ञानात्मक आयाम के कुछ घटक हैं।
• विकास बहुनिर्देशात्मक है।	• विविध क्षमतायें समय से परे विकास के विविध पैटर्नों को दिखाती हैं। • विकास में वृद्धि और क्षय दोनों शामिल होते हैं। • किसी के जीवन में कुछ आयामों का प्रसार होता है और अन्य संकुचित होते हैं।	प्रारंभिक विकासात्मक चरण में एक भाषा अर्जित करना आसान है अपेक्षाकृत बाद के विकासात्मक चरण में अन्य भाषा को अर्जित करने के।
• विकास आजीवन सुघट्यता से अभिलक्षित होता है।	• सुघट्यता सकारात्मक या नकारात्मक पर्यावरणात्मक प्रभावों की प्रतिक्रिया में बदलाव की क्षमता को प्रदर्शित करती है। • किसी की क्षमता पूर्व निर्धारित नहीं होती है। • अभ्यास से बहुत से कौशलों को सुधारा जा सकता है। • सुघट्यता बाद के जीवन में जारी रहती है क्योंकि उम्र बढ़ने की प्रक्रिया निश्चित नहीं है बल्कि विचारणीय रूप से बदल सकती है जो व्यक्ति के अनुभवों पर निर्भर करता है।	पूर्ण वयस्क जो नियमित रूप से मानसिक रूप से सजग क्रियाकलापों जैसे – शतरंज खेलना, वाद–विवाद में भाग लेना आदि में व्यस्त रहते हैं। उनमें अलजाइमर रोग होने के कम अवसर होते हैं। (वर्गीज ईटी. एल. 2003)
• विकास बहुविध कार्योत्पादन का परिणाम है।	• मानवीय विकास बहुत से पारस्परिक कारणों का उत्पाद है। यह या तो आंतरिक हो सकता है या बाह्य या जैविक और पर्यावरणात्मक दोनों हो सकती हैं। • कुछ अनुभव समान आयु में सभी के लिए समान होते हैं, कुछ अन्य एक विशिष्ट	एक ही परिवार में बढ़ रहे दो बच्चों के भिन्न अनुभव होंगे यदि एक अशक्त है दूसरा सामान्य है तो।

PDF Compressor Free Version

मुख्य लक्षण	प्रमुख विचार	उदाहरण
	पीढ़ी के लोगों के लिए समान हैं और कुछ अन्य व्यक्ति के लिए अद्भुत हैं।	
• विकास को समझने के लिए बहुविध विषयों की अपेक्षा है।	• मानवीय विकास प्रभावित होता है जीव रासायनिक समीकरणों से लेकर ऐतिहासिक घटनाओं तक। चूँकि मानवीय विकास का अध्ययन अत्यधिक अंत विषयात्मक है। • संपूर्ण जीवन विस्तार के दौरान विकास के रहस्यों को खोलने में योगदान करने के लिए मनोवैज्ञानिकों, समाज विज्ञानियों, मानव–विज्ञानियों, जीव विज्ञानियों, इतिहासविदों आदि के पास बहुत चीजें हैं।	बच्चे के सामाजिक विकास पर परिवार एवं विद्यालयों का प्रभाव। बच्चे के बौद्धिक विकास पर आनुवंशिकता एवं वातावरण का प्रभाव।
• विकास में लाभ एवं हानि दोनों शामिल हैं।	• जीवन विस्तार के प्रत्येक चरण में लाभ और हानि परस्पर जुड़े हैं। • बेल्ट्स कहते हैं कि लाभ अनिवार्य रूप से कुछ प्रकार के हानि लेकर आते हैं और हानि लाभ लेकर आता है। लाभ और हानि संयुक्त रूप से आते हैं।	बच्चे जैसे भाषा पर नियंत्रण प्राप्त करते हैं वे अपनी हकलाहट की ध्वनियों की योग्यता को खो देते हैं।
• विकास संदर्भात्मक है।	• सभी विकास एक संदर्भ जैसे परिवार, अनाथालय, विद्यालय, साथी समूह, शहर, पड़ोस आदि के अंतर्गत आते हैं। • प्रत्येक संदर्भ ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक कारकों से प्रभावित होते हैं। • बदलावों के परिणाम के लिए संदर्भ तीन प्रकार के प्रभावों को काम में लाते हैं :– (i) नियामक आयु ग्रेडेड प्रभाव, (ii) नियामक इतिहास ग्रेडेड प्रभाव (iii) गैर नियामक जीवन की घटनायें। (i) नियामक आयु ग्रेडेड प्रभावों में एक दी गई आयु सीमा में व्यक्तियों द्वारा साझा की गई समानतायें और अनुभव अंतर्निहित हैं। (ii) नियामक इतिहास ग्रेडेड प्रभाव सैद्धांतिक, जनसांख्यिकी और अन्य सामाजिक चर संदर्भों से प्रभावित होता है। (iii) गैर नियामक जीवन की घटनायें असाधारण घटनाये हैं जो एक व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करती हैं।	एक अकार्यात्मक परिवार में पोषित बच्चे का व्यवहार भिन्न होता है एक सामान्य परिवार में पोषित बच्चे के व्यवहार से। वयःसंधि प्राप्त करना, विद्यालय जाना प्रारंभ करना, नौकरी से अवकाश ग्रहण करना, आतंकवादी हमला, भारत पाक युद्ध, किशोरावस्था में गर्भधारण, बचपन में आँख की दृष्टि खोना।

PDF Compressor Free Version

5.4.2.3 जीवन विस्तार परिप्रेक्ष्य के शैक्षणिक निहितार्थ

शिक्षा के क्षेत्र में जीवन विस्तार परिप्रेक्ष्य का महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदर्शित होता है शिक्षा की संकल्पना और लक्ष्यों में। परंपरागत रूप से आप व्यक्ति के विकास के या तो नियामक या भिन्न दृष्टिकोणों के संदर्भ में शिक्षा के लक्ष्य को परिभाषित कर सकते हैं। आप जानते हैं कि विकास का एक नियामक पैटर्न विकासात्मक कार्यों पर केन्द्रित होता है। इसके विपरीत, व्यक्तिगत भिन्नताओं का केन्द्र शैक्षणिक उद्देश्यों के भिन्नीकरण और वैशिष्ट्य पर निर्भर करता है। किंतु जीवन विस्तार परिप्रेक्ष्य में नियामक एवं भिन्न विकासात्मक दोनों पैटर्नों को विविध सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों में स्थान मिलता है और इन पर विचार किया जाता है। इसके अतिरिक्त शैक्षणिक लक्ष्यों को सामाजिक परिवर्तनों के प्रति जवाबदेह होना चाहिए और शिक्षा ऐसे परिवर्तन को निर्देशित भी कर सकती है। इस परिप्रेक्ष्य के माध्यम से, शिक्षा की भूमिका सामाजिक परिवर्तन के संबंध में जो व्यक्ति की मदद करती है उनके विकास को अनुकूल करने और अभीष्टतम करने के लिए व्यापक कौशलों को प्राप्त करने में और भविष्य में बदलाव लाने में संभव होती है।

अन्य क्षेत्र जहाँ इस परिप्रेक्ष्य ने योगदान दिया है वह है निर्देशात्मक प्रविधि। किसी के संपूर्ण जीवन विस्तार के दौरान लगभग प्रत्येक प्रकार की बौद्धिक क्षमता में वैयक्तिक भिन्नतायें बढ़ती हैं। यहाँ शिक्षा में व्यक्तिगत निर्देश का महत्त्व स्वीकार्य है। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा जो वयस्क अधिगमकर्त्ताओं की अधिकांश जरूरतों का पोषण करती है व्यक्तिगत भिन्नताओं एवं प्रयुक्त निर्देशात्मक प्रविधि के पहलू का ध्यान रखती है। जीवन-विस्तार परिप्रेक्ष्य पर आधारित एक शिक्षक के रूप में आपकी भूमिका अधिगम के निदेशक की बजाय एक सुसाधक की है। जब समुदाय एवं शिक्षक बच्चों की शिक्षा सुनिश्चित करते हैं तो अधिगम की विधि का निर्णय करना बच्चों की स्वतंत्रता है। आप अनुभव कर सकते हैं कि संपूर्ण जीवन विस्तार में बच्चों में विकासात्मक बदलाव कैसे विकासात्मक रूप से उपयुक्त कक्षाकक्ष की जरूरत पर केन्द्रित करता है। यह कक्षाकक्ष है जहाँ बच्चे अपने स्वयं के अधिगम की पहल करते हैं और जो आयु उपयुक्त, व्यक्तिगत रूप से उपयुक्त और सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त सामग्रियों को प्रदान कर प्रत्येक बच्चे की जरूरतों को पूर्ण करता है। यह परिप्रेक्ष्य विभिन्न प्रकार के गुणात्मक प्रशिक्षण की जरूरत को भी रेखांकित करता है। अधिगमकर्त्ताओं के विकास को सुसाध्य करने और अभीष्ट करने के क्रम में विविधतापूर्ण शैक्षणिक अवसरों को प्रदान करना अनिवार्य है। संक्षेप में जीवन विस्तार परिप्रेक्ष्य के माध्यम से शिक्षा की संकल्पना, परंपरागत शिक्षा की संकल्पना से विस्तृत हुई है।

क्रियाकलाप - 1

अपने विकास की एक घटना का वर्णन करें जो आपके अभिभावक, दादा-दादी से भिन्न है जब वे आपकी उम्र के थे। जीवन विस्तार परिप्रेक्ष्य के मुख्य अभिलक्षणों का उपयोग करके विकास में इस विविधता का वर्णन करें।

....

....

....

5.4.3 जैव पारिस्थितिकी परिप्रेक्ष्य

इस केस पर विचार करें :

केस 4 : थारा एक शिक्षिका है जो ग्रामीण क्षेत्र के एक जूनियर हाई स्कूल में कार्यरत है। वह अपने कक्षाकक्ष को व्यवस्थित करने में परेशानियों का सामना करती है। शिक्षकों के साथ-साथ सहपाठियों के प्रति बच्चों के व्यवहारात्मक पैटर्नों का अवलोकन कर

PDF Compressor Free Version

> उसने अनुभव किया कि इन बच्चों को संभालना कठिन था। उसके सहयोगियों ने कहा कि ये बच्चे विविध सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि और भिन्न पोषण परिदृश्य जैसे एकल अभिभावक परिवार, विस्तारित परिवार, सूक्ष्म परिवार, अनाथालय आदि से आये हैं। अधिकांश बच्चे प्रथम पीढ़ी के अधिगमकर्ता हैं। कुछ बच्चे प्रकृति से आक्रामक और कुछ गुस्से वाले हैं। उसका प्रथम वर्ष कठिन था। विविध क्रियाकलापों को तैयार करने में नियत रूप से सजग रहते हुए, बच्चों के साथ आसक्ति दिखाकर, अभिभावकों से मिलकर और अपचारी कक्षाओं का आयोजन कर उसने अपने स्तर पर विद्यालय के बाद बहुत सारा समय और ऊर्जा खर्च किया। उसने उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि को समझने का प्रयास किया। उसने पाया कि अभिभावक या तो शिक्षा के अभाव या रूचि के अभाव के कारण घर पर बच्चों की अधिगम प्रक्रिया से विचारणीय रूप से पृथक हैं। उसने बच्चों में रूचि जागृत करने के लिए कक्षाकक्ष में समूह क्रियाकलापों का आयोजन किया और उनके पठन एवं लेखन कौशलों को विकसित करने के लिए अधिक ध्यान दिया। उसने बच्चों की शिक्षा में रूचि लेने के लिए उनके अभिभावकों को समझाया।

यहाँ हम पाते हैं कि थारा बच्चों और उनके अधिगम प्रक्रिया के विकास में पारिस्थितिकी परिप्रेक्ष्य को अपनाती है। उसने अपने बच्चों और उनकी पृष्ठभूमि को समझने का प्रयास किया। उसने बच्चों, अभिभावकों एवं सहयोगी शिक्षकों से परस्पर बात-चीत किया। अपनी समझ से उसने कुछ सामान्य विकासात्मक जरूरतों और सामर्थ्यों को खोज निकाला जैसे- शिक्षकों और बालकों के साथ एक सुरक्षित संबंध, अपने स्वयं के व्यवहार पर नियंत्रण पाना, और बच्चों के बीच व्यक्तिगत भिन्नतायें। बच्चा अपने वातावरण के साथ कैसे परस्पर क्रिया करता है, इसे समझे बगैर आप एक बच्चे के जीवन को नहीं समझ सकते। 1970 के दशक में यूरी ब्रोनफेनब्रेनर (Urie Bronfenbrenner) (1917-2005) ने वातावरण बच्चे को कैसे प्रभावित करता है और बच्चा अपने वातावरण को कैसे प्रभावित करता है, की व्याख्या करने के लिए पारिस्थितिकी दृष्टिकोण विकसित किया। पारिस्थितिकी शब्द वर्णन करता है कि कैसे जीवित वस्तुएँ अपने वातावरण के साथ समायोजित हो जाती हैं। बाद में इसका नाम विकास का जैव पारिस्थिति की मॉडल दिया गया क्योंकि यह इस पर प्रकाश डालता है कि कैसे जीव विज्ञान और वातावरण परस्पर क्रिया पर विकास उत्पन्न करते हैं। विभिन्न सामाजिक प्रक्रियायें विभिन्न अवधियों में कैसे विकास को प्रभावित करती हैं, इसे समझने के लिए यह मॉडल एक योजना प्रदान करता है। जैव पारिस्थितिकी दृष्टिकोण में जिस पर्यावरणात्मक संदर्भ में बच्चा विकास करता है उससे मानव विकास पृथक करने योग्य नहीं है। यह मानता है कि विकास के सभी पहलू मकड़ी के जाले के धागे के समान हैं ताकि विकास का कोई भी पहलू अन्यों से पृथक नहीं हो। Bronfenbrenner ने पर्यावरण को चार स्तरों में विभाजित किया है जिसे चित्र 5.3 में दिखाया गया है :

चित्र 5.3 : ब्रोनफेनब्रेनर (Bronfenbrenner) का विकास का जैव पारिस्थितिकीय मॉडल

PDF Compressor Free Version

ब्रोनफेनब्रेनर (Bronfenbrenner) ने प्रस्तावित किया कि व्यक्ति प्रभावों के एक समूह के अंतर्गत वृद्धि और विकास करता है जो सूक्ष्म प्रणाली, मध्य प्रणाली, बाह्य प्रणाली और वृहद प्रणाली के रूप में वर्गीकृत किया गया है। **सूक्ष्म प्रणाली** वह तत्कालीन पर्यावरण है जिसमें बच्चा रहता है। हम जानते हैं कि बच्चे के लिए प्राथमिक सूक्ष्म प्रणाली परिवार है। विकासशील बच्चा अन्य सूक्ष्म प्रणालियों का भी अनुभव कर सकता है जैसे शिशु सदन या दादी माँ का घर, पड़ोसी, पर्यावरण आदि। आप हमसे सहमत होंगे कि तत्कालीन पर्यावरण के साथ पारस्परिक क्रिया का बच्चे की वृद्धि पर प्रभाव होता है। सूक्ष्म प्रणालियाँ वास्तव में विकास को प्रभावित करती हैं। जितने अधिक उत्साहवर्धक और पोषक ये संबंध और स्थान होते हैं उतना ही बेहतर बच्चे की वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त सूक्ष्म प्रणाली में एक बच्चा इन लोगों के साथ कैसे क्रिया और प्रतिक्रिया करता है, वह इस पर निर्भर करेगा कि वे उसके साथ किस प्रकार का व्यवहार करते हैं। आपने बच्चे के विकास पर परिवार, शिशु सदनों, साथी समूहों, विद्यालयों और पड़ोस के वातावरण के महत्त्व को अनुभूत किया होगा।

मध्य प्रणाली दो या अधिक सूक्ष्म प्रणालियों के बीच अंतर्संबंधों या जुड़ावों को धारण करता है मध्यप्रणाली का सृजन करने के लिए सूक्ष्म प्रणालियाँ स्वयं जुड़ जाती हैं। उदाहरणार्थ- परिवार में एक दाम्पत्य विवाद (एक सूक्ष्म प्रणाली) बच्चे को विद्यालय में (दूसरा सूक्ष्म प्रणाली) शिक्षकों एवं दोस्तों से अलग कर सकता है और परिणामस्वरूप वहाँ उसका अनुभव बौद्धिक रूप से कम उत्प्रेरण करने वाला होता है। दूसरा उदाहरण लेते हैं कि एक बच्चे के माता-पिता या पालक (एक सूक्ष्म प्रणाली) अपने बच्चों की शिक्षा में सक्रिय भूमिका निभाते हैं जैसे शिक्षक-अभिभावक सभा में (दूसरा सूक्ष्म प्रणाली) भाग लेना और बच्चे की प्रगति के बारे में पूछताछ करना, यह बच्चे की समग्र वृद्धि में मदद करेगा। इस प्रकार आपने देखा कि मध्य प्रणाली, सूक्ष्म प्रणालियों में जुड़ाव प्रदान करती है क्योंकि एक सूक्ष्म प्रणाली में जो होता है वह संभवतः अन्यों को प्रभावित करता है।

बाह्य प्रणाली सामाजिक व्यवस्थाओं को प्रदर्शित करती है जिसे एक बच्चा प्रत्यक्षतः अनुभव नहीं कर सकता किंतु वह उसके विकास को प्रभावित कर सकता है। उदाहरणार्थ- यदि एक बच्चे के अभिभावक नौकरी खो दें तो बच्चे पर उसका नकारात्मक प्रभाव हो सकता है क्योंकि वह शुल्क अदा करने और अन्य सामग्रियों को खरीदने में कठिनाई महसूस करता है। दूसरी तरफ अभिभावक की प्रोन्नति (वेतन में वृद्धि के साथ) का बच्चे पर एक सकारात्मक प्रभाव होगा क्योंकि वह उसकी शैक्षणिक जरूरतों को पूरा करने की योग्यता को सुनिश्चित करता है।

वृहद् प्रणाली एक बड़ा सांस्कृतिक संदर्भ है जिसमें सूक्ष्म प्रणाली, मध्य प्रणाली और बाह्य प्रणाली सन्निहित हैं। यह सांस्कृतिक मानकों को धारण करता है जो संगठनों एवं स्थानों की प्रकृति को निर्देश देता है जो किसी की दैनिक जीवन की क्षतिपूर्ति करता है। एक माँ, उसका कार्यस्थल, उसका बच्चा और बच्चे का विद्यालय एक वृहद् सांस्कृतिक व्यवस्था का हिस्सा है। उदाहरणार्थ - भारत में वृहद् प्रणाली प्रजातंत्र की विचारधारा और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को शामिल करता है जो बच्चे को एक उत्तरदायी नागरिक के रूप में विकसित होने को प्रभावित करता है। वृहद् प्रणाली लम्बे समय में विकसित होती है और प्रत्येक भावी पीढ़ी एक अद्भुत वृहद् प्रणाली में विकसित हो सकती है।

सूक्ष्म प्रणाली, मध्यप्रणाली, बाह्य प्रणाली और वृहद प्रणाली के अतिरिक्त ब्रोनफेनब्रेनर (Bronfenbrenner) ने विचार प्राप्त करने के लिए **काल-प्रणाली** ('क्रोनो' का अर्थ है काल) की संकल्पना को प्रवर्तित किया कि लोगों और उनके वातावरण में बदलाव एक समय सीमा में आता है। हम विकास का अध्ययन एक स्थिर अवस्था में नहीं कर सकते, हमें एक वीडियो कैमरे का उपयोग करना होगा और समझना होगा कि कैसे एक घटना दूसरे को बढ़ावा देती है। उदाहरणार्थ - सामुदायिक घटनायें जैसे आर्थिक अवनति, सामाजिक नीतियाँ, युद्ध और

PDF Compressor Free Version

तकनीकी कमियाँ व्यक्तिगत विकास को बदलती हैं जबकि व्यक्ति क्रमशः इतिहास के पाठ्यक्रम को प्रभावित करता है। (मोडेल ऐन्ड एल्डर, 2002) (Modell & Elder, 2002)।

आपको अवश्य सोचना चाहिए कि ब्रोनफेनब्रेनर (Bronfenbrenner) के पारिस्थितिकी मॉडल का उपयोग कर एक समस्या का विश्लेषण कैसे करें। उदाहरणार्थ- मान लो आपको किशोरों से मिलना पड़ा जिसमें से अधिकांश आपके विद्यालय में शराब पी हे हैं, आपको ब्रोनफेनब्रेनर (Bronfenbrenner) की पर्यावरणात्मक प्रणालियों में किससे हस्तक्षेप करना चाहिए? परिवार और साथी समूह सूक्ष्म प्रणालियों की सोच जिसमें किशोर विकसित होते हैं, आप विद्यार्थियों, अभिभावकों या पालकों को एक शराब निषेध कार्यक्रम दे सकेंगे। मध्य प्रणाली के मामले में आप ऐसे विद्यार्थियों का उपयोग कर सकेंगे जो साथियों के नेता हैं- नशे के शिकार बालकों को समझाने एवं शराब से दूर रहने के लिए। शराब के उपयोग के जोखिम को कम करने के लिए आप विद्यालय में शराब मुक्त सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन भी कर सकते हैं।

बाह्य प्रणाली पर विचार करते हुए, सरकार की नीति कि शराब की दुकानें शैक्षणिक संस्थाओं के पास स्थापित नहीं की जानी चाहिए प्रभावी हो सकता है। (उदाहरणार्थ- मद्रास उच्च न्यायालय का निर्णय है कि शराब की दुकानें विद्यालय परिसर के चारों ओर स्थापित नहीं की जानी चाहिए और शराब की दुकान की स्थिति के मामले में विद्यालय से न्यूनतम 100 मीटर की दूरी अपेक्षित है)। अंततः आप निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि वास्तविक समस्या आती है सूक्ष्म प्रणाली (संस्कृति) में जो विशेष रूप से भारतीय परिदृश्य में किशोरों के बीच मद्यपान को बर्दाश्त करती है क्योंकि मदिरा पान की आयु को 21 वर्ष से घटाकर 18 वर्ष कर दिया गया है।

5.4.3.1 जैव पारिस्थितिकी परिप्रेक्ष्य के निहितार्थ

जैव पारिस्थितिकी दृष्टिकोण के अनुसार, बच्चों की दैनिक गतिविधियों में बाध्यकारी व्यवस्था या अवसरों को प्रदान कर वातावरण विकास को प्रभावित करता है। आप सहमत हो सकते हैं कि प्रकृति एवं पोषण के योगदान को आसानी से पृथक् नहीं किया जा सकता क्योंकि वे एक गतिशील व्यवस्था का हिस्सा हैं और विविध परिदृश्यों जैसे परिवार, विद्यालय, मीडिया और समुदाय में इसके भीषण निहितार्थ हैं। आपने पढ़ा होगा कि किस प्रकार यह परिप्रेक्ष्य एक बच्चे की समझ के महत्त्व पर केन्द्रित करता है, न केवल उनके अपने बल्कि एक समय सीमा में विकसित एक वृहद् परिदृश्य के अंतर्गत भी करता है। यह बल देता है कि बच्चे परिवार के सदस्यों, दोस्तों और अप्रत्यक्ष रूप से सामाजिक व्यवस्थाओं जैसे पास–पड़ोस और धार्मिक संस्थाओं से प्रभावित होते हैं और क्रम से विश्वासों और किसी की संस्कृति के धरोहर से प्रभावित होते हैं। उपर्युक्त केस 4 में थारा जैसे शिक्षक अपने कक्षाकक्ष वातावरण को महत्त्वपूर्ण बताते हैं और यह संदेश देते हैं कि एक बच्चा भिन्न सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमियों में पलता है। ऐसा ही एक शिक्षक अपनी सहभागिता इस विषय पर क्रमिक संवादों को आयोजित कर बच्चे के परिवार और अन्य शिक्षकों के साथ जारी रख सकता है।

पालकों और विद्यालयों के लिए बच्चे के साथ दीर्घकालीन संबंधों को रखना आवश्यक है। अधिगम प्रक्रिया में यह शिक्षक का कर्तव्य है कि प्रत्येक बच्चे को उसकी वृहद् प्रणाली में ले जायें और उसके द्वारा सूक्ष्म प्रणाली से जोड़ें। यह पारिस्थितिकी परिप्रेक्ष्य विद्यार्थियों में सामाजिक सामर्थ्य के विकास को समझने के आधार के रूप में कार्य करता है। बच्चों के सामाजिक सामर्थ्य के भविष्यकर्त्ताओं के रूप में पारिवारिक तनाव या सामाजिक आर्थिक स्थिति जैसे एक मात्र चर को देखने की बजाय इसने चरों के समूह विन्यास का परीक्षण किया है जो सामाजिक सामर्थ्य को प्रभावित करेगा। ऐसे कुछ चर हैं - व्यक्तिगत विशेषतायें, पारिवारिक विशेषतायें, शिक्षक का व्यवहार और कक्षाकक्ष का वातावरण। किशोरों के मुद्दे जो आप खण्ड III की इकाई 9 में पढ़ेंगे, को उनके व्यक्तिगत मुद्दे की तरह हल करने की बजाय जैवपारिस्थितिकी परिप्रेक्ष्य के संदर्भ में समझा जाना चाहिए।

PDF Compressor Free Version

जैवपारिस्थितिकी परिप्रेक्ष्य का दूसरा योगदान है- शोधकर्त्ता, नीति के सिद्धांत का अनुप्रयोग और होने वाले परिवर्तन को करना। पारिस्थितिकी मानता है कि समाज के सभी स्तर मानव के विकास पर प्रभाव डालते हैं और सरकार के सभी स्तरों पर सामाजिक नीति और कार्यक्रमों की संरचना में शामिल है। इस परिप्रेक्ष्य में बच्चों और किशोरों के साथ कार्य करने के व्यावहारिक अनुप्रयोग हैं। यह व्यक्त करता है कि बच्चे का वातावरण, माँ या शिशु सदनों की सामुदायिक व्यवस्था और जिसमें वे रहते हैं उसकी राजनीतिक संरचनायें सभी सार्थक हैं जब हम बच्चों के विकास को सुधारने और उनकी रक्षा करने वाले कायक्रमों पर विचार कर रहे होते हैं। यह परिप्रेक्ष्य हमें समझने लायक बनाता है कि एक संस्कृति के अंतर्गत एक संस्कृति या एक समूह में बच्चों का विकास दूसरे समुदायों या सांस्कृतिक समूहों में रहने वाले बच्चों के विकास पर समान रूप से लागू नहीं हो सकता। संक्षेप में, यह निष्कर्ष निकालना बेहतर है कि एक बच्चा न केवल विकास का परिणाम है बल्कि वह इसे एक आकार देने वाला होता है।

अपनी प्रगति जाँचें – 2

नोट: (अ) नीचे दिये गए स्थान में अपने उत्तर लिखें।

(ब) अपने उत्तर की तुलना इकाई के अंत में दिये गए उत्तरों से करें।

i) प्रत्येक कथन का मिलान कोष्ठक में दिये गए पारिस्थितिकी प्रणाली के सही स्तर के साथ करें। (सूक्ष्म प्रणाली, मध्य प्रणाली, वृहद् प्रणाली, बाह्य प्रणाली, काल प्रणाली)

क्रम संख्या	कथन	स्तर
a.	एक अभिभावक बच्चे की प्रगति जानने के लिए शिक्षक–अभिभावक सभा में शामिल होता है।	
b.	बहुत से कार्यरत अभिभावक जो अपने बच्चों को 3 वर्ष की आयु में शिशु–सदन में भेजते हैं वे पहले की तुलना में अब बढ़ गए हैं।	
c.	एक अभिभावक जिसने अपनी नौकरी खो दी है वह अपने खर्च की पुनः योजना बनाता है।	
d.	एक बच्चे के प्रारंभिक शिक्षक ने उसे द्विंकल–द्विंकल लिटिल स्टार गाना सिखाया।	
e.	भारत में एक पुरुष (सरकारी कर्मचारी) पत्नी की प्रसूति के दौरान 15 दिन का पितृत्व अवकाश लेने का हकदार है।	

ii) पारिस्थितिकी के पांच स्तर कौन से हैं जो ब्रोनफेनब्रेनर के अनुसार बच्चे के विकास को प्रभावित करते हैं?

....

....

....

....

PDF Compressor Free Version

5.4.4 संज्ञानात्मक परिप्रेक्ष्य

केस - 5 : जब 3 वर्ष के फैजल से पूछा गया कि वर्षा की बूंदें कैसी दिखती हैं तो उसने जवाब दिया कि ये आँसू की तरह दिखती हैं। जब उसकी 11 वर्ष की बहन अमीना से वही प्रश्न पूछा गया तो उसने जवाब दिया- वर्षा की बूँदों की आकृति उनके आकार पर निर्भर करती है। यदि यह छोटी है तो यह गोलाकार रहती है और यदि यह बड़ी है तो जब तक यह छोटी बूँदों में टूटती है तब तक विकृत हो जाती है और उसकी चचेरी बहन बुशरा जो स्नातक में मौसम विज्ञान पढ़ रही है कहती है कि उसका आकार, पानी का पृष्ठ तनाव और बूँदों पर लगने वाले वायु दबाव पर निर्भर करता है।

संज्ञानात्मक परिप्रेक्ष्य का प्रयोग करके विकासवादी उपर्युक्त जवाबों का विश्लेषण किसी के ज्ञान के स्तर और समझ या संज्ञान के संदर्भ में करेगा। संज्ञानात्मक परिप्रेक्ष्य एक व्यक्ति के चिंतन प्रक्रिया से संबद्ध है। यह देखता है कि हम संसार को कैसे देखते हैं और उसके साथ कैसी पारस्परिक क्रिया करते हैं। हमने उपर्युक्त केस में नोट किया कि बच्चों के ज्ञान की संरचना समय के साथ बदलती है। संज्ञानात्मक विकासात्मक परिप्रेक्ष्य में हम संज्ञानात्मक विकास से संबद्ध तीन उपागमों पर चर्चा करेंगे।

ये इस प्रकार हैं :

- पियाजे का उपागम या संज्ञानात्मक विकास उपागम
- सूचना प्रसंस्करण उपागम
- विकासात्मक संज्ञानात्मक तंत्रिका विज्ञान उपागम

5.4.4.1 पियाजे का उपागम या संज्ञानात्मक विकास उपागम

प्रसिद्ध संज्ञानात्मक मनोविज्ञानी जीन पियाजे ने संज्ञानात्मक विकास का एक महत्त्वपूर्ण सिद्धांत प्रस्तावित किया है। यह परिप्रेक्ष्य इस पर केन्द्रित करता है कि बच्चे संसार की अपनी समझ कैसे बनाते हैं जब वे आत्मसातीकरण (पहले की योजनाओं के अनुरूप जवाब देना) और समायोजन (नई सूचना के उपयुक्त होने के लिए एक योजना को आधुनिक बनाना) के माध्यम से संज्ञानात्मक विकास के चार चरणों से गुजरते हैं। आयु से संबद्ध ये प्रत्येक चरण चिंतन के भिन्न तरीकों को धारण करते हैं। प्रत्येक चरण बच्चों की समझ और उनके वातावरण को संघटित करने में एक मौलिक बदलाव को प्रस्तुत करता है। पियाजे के शब्दों में यह कहा गया है कि बच्चे वयस्कों की अपेक्षा भिन्न तरीके से सोचते हैं। एक बच्चे का संज्ञान निम्नलिखित सारणी में दिखाये गए एक चरण से दूसरे चरण में गुणात्मक रूप से भिन्न होता है।

सारणी 5.4 : पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के चरण

चरण	उपयुक्त आयु	लक्षण
गति संवेदनात्मक चरण	जन्म से 2 वर्ष	शिशु अपने संवेदी और गति कौशलों के माध्यम से संसार का ज्ञान अर्जित करता है।
पूर्व संक्रियात्मक चरण	2 से 7 वर्ष	बच्चे अपने परिप्रेक्ष्य के माध्यम से संसार के पहलुओं को व्यक्त करने के लिए शब्दों और संख्याओं का उपयोग करना प्रारंभ कर देते हैं।

PDF Compressor Free Version

मूर्त संक्रियात्मक चरण	7 से 11 वर्ष	बच्चे मूर्त वस्तुओं के बारे में तार्किक ढंग से सोचना प्रारंभ कर देते हैं किंतु उन्हें अमूर्त संकल्पनाओं को समझने में परेशानी होती है।
औपचारिक संक्रियात्मक चरण	11 वर्ष और अधिक	किशोर मूर्त और सैद्धांतिक संकल्पनाओं के बारे में सोचते हैं, समस्याओं का सृजनात्मक समाधान खोजने के लिए तर्क का उपयोग करते हैं।

केस 5 से आपने विभिन्न आयु वर्ग के बच्चों द्वारा वर्षा की बूँदों के बारे में दिये गए विविध जवाबों को पढ़ा। संज्ञानात्मक परिप्रेक्ष्य का उपयोग कर विकासवादी शोधकर्त्ता बच्चों और किशोरों की सूचना प्रसंस्करण और उनके व्यवहार को प्रभावित करने वाली उनकी समझ को वर्णित करने का प्रयास करते हैं।

पियाजे के परिप्रेक्ष्य के विरूद्ध आलोचना की गई है कि उनका सिद्धांत संज्ञानात्मक विकास को निरंतरता में महसूस नहीं करता है। आपने पढ़ा कि पियाजे ने कैसे चार निश्चित चरण प्रस्तुत किये हैं जिनमें संज्ञान की गुणवत्ता एक चरण से दूसरे चरण में भिन्न है। यद्यपि विकासवादियों के दृष्टिकोण में वृद्धि को एक सतत् प्रक्रिया के रूप में माना गया है। उन्होंने आगे एक दूसरा परिप्रेक्ष्य रखा है जिसे सूचना प्रसंस्करण उपागम के रूप में जाना जाता है जिस पर हम अगले अनुच्छेद में विचार करेंगे।

5.4.4.2 सूचना-प्रसंस्करण उपागम

सूचना प्रसंस्करण उपागम उन तरीकों का पता लगाता है जिससे कोई व्यक्ति सूचना से काम लेता है और इसका निरीक्षण करता है तथा सूचना के बारे में रणनीतियों को बनाता है। जैसा कि यह उपागम पियाजे के शोध से बना है अतः इसे नवीन-पियाजे उपागम के रूप में भी जाना जाता है। यह वर्णन करता है कि बच्चों की चिंतन प्रक्रिया बचपन और किशोरावस्था में कैसे विकसित होती है। बच्चों से भिन्न किशोर अधिक जटिल ज्ञान अर्जित कर अपने आप को सूचना प्रसंस्करण के लिए समर्थ कर वृहद् क्षमता विकसित कर लेते हैं। कम्प्यूटर के समान मानवीय संज्ञान भी मानसिक हार्डवेयर और साफ्टवेयर रखता है। मानसिक हार्डवेयर विभिन्न स्मृतियों के साथ संज्ञानात्मक संरचना रखता है जहाँ सूचना संरक्षित रहती है, जबकि मानसिक साफ्टवेयर संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं का सुगठित समुच्चय है जो विशिष्ट कार्य को पूर्ण करने में व्यक्तियों की सहायता करता है। उदाहरणार्थ- यदि एक बच्चा परीक्षा में बहुत अच्छा करना चाहता है तो उसे पढ़ने के दौरान स्मृति में संरक्षित सूचना को खोलना ही होगा और फिर परीक्षा के दौरान आवश्यक सूचना को पुनः प्राप्त करना होगा।

अब हम यह समझते हैं कि यह उपागम बचपन और किशोरावस्था के दौरान चिंतन प्रक्रिया का विश्लेषण कैसे करता है। यह व्यक्तिगत कम्प्यूटरों में की गई व्यक्तिगत उन्नतियों के समान है। एक दशक पहले बने कम्प्यूटरों की तुलना आधुनिक कम्प्यूटरों से करें। आधुनिक कम्प्यूटरों में बेहतर हार्डवेयर और साफ्टवेयर हैं। उसी प्रकार बड़े बच्चों और किशोरों में बेहतर हार्डवेयर और साफ्टवेयर हैं। जब आप अवलोकन करते हैं जब बड़े बच्चे गणित की समस्याओं को आसानी से कर लेते हैं अपेक्षाकृत छोटे बच्चों के जो अधिकतर कैलकुलेटर

PDF Compressor Free Version

पर विश्वास करते हैं तो आप में अधिक ओजस्विता आ जाती है। विकास का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है सूचना प्रसंस्करण के लिए अच्छी रणनीतियों को सीखना। अगले अनुच्छेद में हम तीसरे उपागम का परीक्षण करेंगे जो है विस्तार में विकासात्मक संज्ञानात्मक तंत्रिका विज्ञान उपागम।

5.4.4.3 विकासात्मक संज्ञानात्मक तंत्रिका विज्ञान उपागम

विकासात्मक संज्ञानात्मक तंत्रिका विज्ञान का लक्ष्य है यह जानना कि किस प्रकार मस्तिष्क की कार्य प्रणाली मानसिक प्रक्रिया का उत्थान करती है जैसे तार्किक चिंतन, तर्कण और दृष्टिकोण। यह उपागम मस्तिष्क प्रक्रियाओं के लेंस के माध्यम से संज्ञानात्मक विकास को देखता है। **विकासात्मक संज्ञानात्मक तंत्रिका विज्ञान** एक अंतर्विषयी वैज्ञानिक क्षेत्र है जो मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं और विकासशील संगठन में तंत्रिका वैज्ञानिक आधारों को समझने के लिए समर्पित है। यह परीक्षण करता है कि बच्चे जैसे बढ़ते हैं तो उनका मस्तिष्क कैसे बदलता है और उनके बीच अंतर्संबंधों का परीक्षण करता है और मस्तिष्क कैसे बदल रहा है तथा पर्यावरणात्मक एवं जैववैज्ञानिक प्रभाव विकासशील मस्तिष्क पर कैसे प्रभाव डालता है (विकीपीडिया, द फ्री इनसाइक्लोपीडिया)। दो मुख्य सिद्धांत जिसके चारों ओर यह उपागम घूमता है वे हैं :

- विभिन्न सूचना प्रसंस्करण संक्रियायें मस्तिष्क के विभिन्न क्षेत्रों में निष्पादित होती हैं तथा

- एक संज्ञानात्मक निष्पादन समग्र कार्यों को सूचना प्रसंस्करण गतिविधियों में तोड़ता है तथा मस्तिष्क के उस क्षेत्र का निर्धारण करता है जो गतिविधि निष्पादन करता है।

उपर्युक्त सिद्धांतों से हम मानसिक संक्रियाओं के अध्ययन में मस्तिष्क आधारित उपागम को नोटिस कर सकते हैं। इस उपागम ने तंत्रिका तंत्रात्मक गतिविधि का ध्यान रखा है जो चिंतन, तर्कण और अन्य संज्ञानात्मक व्यवहार के आधार में होता है। उदाहरणार्थ- गति कौशलों और दृश्य गति समन्वय के बीच अंतर्संबंधों पर विचार करें जिनके लिए उच्च संज्ञानात्मक कार्यप्रणालियाँ अपेक्षित हैं जो बाद के किशोरावस्था में परिपक्वता प्राप्त करती हैं। हम अटेंशन डेफिसिट हाइपरएक्टिविटी डिसआर्डर (Attention-Deficit Hyperactivity Disorder) से ग्रस्त बच्चों को देखते हैं, जो एक विकासात्मक विकार जो संज्ञानात्मक और गति कार्यशीलता दोनों को प्रभावित करता है। संज्ञानात्मक विकासात्मक विकारों वाले बहुत से बच्चों में गत्यात्मक कमियाँ प्रत्यक्ष हैं। डिसलेक्सिया, विशिष्ट भाषा विकार और आटिज्म पर अधिक शोध आयोजित हो रहे हैं। विकास के दौरान आनुवंशिक और पर्यावरणात्मक कारकों की अंतर्क्रिया विकासात्मक संज्ञानात्मक तंत्रिका विज्ञान मनोवैज्ञानिकों से संबंद्ध एक अन्य क्षेत्र है। इस प्रकार यह उपागम अध्ययन करता है कि शारीरिक मस्तिष्क और तंत्रिका प्रणाली अन्य अमूर्त कारकों के साथ चिंतन और व्यवहार के पैटर्नों को कैसे नेतृत्व प्रदान करती है।

जब हम पियाजे के सूचना प्रसंस्करण और विकासात्मक संज्ञानात्मक तंत्रिका विज्ञान उपागम का अध्ययन करते हैं तो हम देखते हैं कि जिस परिदृश्य में विकास होता है वे उस सामाजिक सांस्कृतिक परिदृश्य का ध्यान नहीं रखते हैं। यद्यपि सामाजिक सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य संज्ञानात्मक परिप्रेक्ष्य की श्रेणी के अंतर्गत आता है फिर भी हम इस परिप्रेक्ष्य पर विस्तार में परिचर्चा आने वाले अनुच्छेदों में करेंगे।

PDF Compressor Free Version

अपनी प्रगति जाँचें – 3

नोट: (अ) नीचे दिये गए स्थान में अपने उत्तर लिखें।

(ब) अपने उत्तर की तुलना इकाई के अंत में दिये गए उत्तरों से करें।

i) सूचना प्रसंस्करण उपागम और विकासात्मक संज्ञानात्मक तंत्रिका विज्ञान उपागम एक दूसरे से किस प्रकार भिन्न हैं?

....

....

....

....

5.4.5 सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य

सामाजिक सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य बच्चे के विकास की प्रक्रिया में संस्कृति और सामाजिक अन्तःक्रिया की भूमिका पर प्रकाश डालता है। सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य के प्रस्तुतकर्त्ता लेव विगोटस्की बताते हैं कि एक बच्चे की सोच निर्वात में विकसित नहीं होती है बल्कि सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ से प्रभावित होती है जिसमें वह बढ़ रहा होता है। विगोटस्की मानते हैं कि स्मृति, ध्यान और तर्कण का विकास भाषा, गणितीय प्रणालियों और स्मृति रणनीतियों का उपयोग करने के लिए अधिगम को शामिल करता है जो समुदाय में प्रचलित हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि प्रत्येक संस्कृति-चिंतन के कुछ निश्चित उपकरणों के साथ अपने सदस्यों को प्रदान करता है। विविध संस्कृतियों में रहने वाले व्यक्ति जिस तरह से सूचना अपनी संततियों को प्रदान करते हैं वो विविध भाषाओं में मूर्त रूप लेती हैं जिससे चिंतन आकार लेता है। अतः हम यह कह सकते हैं कि चिंतन सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भों में बदलते रहते हैं।

सहयोगात्मक रणनीति जो कक्षाकक्षों में प्रयुक्त होती है और जिससे आप परिचित हैं वह इस सामाजिक सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य से विकसित होती है। इस परिप्रेक्ष्य में ज्ञान व्यक्तियों के अंदर से सृजित नहीं होता है बल्कि अन्य लोगों के साथ जो अलग चिंतन प्रक्रियायें रखते हैं और जो अलग संस्कृतियों से संबंध रखते हैं, के साथ अन्तःक्रिया से संरचित होता है। जब कि पियाजे ने स्वतंत्र अन्वेषणकर्त्ताओं के रूप में बच्चों पर विचार किया, विगोटस्की उन्हें सामाजिक सत्ता के रूप में देखते हैं जो अभिभावकों, शिक्षकों और अन्यों को एक मंच के रूप में उनके साथ अंतःक्रियाओं के माध्यम से अपने मस्तिष्क को विकसित करता है।

अपनी प्रगति जाँचें – 4

नोट: (अ) नीचे दिये गए स्थान में अपने उत्तर लिखें।

(ब) अपने उत्तर की तुलना इकाई के अंत में दिये गए उत्तरों से करें।

i) बच्चे के विकास में संस्कृति क्या भूमिका निभाती है?

....

....

....

5.4.5.1 संज्ञानात्मक परिप्रेक्ष्य के निहितार्थ

गुणात्मक विकास पर पियाजे के परिप्रेक्ष्य का शिक्षा पर एक महत्त्वपूर्ण प्रभाव था। हम नोट कर सकते हैं कि इस मान्यता पर अब बहुत से शैक्षणिक कार्यक्रम बने हैं कि बच्चों को उसी

PDF Compressor Free Version

स्तर के अनुरूप पढ़ाया जाना चाहिए जिसके लिए वे विकासात्मक रूप से उपयुक्त हैं। पियाजे के सिद्धांत को कई तरीकों से अपनाया गया है, जैसे बच्चों के लिए नवाचारी अधिगम खिलौनों से लेकर शिक्षकों की पाठ योजना तक। इसके अलावा पियाजे के कार्य से बहुत सी निर्देशात्मक रणनीतियों को निकाला गया है, जो एक सहयोगात्मक वातावरण प्रदान करने को शामिल करती हैं, सामाजिक अंतःक्रिया का उपयोग करती हैं और सहपाठी शिक्षण का उपयोग करती हैं।

विशेषतः अधिगम और व्यवहारात्मक समस्याओं वाले बच्चों के लिए शिक्षण एवं अधिगम प्रक्रिया में सूचना प्रसंस्करण उपागम का महत्त्वपूर्ण निहितार्थ है। एक शिक्षक या अग्रदर्शी शिक्षक के रूप में आप विविध संज्ञानात्मक रणनीतियों के माध्यम से विद्यार्थियों को ध्यानमग्न करने के लिए अपने शिक्षण-अधिगम वातावरण को संवर्धित कर सकेंगे। आप कार्यरत स्मृति को लम्बे समय तक सक्रिय रखने के लिए, सूचना को धारण करने में विविध शिक्षण कौशलों का उपयोग कर सकेंगे।

सूचना संसाधन उपागम के शिक्षण एवं अधिगम प्रक्रिया में महत्वपूर्ण निहितार्थ हैं, विशेष रूप से अधिगम और व्यवहारात्क समस्याओं वाले विद्यार्थियों के लिए। एक शिक्षक अथवा भावी शिक्षक के रूप में आप विविध मनो-संज्ञानात्मक रणनीतियों के माध्यम से विद्यार्थियों के ध्यान को सुसाध्य बनाने के लिए अपने शिक्षण अधिगम वातावरण को परिष्कृत कर सकते हैं। आप कार्यरत स्मृति में दीर्घ काल तक सूचना को सक्रिय बनाये रखने के लिए विविध शिक्षण कौशलों का प्रयोग कर सकते हैं। इस उपागम ने स्मृति के एटकिन्सन (Atkinson) और शिफ्रिन (Shiffrin) मॉडल के विकास का भी नेतृत्व किया है जो कम्प्यूटर एनालोजी के समान है। इस मॉडल स्मृति के अनुसार सूचना को कई चरणों की एक शृंखला में प्रसंस्कृत किया जाता है। स्मृति के तीन विशिष्ट चरण हैं जैसे- संवेदी स्मृति, अल्प अवधि स्मृति और दीर्घ-अवधि स्मृति। विकासात्मक संज्ञानात्मक तंत्रिका विज्ञान उपागम के सामान्य एवं असामान्य विकास को एक नई दिशा दी है। इसमे असामान्यताओं में विभिन्न प्रकार के उपचारों को सुझाया गया है जो एक समावेशी व्यवस्था में बच्चों को संभालने के लिए लाभप्रद है।

सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य बच्चों को विद्यालय जाने के लिए तैयारी को परिभाषित करने में संस्कृति और वातावरण की भूमिका पर बल देता है। यह तैयारी पर विचार करने की इस धारणा को अस्वीकार करता है कि बच्चे में कुछ है तथा अधिगम के बाह्य साक्ष्यों को भी अस्वीकार करता है। यह मानता है कि विद्यालय जाने के लिए तैयारी परिवार और समुदाय के लोगों से प्रबल होती है। इस दृष्टिकोण में आप देख सकते हैं कि विद्यालय जाने के लिए तैयारी का उत्तरदायित्व बच्चे से समुदाय पर स्थानांतरित हो जाता है। यद्यपि इस दृष्टिकोण के अंतर्गत तत्परता एक समुदाय से दूसरे समुदाय में भिन्न हो सकती है।

अपनी प्रगति जाँचें – 5

नोट: (अ) नीचे दिये गए स्थान में अपने उत्तर लिखें।

(ब) अपने उत्तर की तुलना इकाई के अंत में दिये गए उत्तरों से करें।

i) बाल विकास में संज्ञानात्मक परिप्रेक्ष्य के निहितार्थ की व्याख्या करें।

....

....

....

PDF Compressor Free Version

5.5 सारांश

उपर्युक्त अनुच्छेदों से आपने बाल विकास के विविध परिप्रेक्ष्यों को अवश्य सीखा होगा। प्रत्येक परिप्रेक्ष्य मानव विकास की व्याख्या के विभिन्न तरीकों को बताता है। जैव वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य मानव व्यवहार के शारीरिक आधार का अध्ययन करता है। जीवन विस्तार परिप्रेक्ष्य व्यवहार में बदलाव और वृद्धि के पैटर्न का परीक्षण करता है जो पूरे जीवन विस्तार में आते हैं। संज्ञानात्मक परिप्रेक्ष्य के संदर्भ में एक व्यक्ति की चिंतन प्रक्रिया को ध्यान में रखा जाता है। जैव पारिस्थितिकी और सामाजिक सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में आपने देखा कि विकास के बारे में विचार किस प्रकार से वातावरण और संस्कृति के अनुसार उत्पन्न होते हैं। प्रत्येक सिद्धांत के मूल को समझने के पश्चात् आप निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि कोई भी एक मात्र सिद्धांत विकास के सभी पहलुओं की पूर्ण व्याख्या प्रदान नहीं करता है। बाल विकास की हमारी समझ बदल चुकी है और परिवर्तन जारी रहेगी जैसे-जैसे हम एक परिप्रेक्ष्य से दूसरे परिप्रेक्ष्य को जानेंगे।

5.6 इकाई अंत्य अभ्यास

1. अनाथालय में पले एक बच्चे के उदाहरण का उपयोग कर, Bronfenbrenner के जैव पारिस्थितिकी मॉडल का उपयोग सार्थक लक्षणों का वर्णन करने में करें जिसने उसके विकास को प्रभावित किया है।
2. आप अपने विकास की व्याख्या करने के लिए किस सिद्धांत को सबसे उपयुक्त मानते हैं? और क्यों?
3. इस इकाई में चर्चित कोई दो परिप्रेक्ष्य बच्चों के विकास की व्याख्या कैसे करते हैं?

शब्दावली

बहुगुणित निर्धारण : कुछ ऐसा जो एक से अधिक कारक या तथ्य से उत्पन्न हुआ है।

रूपरेखा : एक संज्ञानात्मक ढाँचा जो श्रेणियों एवं संगठनों में एक संकल्पना का स्थान लेता है।

पुनर्बलीकरण : एक व्यवहार के प्रति प्रतिक्रिया जो अधिक होने के लिए उस व्यवहार को उत्पन्न करता है।

दण्ड : एक नकारात्मक परिणाम उत्पन्न होना।

ढाँचा : एक वयस्क जो निर्देश या सहायता प्रदान कर बच्चे को ज्ञान की संरचना करने में मदद करता है।

अधिसंज्ञान : किसी के अपने अधिगम अथवा चिन्तन की सजगता अथवा विश्लेषण (मेरियम–वेब्सटर, 2012)

5.7 प्रगति जाँच के उत्तर

1. खण्ड 5.4.1.1 और 5.4.1.2 को देखें।
2. (i) (a) मध्य प्रणाली
   (b) काल प्रणाली

PDF Compressor Free Version

(c) बाह्य प्रणाली

(d) सूक्ष्म प्रणाली

(e) वृहद् प्रणाली

(ii) सूक्ष्म प्रणाली, मध्य प्रणाली, वृहद् प्रणाली, बाह्य प्रणाली और काल प्रणाली

3. खण्ड 5.4.4.2 और 5.4.4.3 को देखें।

4. खण्ड 5.4.5 को देखें।

5. खण्ड 5.4.5.1 को देखें।

5.8 संदर्भ और उपयोगी सामग्री

आइंसवर्थ, एस.डी.एस., ब्लेहर, एम., वाटर्स, ई. ऐण्ड वाल, एस. (1978). पैटर्न्स ऑफ अटैच्मेन्ट. हिल्सडेल, एन.जे. : इर्लबम.

एलेन, जे. ऐण्ड लैण्ड, डी. (1999). अटैच्मेन्ट इन एडोलेसेन्स. इन.जे. कैसिडे एण्ड पी. सेवर (एडि.), हैन्डबुक ऑफ अटैच्मेन्ट. न्यू यॉर्क : गिलफार्ड

बाउलबाय, जे. (1969). अटैच्मेन्ट एण्ड लॉस : अटैच्मेन्ट (वॉल.1.). न्यू यॉर्क : बेसिक

हैरिस, जे.आर. (1998).द नर्चर एजंप्सन : ह्वाय चिल्ड्रेन टर्न आउड द वेय दे डू. न्यू यॉर्क : फ्री प्रेस

कैल, रॉबर्ट वी. एण्ड कावनघ, जॉन सी. (2013). ह्यूमन डेवलप्मेन्ट-ए लाइफ-स्पान विब (छठौं संस्क.). यूनाइटेड स्टेट्स : वड्सवर्थ, सिनेज लर्निंग

लेविन, लौरा इ. ऐण्ड मंस्च, जॉयसी. (2011). चाइल्ड डेवलप्मेन्ट-एन एक्टिव लर्निंग एप्रोच. कैलिफोर्निया, थाउजेन्ट ओक्स : सेज पब्लिकेशन, इंच

मार्केविज, डी., डॉली, ए.बी., ऐण्ड ब्रेन्गेन, एम. (2001). द क्वालिटी ऑफ एडोलेसेन्ट्स' फ्रेन्डसिप : एसोशियेसन्स विद मदर्स' इंटरपर्सनल रिलेशनशिप्स, अटैच्मेन्ट टू पैरेन्ट्स ऐण्ड फ्रेन्ड्स एण्ड प्रोसोसिअल बिहैवियर्स. जर्नल ऑफ एडोलेसेन्स, 24,429-445

मिसेल्स, एस.जे. (1999). एसेसिंग रेडिनेस इन आर.आर. पिएन्टा ऐण्ड एम.एम. कॉक्स (एडि.) द ट्रान्जिसन टू किन्डरगार्टेन बाल्टिमोर, एम डी :पॉल ब्रुक्स, 39-66. http://www.gulfbend.org/poc/view_doc.php?type=doc&id=10105 से लिया गया।

रिले, एम.डब्लू. (1979). इन्ट्रोडक्सन.इन.एम. डॅब्लू. रिले (एडि.), एजिंग फ्राम बर्थ टू डेथ : इन्टरडिसिप्लिन्री पर्सपेक्टिव, बॉउल्डर, सी ओ : वेस्टविव प्रेस.

सिगमैन, कैरोल के. ऐण्ड राइडर, एलिजाबेथ ए. (2003). ह्यूमन डेवलप्मेन्ट. नई दिल्ली : सिनेज लर्निंग इंडिया प्राइवेट लिमिटेड.

सेन्ट रोजमेरी एजूकेशनल इंस्टिट्यूट. "ग्रोथ ऐण्ड डेवेलप्मेन्ट थ्योरी : अरनॉल्ड गेसेल (1880–1961)." एचटीटीपी://स्कूलवर्कहेल्पर.नेट/ सेन्ट रोजमेरी एजूकेशनल इंस्टिट्यूट, लास्ट अपडेट : 2015. http://schoolworkhelper.net/growth-and-development-theory-arnold-gesell-1880-%e2%80%93-1961 से 5–12–2015 को लिया गया।

सेन्ट्रोक, जॉन डब्लू. (2007). एडोलेसेन्स (11th ed). नई दिल्ली : टाटा मैकग्राव-हिल पब्लिशिंग कम्पनी लिमिटेड

वर्गिस, जे., लिप्टन, आर.बी., काट्ज, एम.जे., हॉल, सी.बी.डर्बी, सी.ए. कुस्लेन्सकी, जी., एम्ब्रोस, ए.एफ., स्लिविन्सकि, एम., बच्के, एच. (2003). लिजर एक्टिविटिज ऐण्ड द रिस्क ऑफ डिमेंटिया इन द इल्डरली. न्यू इंग्लैण्ड जर्नल ऑफ मेडिसिन, 348,2508,–2516.

PDF Compressor Free Version

इकाई 6 बाल विकास के आयाम

संरचना

6.1 परिचय

6.2 उद्देश्य

6.3 बाल विकास के आयामों की अवधारणा

6.3.1 शारीरिक विकास

6.3.1.1 शारीरिक विकास की विशेषताएं

6.3.2 संवेगात्मक विकास

6.3.2.1 संवेगात्मक विकास की विशेषताएं

6.3.3 संज्ञानात्मक विकास

6.3.3.1 संवेगात्मक विकास की विशेषताएं

6.3.3.2 पियाजे का संज्ञानात्मक विकास का सिद्धांत

6.3.4 नैतिक विकास

6.3.4.1 नैतिक विकास की विशेषताएं

6.3.4.2 पियाजे और नैतिक तार्किकता

6.3.4.3 कोलबर्ग का नैतिक विकास का सिद्धांत

6.3.4.4 गिलीगन का देखभाल की नैतिकता की अवस्था

6.3.5 मनोसामाजिक विकास

6.3.5.1 मनोसामाजिक विकास का सिद्धान्त - एरिक एरीकसन

6.4 विकास की समग्र समझ

6.5 बच्चों के विकास में सुगमकर्त्ता के रूप में अध्यापक की भूमिका

6.6 सारांश

6.7 इकाई अन्त्य अभ्यास

6.8 प्रगति जाँच के उत्तर

6.9 संदर्भ और उपयोगी सामग्री

6.1 परिचय

इकाई 5 में आपने बाल विकास के स्तरों तथा मानव विकास व वृद्धि के बारे में पढ़ा। बाल विकास के प्रमुख चरणों में शैशव अवस्था, बाल्यावस्था तथा किशोरावस्था शामिल है। प्रत्येक चरण बाल विकास के कुछ पहलुओं पर प्रकाश डालता है। हम एक बच्चे के शारीरिक, भावनात्मक, संज्ञानात्मक, सामाजिक तथा नैतिक विकास के रूप में इन पहलुओं को देख सकते हैं। विभिन्न चरणों के सापेक्ष प्रत्येक पहलू का अपना एक अलग ही महत्त्व है। उदाहरण के लिए यदि एक वर्ष का होने पर बच्चा 2 या 3 शब्द बोल लेता है तो दो वर्ष के होने पर वह 2 या 3 शब्दों को जोड़ कर बोल लेता है तथा क्रमिक रूप से 6 वर्ष तक की उम्र तक वह आसानी से बोलना प्रारम्भ कर देता है। इस प्रकार बाल विकास के पहलू को बाल विकास के विभिन्न उपलब्धि स्तरों के एक संयोजन के द्वारा अभिलक्षित किया जा

PDF Compressor Free Version

सकता है। इस इकाई में, हम बाल्यावस्था और किशोरावस्था चरणों के संदर्भ में इन मानक स्तरों के बारे में बात करेंगे। विकास के समग्रात्मक उपागम तथा सुगमकर्त्ता के रूप में अध्यापक की भूमिका को समझने का प्रयास भी हम इस इकाई में करेंगे।

6.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आप :

- बाल विकास के आयामों की अवधारणा की व्याख्या कर पायेंगे;
- बच्चे की शारीरिक, भावात्मक, संज्ञानात्मक, सामाजिक और नैतिक विकास की चर्चा कर पायेंगे;
- बाल विकास के विभिन्न आयामों को वास्तविक जीवन के उदाहरणों के साथ चित्रित कर पायेंगे;
- विकास के समग्रात्मक उपागम को समझ पायेंगे; और
- एक बच्चे के विकास में सुगमकर्त्ता के रूप में अध्यापक की भूमिका का विश्लेषण कर पायेंगे।

6.3 बाल विकास के आयामों की अवधारणा

अगर हम अपने बीते दिनों को याद करें तो हम पाते हैं कि हममें बहुत सारे परिवर्तन समय के साथ हुए हैं तथा यह एक सच्चाई है कि मानव अपने संपूर्ण जीवनकाल में लगातार वृद्धि करता है तथा बदलता है। उदाहरण के लिए रिया अभी बोलना और चलना सीख रही है जबकि उसकी किशोरी बहन शिवानी तनाव को बेहतर ढंग से किस प्रकार कम किया जाए सीख रही है। यह सब विकास से संबंधित है तथा यह विकास बहुआयामी है अर्थात् एक बच्चे के जीवन के विभिन्न पहलुओं में परिवर्तन होता है। शारीरिक, संज्ञानात्मक, भावनात्मक, नैतिक या मानसिक परिवर्तन- सभी एक ही समय में होता है। अतः ये आयाम वस्तुतः विकास के विभिन्न पहलू हैं। इस प्रकार विकास के ये आयाम मानव जीवन के वे पहलू हैं जो संपूर्ण जीवन काल में परिवर्तित होते हैं। इस अवधारणा को गहन रूप से समझने के लिए आइये शारीरिक विकास से प्रारम्भ करते हैं।

6.3.1 शारीरिक विकास

शारीरिक विकास की अवधारणा से पूर्व आइये एक प्रक्रिया की कल्पना करते हैं। एक नवजात बच्चे के बारें में सोचिए। अभी वह अपने गतिविधियों को संचालित नहीं कर पा रहा है परन्तु 18 माह के भीतर वह चल रहा होगा, अगले वर्ष में दौड़ रहा होगा तथा शीघ्र ही कूदना, फेंकना और वस्तुओं को लात मार रहा होगा। प्रथम दो वर्षों में एक बच्चा अपने जीवन के अन्य समय की अपेक्षा अधिक तेजी से शारीरिक रूप से विकास करता है। यह शारीरिक विकास, संज्ञानात्मक और भावनात्मक विकास के लिए एक महत्त्वपूर्ण आधार होता है।

शारीरिक वृद्धि और विकास एक प्रक्रिया को इंगित करता है जिसमें एक बच्चे के गर्भ से मृत्यु तक (चित्र 6.1) आंतरिक व बाह्य शारीरिक तथा शरीर क्रियात्मक परिवर्तन होता है। यहाँ पर हम इस विषय में, शिशु के शारीरिक विकास के बारे में विस्तृत चर्चा नहीं करेंगे लेकिन

PDF Compressor Free Version

यह बच्चे के विकास के लिए न केवल शारीरिक परन्तु आने वाले वर्षों में सामाजिक और भावानात्मक विकास का एक आधार बनाता है। आइये पहले बाल्यावस्था और किशोरावस्था के संदर्भ में शारीरिक विकास की विशेषताओं पर चर्चा करते है।

चित्र 6.1 : शारीरिक वृद्धि और विकास के चरण

6.3.1.1 शारीरिक विकास की विशेषताएँ

बाल्यावस्था के दौरान एक बच्चे की ऊँचाई, वजन और शरीर अनुपात में परिवर्तन होता है। यह परिवर्तन पूर्व बाल्यकाल (3-6 वर्ष) अवस्था के मुकाबले बाद के बाल्यावस्था (7-12 वर्ष) में अधिक तेजी से होता है। पैर तेजी से लम्बे होते हैं और ऊँचाई भी बढ़ जाती है। क्रमिक रूप से चाल, गति में स्थिरता और सटीकता में उन्नति भी पूर्व बाल्यावस्था के शारीरिक विकास का महत्त्वपूर्ण हिस्सा होता है जबकि बाद की अवस्था में वे शारीरिक क्रियाकलाप से थक जाते हैं परन्तु प्रतियोगी खेलों में रूचि लेने लगते हैं जिसमें कौशल की आवश्यकता होती है। बाल्यावस्था का यह चरण अब बाल विकास के उत्थान के समय में परिवर्तित होने लगता है जिसे किशोरावस्था कहा जाता है। आइये अब किशोरावस्था की विशेषताओं पर ध्यान केन्द्रित करते है।

जैसा कि हम सब जानते हैं कि किशोरावस्था (13-18 वर्ष) में कई शारीरिक परिवर्तन नजर आते हैं जैसे ऊँचाई और वजन, शारीरिक अनुपात, आवाज में परिवर्तन, गत्यात्मक गतिविधियों में वृद्धि तथा यौन परिवर्तन। लड़कों और लड़कियों दोनों में ही हारमोन्स उत्पादन होने के कारण वृद्धि तेजी से होती है। लड़कों की वृद्धि लड़कियों की अपेक्षा धीमी होती है। किशोरावस्था में सबसे महत्त्वपूर्ण शारीरिक विकास यौवनारंभ है जब वे लैंगिक रूप से परिपक्व बनते है। लड़कियाँ 11 वर्ष की उम्र के आस-पास यौवनारंभ का अनुभव करती हैं जबकि लड़कों में कुछ देर में यौवनारंभ होता है।

लड़कियों में इस अवस्था में लगातार लंबाई में वृद्धि दृष्टिगोचर होती है परन्तु पूर्व की अपेक्षा धीमी गति से होती है। प्रमुख परिवर्तन शारीरिक अनुपात में देखा जा सकता है नितम्ब की अस्थि चौड़ी हो जाती है, कलाई गोल, हाथ और पैर लम्बे और सुन्दर हो जाते हैं। आवाज मीठी और तीखी हो जाती है। द्वितीयक यौन लक्षणों के संदर्भ में लड़कियों में जननांग परिपक्व हो जाते हैं। किशोरवय लड़कियों में प्रमुख शारीरिक परिवर्तनों में स्तन में वृद्धि, जननांग के आसपास तथा कांख में बाल उगना, चाल में परिवर्तन शामिल है। इसके अतिरिक्त लड़कियों में मासिक चक्र (औसतन 12 से 16 वर्ष के मध्य) प्रारम्भ हो जाता है। शोध दर्शाता है कि शारीरिक वृद्धि व गतिविधियों में लड़कों की अपेक्षा लड़कियाँ जल्दी परिपक्व होने लगती है।

PDF Compressor Free Version

यदि हम लड़कों के किशोरावस्था में होने वाले परिवर्तनों की बात करें तो उनमें ऊँचाई तथा वजन में शीघ्रता से वृद्धि होती है (18 या 19 वर्ष तक लगातार), मांसपेशियाँ और अधिक शक्तिशाली हो जाती हैं। शारीरिक अनुपात में परिवर्तन के संबंध में ध्यान दें तो उनके कंधे सुडौल, छाती चौड़ी तथा मांसपेशियाँ विकसित होती जाती हैं। आवाज भारी हो जाती हैं। इसके अतिरिक्त लड़कों में जननांग के साइज में वृद्धि हो जाती है। लड़कों में किशोरावस्था में अन्य प्रमुख परिवर्तनों में जननांग के आस-पास बाल, कांख में बाल उगना तथा दाढ़ी, मूँछ भी उगना प्रारम्भ हो जाता है।

सोच-विचार

आपको कक्षा 8 का कक्षा अध्यापक नियुक्त किया गया जब बच्चे 13 वर्ष के होते हैं। आपको बच्चों में होने वाले शरीर क्रियात्मक परिवर्तनों, जिसका सामना बच्चे आने वाले वर्षों में करेंगे, के बारे में विद्यार्थियों को तैयार करना है। आप किन बिन्दुओं पर विद्यार्थियों से सामान्यतः बात करेंगे? क्या आप लड़के और लड़कियों से अलग-अलग बात करेंगे? यदि हाँ तो किन बिन्दुओं पर और यदि नहीं तो क्यों नहीं?

....

....

....

लड़के और लड़कियों दोनों में समान शरीर क्रियात्मक परिवर्तनों में उनके संपूर्ण आंतरिक तंत्र की वृद्धि, धड़कन की गति में वृद्धि तथा पूर्ण मस्तिष्क विकास सम्मिलित है। त्वचा तैलीय हो जाती है तथा मुंहासे और पसीना आने की समस्या उत्पन्न होती है। शीघ्र वृद्धि बेढंगापन ला सकता है तथा समन्वय में कमी का आभास दिलाता है। वे सदैव भूखा अनुभव करते हैं तथा खाने की इच्छा सदैव बनी रहती है। लड़के और लड़कियाँ दोनों में यौन इच्छा और यौन कल्पनाओं में वृद्धि हो जाती है। यद्यपि, एक बच्चे के शरीर में होने वाले परिवर्तन कुछ कारकों के द्वारा प्रभावित होते हैं जो कि अनुवांशिक या पर्यावरण संबंधी हो सकते हैं।

अपनी प्रगति जाँचें — 1

नोट: (अ) नीचे दिये गए स्थान में अपने उत्तर लिखें।

(ब) अपने उत्तर की तुलना इकाई के अंत में दिये गए उत्तरों से करें।

i) एक बच्चे के प्रारम्भिक और बाद की बाल्यावस्था में शारीरिक विकास में प्रत्यक्ष दिखाई देने वाले परिवर्तनों को उल्लेखित करें।

....

....

....

ii) उचित उदाहरण के साथ, लड़कों और लड़कियों के लैंगिक परिपक्वता में अंतर स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

PDF Compressor Free Version

6.3.2 संवेगात्मक विकास

'संवेग' को कई अलग-अलग तरह से परिभाषित किया गया है जैसे 'विद्रोह का चरण', 'साम्यावस्था का विरूपण' या 'एक उत्प्रेरक की अव्यवस्थित और औचक तीखी प्रतिक्रिया'। आधुनिक जीवन में संवेग एक गहन समझ की माँग करते हैं इसके व्यवहार, व्यक्तित्व तथा स्वास्थ्य पर व्यापक प्रभाव के कारण।

6.3.2.1 संवेगात्मक विकास की विशेषताएँ

बाल्यावस्था में बच्चे प्यार, घृणा तथा डर का अनुभव करते हैं जो लम्बे समय तक उनके मस्तिष्क में बना रहता है। संवेदनाओं और ग्रन्थियों का बनना प्रारम्भ हो जाता है। वे स्वतंत्रता, विद्रोह, शंका और लज्जा का भाव विकसित करते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो वे स्वयं को स्वीकृत करते हैं यदि वे अपने ढंग से सफल होते हैं और स्वयं को निकृष्ट मानते हैं यदि वे असफल हो जाते हैं।

किशोरवय तक पहुँचते-पहुँचते बच्चों में के संवेगात्मक व्यवहार में परिवर्तन नजर आने लगता है। किशोर बच्चे प्रायः स्वयं की पहचान बनाने के लिए संघर्ष करते हैं तथा अपने बारे में प्रश्न करते हैं। इस अवस्था में अवलोकनीय व्यावहारिक परिवर्तनों में क्रोध, स्वेच्छाचार, अवसाद, चिंता और द्वन्द्व की स्थिति सम्मिलित है। इसलिए उनका विश्वास मित्रों की ओर बढ़ जाता है तथा दूसरों की राय उन्हें महत्त्वपूर्ण लगती है। इसके अलावा फिल्मों के नायक व नायिका, प्रसिद्ध गायक आदि के प्रति विशेष लगाव देखा जा सकता है और उन्हें अन्य व्यक्तियों के प्रति यौनाकर्षित होते देखा जा सकता है।

आइये कुछ उदाहरणों के माध्यम से इस संवेगात्मक परिवर्तन को समझने का प्रयास करते हैं।

केस 1 नलिनी एक नृत्यांगना बनने के लिए कड़ी मेहनत करती है। यदि वह नृत्य के एक चरण को भी भूलती है तो वह अपने आप को स्टेज पर नृत्य प्रदर्शन के लिए तैयार नहीं मानती है। वह शत प्रतिशत नृत्य के सभी मानदंडों पर खरा उतरना चाहती है।

केस 2 सचिन 12 वर्ष का है। प्रतिदिन किसी न किसी कारण से वह महसूस करता है कि उसके विज्ञान विषय के अध्यापक उससे सही ढंग से व्यवहार नहीं करते हैं। वह अपने अध्यापक के साथ इस समस्या को लकर तनावग्रस्त रहता है। वह हर किसी से क्रोधित हो जाता है जो उसके जीवन से संबंध रखता है, जिसमें उसकी माँ और बहन भी शामिल है।

क्रियाकलाप 1

उपरोक्त वर्णित केस के आधार पर नीचे दिए गए स्थान में अपना विचार व्यक्त करें।

(अ) नलिनी के दिमाग की स्थिति क्या थी?

....

....

....

PDF Compressor Free Version

(ब) सचिन के साथ क्या समस्या है?

....

....

....

यदि एक बच्चे का भावनात्मक विकास साम्यावस्था की ओर अग्रसर रहता है तो यह विकास के एक अन्य चरण- संज्ञानात्मक विकास की ओर ले जाता है, जिसके बारे में हम अगले भाग में चर्चा करेंगे।

6.3.3 संज्ञानात्मक विकास

क्या एक बच्चे का संज्ञानात्मक विकास केवल उसकी शैक्षणिक उपलब्धियों की ओर इंगित करता हैं? क्या एक बच्चे के व्यक्तित्व के अन्य आयामों के विकास में अभिज्ञान की कोई भूमिका होती है? बच्चे का संज्ञानात्मक विकास कई अन्य विकास जैसे भाषाई, सामाजिक, नैतिक और भावानात्मक विकास का आधार बनता है। परन्तु एक प्रश्न उभरता है कि संज्ञानात्मक विकास क्या है? संज्ञानात्मक विकास में मानसिक प्रक्रिया का समावेश होता है जो कि सूचना एकत्रीकरण, सूचना व्यवस्थापन तथा सूचना प्रसंस्करण जिसमें सूचनाओं को अनुभूत करना, उसे व्यवस्थित करके समझना तथा स्मरण करना शामिल है, की समझ से संबंधित है। मानसिक प्रक्रिया वस्तुतः एक हिस्सा है जिसे अभिज्ञान से संबोधित किया जाता है। आइये पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त तथा सामान्य विशेषताओं के सापेक्ष संज्ञानात्मक विकास के इस आयाम को समझने का प्रयास करते हैं।

6.3.3.1 संज्ञानात्मक विकास की विशेषताएँ

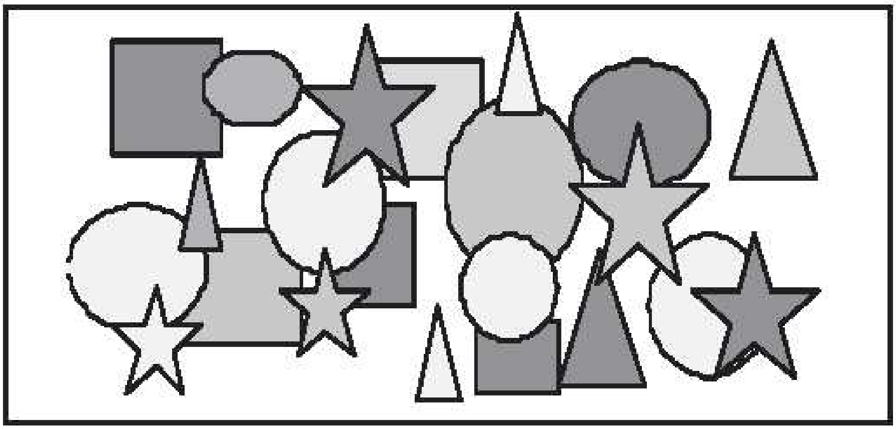

चित्र 6.2 : अलग-अलग आकार, आकृति तथा रंगों के ज्यामितीय चित्रों से भरा ट्रे

5 वर्ष की श्रेया चित्र 6.2 में दी गई वस्तुओं को उनके आकारों के आधार पर जबकि उसकी बड़ी बहन कृति, जो कि 8 वर्ष की है इन वस्तुओं को रंग, आकार तथा साइज के आधार पर वर्गीकृत कर सकती है जब उन्हें वर्गीकरण करने के लिए कहा जाता है। पूर्व बाल्यावस्था में, इस प्रकार, बच्चे वस्तुओं का वर्गीकरण करना, आकारों को कापी करना, अनुदेशन का पालन करना प्रारम्भ कर देते हैं तथा दिन, समय, मुद्रा और स्थानिक समझ की अवधारणा को समझना प्रारम्भ कर देते हैं। वे स्वयं किताबें पढ़ने के लिए उत्सुक रहते हैं। बाद के बाल्यकाल को संज्ञानात्मक विकास की सामाजिक जागरूकता तथा अमूर्त चिंतन की योग्यता में वृद्धि के रूप में देखा जा सकता है। वे अपने भविष्य के बारे में सोचना प्रारम्भ कर देते हैं तथा अपने साथियों और मीडिया से सूचना एवं ज्ञान एकत्रित करते हैं। बाल्यावस्था पूर्ण होने पर बच्चे किशोरावस्था में पदार्पण करते हैं।

PDF Compressor Free Version

जब हम किशोरावस्था के बारे में सोचते हैं तो हम प्रायः यौवनारम्भ के शारीरिक परिवर्तनों या सामाजिक-भावनात्मक परिवर्तनों पर अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं।

केस 3 हरीश एक 16 वर्षीय छात्र है जो अपने भौतिकी के अध्यापक से तर्क करता है। वह कह रहा था कि इस ब्रह्मांड की प्रत्येक चीज के पीछे कोई वैज्ञानिक कारण है। प्रत्येक उद्भव के पीछे एक वैज्ञानिक सिद्धान्त है। वह बिना किसी प्रमाण के किसी भी बात पर सहमत होने के लिए तैयार नहीं था। हरीश के अभिज्ञान का चरण क्या है? क्या वह अपनी स्वयं की राय बनाना चाहता है या केवल बहस करने के लिए तर्क कर रहा है? इस प्रकार के जवाब ढूँढने के लिए आइये पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त का अध्ययन करते हैं।

किशोरावस्था में, 13 और 16 वर्ष के मध्य, ऐसा प्रतीत होता है कि तर्क करने, अमूर्त चिंतन, निगमनात्मक तर्क और निर्णय लेने के कौशल में प्रगति हो रही है। वे विचारों और तथ्यों के मध्य भेद कर सकते हैं, भविष्य के विकास पर अपना ध्यान केन्द्रित कर सकते हैं, कुछ कल्पनाओं के साथ विकास करते हैं। जब बच्चे उत्तरोत्तर किशोरावस्था (16-18 वर्ष) में प्रवेश करते हैं तब वे अधिक अमूर्तता, संकल्पनात्मकता, चिंतनात्मकता तथा विश्लेषणात्मकता के साथ चिंतन करने की योग्यता का विकास करते हैं और इस प्रकार वे अपना स्वयं का एक मत बनाते हैं। वे प्रमाण और तर्क पर अधिक बल देते हैं। यद्यपि उनमें अधिकांश अधिगम तथा जीवन के अनुभव के मध्य कोई संबंध नहीं बना पाते हैं तथापि वे कुछ अच्छा करने के लिए लालायित रहते हैं। इस प्रकार सभी कुछ किशोरों के लिए एक विशेष महत्त्व रखता है। जीन पियाजे (1896–1980) बिने टेस्ट प्रयोगशाला में कार्य करते समय यह जानने के लिए उत्सुक हुए कि बच्चे किस प्रकार चिंतन करते हैं?

पियाजे के जीव विज्ञानी के रूप में प्राप्त प्रशिक्षण ने उनके संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त को प्रभावित किया।

6.3.3.2 पियाजे का संज्ञानात्मक विकास का सिद्धान्त

पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त के बारे में चर्चा करने से पहले निम्न तीन समस्याओं को हल करने के लिए कुछ समय दें।

1. यहाँ पर लकड़ी के आठ मनके हैं, इनमें से छः काले तथा दो सफेद हैं।

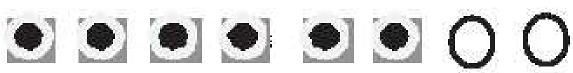

क्या अधिक काले मनके हैं या अधिक लकड़ी के मनके हैं?

2. यदि सभी बच्चे मानव हैं
और यदि सभी मानव सजीव प्राणी हैं
तो क्या सभी बच्चे सजीव प्राणी हैं?

3. यदि सभी बच्चे टेनिस बॉल हैं
और यदि सभी टेनिस बॉल चाकलेट हैं
तो क्या सभी बच्चे चाकलेट हैं?

निःसंदेह आपको प्रथम समस्या आसान लगी होगी, निश्चित रूप से काले मनकों से अधिक लकड़ी के मनके हैं। आपने दूसरी समस्या के उत्तर का अनुमान जल्दी ही लगा लिया होगा कि सभी बच्चे सजीव प्राणी हैं। तीसरी समस्या कुछ उलझन पैदा करती है यद्यपि यह दूसरी समस्या की तरह तर्क प्रस्तुत करती है इसका निष्कर्ष, कि सभी बच्चे चाकलेट हैं; हाँ वास्तव में सत्यता का विरोधाभास है। जीन पियाजे ने अपने सिद्धान्त में कई अवधारणाएं और विचार

PDF Compressor Free Version

प्रस्तुत किया जो तार्किक चिंतन में परिवर्तन की व्याख्या और वर्णन करता है जिसे उन्होंने बच्चों और किशोरों का अवलोकन करने के पश्चात् पाया।

पियाजे की चिन्तन में मूलभूत प्रवृत्तियाँ

पियाजे ने पाया कि बच्चे अपने संज्ञानात्मक दुनिया की रचना स्वयं करते हैं। वे दुनिया को समझने के लिए अपने अनुभवों को **व्यवस्थित** तथा विचारों का **समन्वय** नई सूचनाओं को शामिल करके करते हैं।

व्यवस्थीकरण एक सतत् चलने वाली प्रक्रिया है जिसमें सूचनाओं और अनुभवों को मानसिक तंत्र या श्रेणी में व्यवस्थित किया जाता है। पियाजे ने इन मानसिक अवधारणाओं को **'स्कीमा' (schemas)** कहा। **स्कीमा (schema)** एक मानसिक अवधारणा है जो कि सूचना को व्यवस्थित करने और व्याख्या करने में उपयोगी होती है। एक व्यक्ति की चिंतन प्रक्रिया जैसे-जैसे अधिक व्यवस्थित होने लगती है तथा नई स्कीम का विकास होता है वैसे ही व्यवहार भी, वातावरण के अनुकूल, बेहतर हो जाता है।

पियाजे ने पाया कि बच्चे अपने स्कीमा को दो प्रक्रियाओं के माध्यम से अपनाते हैं- **आत्मसातीकरण** तथा **समायोजन। आत्मसात** करने का अर्थ है वर्तमान स्कीमा या पूर्वज्ञान में नई सूचनाओं को शामिल करना। उदाहरण के लिए यदि बच्चा घोड़े के बारे में जानता है तथा जब वह पहली बार ऊँट को देखता है तो वह इसे एक **"घोड़ा"** कह सकता है। दूसरी ओर **समायोजन** में वर्तमान स्कीमा में परिवर्तन करना या नई सूचना के प्रत्युत्तर में नई स्कीमा की रचना करना है। बच्चे समायोजन का प्रदर्शन करते हैं जब वे जानवरों को पहचानने के लिए ऊँट की पहचान करने के **स्कीमा** को अपने अन्य तंत्र में जोड़ते हैं। इस प्रक्रिया के दौरान बच्चे दुनिया को समझने के अपने प्रयास में असंतुलन का अनुभव करते हैं। क्रमिक रूप से वे विचार के संतुलन की स्थिति में पहुँचते हैं जिसे साम्यावस्था कहा जाता है। विचार के एक अवस्था से दूसरे अवस्था में बदलने की प्रक्रिया को **संतुलन** कहा जाता है।

आइये पियाजे के द्वारा प्रस्तावित संज्ञानात्मक विकास के चार स्तरों का अध्ययन करते हैं।

संज्ञानात्मक विकास के चार स्तर

पियाजे के सिद्धान्त के अनुसार बच्चे चार प्रमुख विकासात्मक चरणों की श्रृंखला के माध्यम से प्रगति करते हैं। (अ) शैशवावस्था के सेंसरी मोटर का स्तर- इसमें इन्द्रियां और गत्यात्मक क्रियाएं सम्मिलित हैं। (ब) पूर्व बाल्यावस्था का प्रीआपरेशनल स्तर- एक बच्चे के तार्किक मानसिक आपरेशन में सिद्वहस्त होने से पहले का स्तर (स) मध्य बाल्यावस्था का मूर्त संक्रियात्मक स्तर- ठोस वस्तुओं और परिस्थितियों को मानसिक कार्यो से जोड़ना तथा (द) किशोरवय से वयस्क तक औपचारिक संक्रियात्मक स्तर- इस स्तर पर मानसिक कार्यों में अमूर्त चिंतन और कई चरों के समन्वय को सम्मिलन किया जाता है।

आइये सारणी 6.1 का अध्ययन करके चारों स्तरों की प्रमुख विशेषताओं के बारे में जानते हैं।

सारणी 6.1 : पियाजे का संज्ञानात्मक विकास का स्तर

स्तर	अनुमानित आयु	प्रमुख विशेषताएँ	विकासात्मक उपलब्धियाँ
संवेदी-पेशीय स्तर	जन्म से 2-वर्ष तक	वस्तु की स्थायित्व	बच्चे समझना प्रारम्भ कर देते हैं कि वस्तु को छुपाने से उसका अस्तित्व समाप्त नहीं होता है।

PDF Compressor Free Version

			जैसे : एक बच्चे को खिलौना दिखाकर उसे एक कपड़े के नीचे छिपाइए। बच्चा खिलौने को बाहर निकाल लेता है।
		लक्ष्य-निर्देशित क्रिया	एक वांछित लक्ष्य प्राप्त करने के लिए चैतन्यतापूर्वक क्रिया करना : संगीतमय खिलौने को छूकर आवाज निकालना।
प्री आपरेशनल	2-7 वर्ष	संकेत परक क्रिया	अर्थपूर्ण भाव व्यक्त करने के लिए भावभंगिमा, चिह्न, आवाज और शब्दों का प्रयोग करना। जैसे : अभिवादन के लिए हाथ हिलाना, अपनी पसंद की वस्तु की ओर उँगली दिखाकर बताना।
		एक दिशा में तर्क	एक दिशा में तार्किक रूप से क्रियाओं का चिंतन करने की योग्यता। जैसे : विद्यार्थी जोड़ एवं घटाने को दो अलग-अलग प्रक्रिया समझते हैं।
		संरक्षण की कमी	वे विश्वास करते हैं कि यदि एक वस्तु को पुनः व्यवस्थित या पुनः आकार दिया जाए तो मात्रा में परिवर्तन हो जाता है, यद्यपि कुछ भी जोड़ा या घटाया नहीं जाता है। जैसे : समझने में असमर्थता जाहिर करना, जब एक कागज को कई टुकड़ों में फाड़ा जाता है तो उसके मात्रा में कोई परिवर्तन नहीं होगा।
		अंहकेन्द्रिकता	अन्य व्यक्ति के दृष्टिकोण के नजरिये से किसी वस्तु को देखने में कठिनाई अनुभव करना। उन्हें लगता है कि केवल उनका दृष्टिकोण ही संभव है। जैसे : यदि एक बच्चे को कुत्ते से डर लगता है तो वह यह धारणा बना लेता है कि सभी बच्चे कुत्ते से डरते होंगे।
मूर्त संक्रियात्मक	7-11 वर्ष	उत्क्रमणीयता	वे समझते हैं कि कुछ प्रक्रियाएँ उत्क्रमणीय हो सकती हैं। जैसे : विद्यार्थी पहचानना प्रारम्भ कर देते हैं कि घटाना योग की उत्क्रमणीय प्रक्रिया है।

PDF Compressor Free Version

		संरक्षण	वे पहचानते हैं कि यदि किसी वस्तु में कुछ भी न जोड़ा जाए और न ही उसमें से कुछ निकाला जाए तो वस्तु की मात्रा समान ही रहती है भले ही वस्तु को पुनः व्यवस्थित या पुनः आकार दिया जाए जैसे : विद्यार्थी सिद्ध कर सकते हैं कि कागज की मात्रा समान ही रहेगी यदि उसे कई टुकड़ों में फाड़ दिया जाए। वे टुकड़ों को टेप द्वारा जोड़ कर समान मात्रा होने की स्थिति को सिद्ध कर देते हैं।
		वर्गीकरण	वे पहचानते हैं कि वस्तुएँ को एक ही समय में कई श्रेणियों में शामिल किया जा सकता है। उदाहरण : एक विद्यार्थी स्वीकार कर सकता है कि एक माँ, एक डॉक्टर, एक बहन और एक पत्नी हो सकती है।
		निगमनात्मक तार्किकता	दो या दो से अधिक सूचनाओं से वे तार्किक ढंग से निष्कर्ष निकालने के योग्य होते हैं। जैसे : यदि सभी बच्चे मानव हैं तथा यदि सभी मानव जीवित प्राणी हैं तो सभी बच्चे जीवित प्राणी होंगे।
औपचारिक संक्रियात्मकता	11-वयस्क	अमूर्त एवं परिकल्पित तार्किकता	अमूर्त, परिकल्पित तथा तथ्य के विपरीत आइडिया के बारे में तर्क करने की योग्यता विकसित होने लगती है। जैसे : एक विद्यार्थी ऋणात्मक संख्या की समझ रखता है तथा प्रभावकारी ढंग से इसका उपयोग गणितीय प्रक्रियाओं में करता है।
		किशोर अंहकेन्द्रिकता	वे समझने लगते हैं कि दूसरे लोगों की अनुभूति एवं विश्वास अलग हो सकते हैं। वे अपने विचार, विश्वास व अभिवृत्ति पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। जैसे : संपूर्ण कक्षा समझती है कि मेरा जवाब गलत है।

स्रोत : वुलफोक, ए. (2008). एजूकेशनल साइकोलॉजी, नई दिल्ली : पियर्सन एजूकेशन, डोर्लिंग किन्डर्सले (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, पृ. 88 से लिया गया।

PDF Compressor Free Version

उपरोक्त वर्णन के अनुसार आइये निम्नलिखित क्रियाकलापों का अवलोकन करते हैं :

क्रियाकलाप 2

चित्र 6.3

(i) चित्र भाग-1 में बच्चे से पूछा गया कि क्या दोनों गिलासों में समान मात्रा में जूस है या मात्रा अलग-अलग है? बच्चे ने जवाब दिया 'समान' है। भाग-2 में एक गिलास के जूस को एक अन्य गिलास में डाला गया। भाग-3 में प्रश्न को पुनः दुहराया गया, बच्चे ने जवाब दिया लम्बे गिलास में जूस की मात्रा अधिक है।

बच्चा संज्ञानात्मक विकास की किस अवस्था में है और क्यों?

....

....

....

....

चित्र 6.4

(ii) इनमें से कौन सी वस्तु तैरेगी और कौन सी वस्तु डूबेगी? इस कार्य को 4 से 6, 8 से 10 तथा 12 वर्ष या उससे अधिक आयु के बच्चों के साथ करें। निष्कर्ष को लिखिये तथा प्राप्त निष्कर्ष को रिपोर्ट करें। क्या आप छोटे तथा बड़े बच्चों दोनों के लिए समान निष्कर्ष प्राप्त करते हैं? यदि नहीं तो क्या आप व्याख्या कर सकते हैं क्यों?

....

....

....

....

यहाँ तक, हम लोगों ने बच्चों के विकास के प्रायः प्रत्येक आयामों का अध्ययन कर लिया है। यद्यपि, हमने जो भी अध्ययन तथा विमर्श किया वह एक विखंडित रूप में था। अब विकास के समग्र उपागम को समझने का प्रयास किया जाए जो एक व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास हेतु उत्तरदायी है।

6.3.4 नैतिक विकास

प्रत्येक दिन हम ऐसी परिस्थितियों का सामना करते हैं जहाँ सही और गलत का तर्कपूर्ण ढंग से निर्णय लेने की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए आप विद्यालय के लिए पहले से ही देर से हों तथा रास्ते में एक चौक पर आपको ट्रैफिक की लाल बत्ती का सामना करना पड़े। यदि आप समय पर विद्यालय नहीं पहुँचते हैं तो आपका आधा वेतन काट लिया जाता है। आप क्या करेंगे? ऐसी स्थितियाँ हमारे दैनिक जीवन में प्रायः घटित होती रहती हैं जहाँ हम अनुभव करते हैं कि किस हद तक हम अपने होने की अभिवृत्ति को बनाए रख सकते हैं। ऐसी स्थितियों में हमें 'नैतिकता क्या है' के बारे में अपने विचार को चुनौती देने और

PDF Compressor Free Version

विस्तारित करने की आवश्यकता होती है। वस्तुतः, नैतिक होने या नैतिकता आधारभूत रूप से सही, गलत, न्याय, समदृष्टि और आधारभूत मानव अधिकार की ओर इंगित करती है।

नैतिक विकास के अवयव या प्रश्न सामाजिक संदर्भों से उत्पन्न हुए हैं, यद्यपि पियाजे के अनुसार सामाजिक संदर्भ के प्रभाव के साथ संज्ञानात्मक विकास उपागम होता है जो नैतिक तर्क पर बल देता है। हम पियाजे और उसके नैतिक तर्कों की चर्चा इस इकाई में आगे करेंगे। पहले, बाल्यावस्था तथा किशोरावस्था में नैतिक विकास की विशेषताओं की पहचान करते हैं।

6.3.4.1 नैतिक विकास की विशेषताएँ

नैतिक विकास, व्यक्ति किस प्रकार नैतिक मुद्दों और नैतिक निर्णय लेने की समझ विकसित करते हैं, से संबंधित है। पूर्व बाल्यावस्था (4-6) में बच्चे नैतिक निर्णय लेते समय प्रायः अपने हित के बारे में सोचते हैं। वे वितरित न्याय या किसी वस्तु की बराबर साझेदारी के सापेक्ष चिंतन करते हैं। परन्तु बाल्यावस्था की मध्य अवस्था (6 से 9 वर्ष की आयु) तक नैतिक तार्किकता के लिए अधिक तदानुभूति तथा अमूर्त चिंतन का विकास करना प्रारम्भ कर देते हैं।

इसके अतिरिक्त युवा किशोर नैतिकता की पेचीदगी की समझ विकसित करने लगते हैं जैसे वे मूल्यों, सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों तथा धार्मिक शिक्षण पर प्रश्न चिन्ह लगाते हैं। इस स्तर पर व्यक्ति बदलाव की गति को लेकर अधीर होने लगता है तथा सामाजिक परिवर्तन करना कितना कठिन है ऐसा सोचते हैं। इसलिए उन्हें वयस्क रोल मॉडल के द्वारा प्रभावित करने की आवश्यकता है जो उन्हें सुने और विश्वसनीय हो। इसके अतिरिक्त वे दूसरों के बारे में बहुत जल्दी ही निर्णय ले लेते हैं तथा स्वयं की गलती को बहुत देर से स्वीकार करते हैं। इसके बावजूद वे सहानुभूति का प्रदर्शन करते हैं तथा विशेष रूप से जानवरों और पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति सरोकार रखते हैं। अब आप जानते हैं कि किशोरों का संज्ञानात्मक विकास, आंशिक रूप से, नैतिक तार्किकता, ईमानदारी और पूर्व-सामाजिक व्यवहार जैसे सहायता करना, प्रतिनिधित्व या दूसरों की देखभाल करने के लिए आधार का कार्य करता है। आइये पियाजे के नैतिक तार्किकता के सिद्धान्त के माध्यम से बच्चों में नैतिक तार्किकता के विकास में संज्ञानात्मक विकास की भूमिका की चर्चा करें।

6.3.4.2 पियाजे और नैतिक तार्किकता

पियाजे की नैतिक तार्किकता की अवधारणा को समझने से पूर्व आइये दो उदाहरणों पर विचार करते हैं।

केस 4	रजत एक युवा लड़का है। उसका छोटा भाई बहुत भूखा है परन्तु रजत के पास अपनी माँ के लिए दवाई खरीदने के पश्चात् एक भी पैसा नहीं बचा। उसका भाई भूख के कारण रोने लगता है। रजत कचौरी वाले के पास जाकर दुकानदार से अपने भूखे भाई के लिए कचौरी देने की प्रार्थना करता है। परन्तु वह रजत की बात को अस्वीकार कर देता है। अन्ततः रजत व्यग्र हो जाता है तथा दो कचौरी चुरा लेता है। वह भागकर अपने भाई को कचौरी देता है।

केस 5	शिवानी एक दुकान पर जाती है। वह वहाँ पर एक सेल्फ में सुंदर हेयर बैण्ड को लटकते हुए देखती है। वह कल्पना करती है कि यह उसके ड्रेस पर बहुत ही सुंदर दिखेगी। जब समान बेचने वाली लड़की शिवानी की ओर अपना पीठ करती है तब शिवानी हेयर बैण्ड को चुराकर तुरंत वहाँ से भाग जाती है।

PDF Compressor Free Version

क्या ये दोनों बच्चे समान रूप से अपराधी हैं? पियाजे के नैतिक तार्किकता का अध्ययन करने के पश्चात् हम इसका जवाब ढूँढने का प्रयास करेंगे। यहाँ ऐसी स्थितियों को नैतिक द्वन्द्व कहा है जो कि ऐसी समस्या है जिसमें व्यक्तिगत न्याय और तार्किक नैतिकता, जो कि हमारे अभिज्ञान पर आधारित होते हैं, की आवश्यकता होती है। इसीलिए, जीन पियाजे ने नैतिक तार्किकता का सिद्धान्त प्रस्तुत किया। उसने दो प्रकार की नैतिक तार्किकता प्रस्तुत की – 'विषमविधिक नैतिकता' और 'स्वायत्त नैतिकता' जो कि संज्ञानात्मक विकास से बहुत नजदीकी से जुड़ी हुई है।

विषमविधिक नैतिकता ऐसे नैतिक निर्णय हैं जो उन लोगों के नियमों पर आधारित होते हैं जिनके पास सर्वोच्च अधिकार होता है जैसे माता-पिता। वे बच्चे जो विषमविधिक नैतिकता का उपयोग करते हुए नैतिक मुद्दों पर तर्क करते हैं वे शायद ही क्रियाकलापों के पीछे के उद्देश्य या मन्तव्य के बारे में ध्यान देते हैं। फिर भी इस प्रकार की नैतिक तार्किकता कुछ वयस्कों में भी पायी जा सकती है।

इसके अतिरिक्त दूसरे प्रकार की **नैतिक तार्किकता** स्वायत्त नैतिकता है जो कि दूसरों के दृष्टिकोणों तथा उनके शब्दों और क्रियाओं के उद्देश्य की सराहना करने की तार्किक योग्यता से संबंध रखता है। पियाजे के अनुसार स्वायत्त नैतिकता का विकास औपचारिक संक्रिया तथा अमूर्त चिंतन की अवस्था के विकास के समान्तर होता है।

आइये, अब ऊपर दो कहानियों में वर्णित नैतिक द्वन्द्व से संबंधित प्रश्न का उत्तर ढूँढने का प्रयास करते हैं। व्यक्ति जो विषयविधिक नैतिकता से संबंधित हैं वे जवाब देंगे कि रजत, शिवानी की अपेक्षा अधिक दोषी है क्योंकि दो कचौरी की कीमत एक हेयर बैम्ड से अधिक है। जबकि स्वायत्त नैतिकता का समर्थन करने वाले व्यक्ति जवाब देंगे कि शिवानी अधिक दोषी है क्योंकि वह धोखा देने वाली है तथा रजत एक अच्छे मंतव्य के साथ अपने भाई की सहायता करना चाहता है।

अपनी प्रगति जाँचें – 2

नोटः (अ) नीचे दिये गए स्थान में अपने उत्तर लिखें।
(ब) अपने उत्तर की तुलना इकाई के अंत में दिये गए उत्तरों से करें।

i) केस 4 और 5 में प्रस्तुत विवरणों में आप क्या अंतर पाते हैं?

....

....

....

....

ii) यदि आपको उत्तर देना है कि कौन अधिक अपराधी है- रजत या शिवानी- तो आप किसका चयन करेंगे और क्यों?

....

....

....

....

PDF Compressor Free Version

इसके अलावा पियाजे के नैतिक तार्किकता के सिद्धान्त ने लारेंस कोलबर्ग को भी प्रेरित किया जिन्हें विश्वास था कि नैतिक तार्किकता संज्ञानात्मक विकास से नजदीक से जुड़ा हुआ है। आइये कोलबर्ग के नैतिक विकास के सिद्धान्त के बारे में और अधिक जानने का प्रयास करते हैं।

6.3.4.3 कोलबर्ग का नैतिक विकास का सिद्धान्त

कोलबर्ग के नैतिक विकास के सिद्धान्त के बारे में जानने से पहले आइये निम्न स्थिति पर विचार करते हैं।

> **केस 6 :** अतुल ने भौतिक विषय की परीक्षा देने के लिए तैयारी नहीं की थी। अतः उसने कुछ महत्त्वपूर्ण सूत्रों को एक कागज के टुकड़े पर लिखकर, परीक्षा शुरू होने से पहले, अपनी जेब में रख लिया। परीक्षा शुरू होने से पहले अध्यापक ने सूचित किया कि कोई भी विद्यार्थी अगर नकल करते पकड़ा गया तो वह परीक्षा में फेल कर दिया जायेगा। यद्यपि अतुल को कागज के टुकड़े में लिखे हुए सूत्रों की आवश्यकता थी इसके बावजूद वह इसका उपयोग नहीं कर सका क्योंकि अध्यापक परीक्षा के दौरान उसके डेस्क के नजदीक ही खड़े रहे।

क्या कारण था कि अतुल ने परीक्षा में नकल नहीं किया? इसी प्रकार के कई नैतिक द्वन्द्व की परिस्थितियों का वर्जन अलग-अलग अवस्था में कोलबर्ग ने अपने नैतिक विकास के सिद्धान्त में किया। लारेन्स कोलबर्ग (1927-1987) पियाजे के कार्यों से बहुत ही अधिक प्रभावित थे, विशेष रूप से उनके बच्चों का अवलोकन करना तथा साक्षात्कार करना। इसलिए उसने भी नैतिक मुद्दों पर आँकड़े एकत्रित करने के लिए बच्चों तथा किशोरों का साक्षात्कार लेने के लिए उसी प्रकार की विधि का उपयोग किया। कोलबर्ग का सिद्धान्त स्वकेन्द्रिकता से प्रारम्भ होकर दूसरों की केन्द्रिकता की ओर अग्रसर होता है।

स्व-केन्द्रिकता — **अन्य लोगों की केन्द्रिकता**

लारेन्स कोलबर्ग ने विस्तृत रूप से नैतिक तार्किकता की छः अवस्थाओं की शृंखला प्रस्तुत की है जिसे उन्होंने तीन स्तरों में वर्गीकृत किया है। उनके नैतिक विकास के तीन स्तरों में शामिल हैं-

(i) **प्री कन्वेन्शनल स्तर -** इस स्तर पर निर्णय लेने की प्रक्रिया पूर्णरूप से व्यक्ति के स्वयं की आवश्यकताओं और अनुभूति पर आधारित है। यहाँ सही और गलत मुख्यतः बाह्य परिस्थितियों (पुरस्कार और दंड) पर आधारित होते हैं। इस स्तर में प्रथम दो अवस्थाएं शामिल हैं :

अवस्था 1 : दंड-आज्ञाकारी अभिविन्यास

> मैं शायद पकड़ा जाऊँ और दंड पाऊँ
> यदि नकल किया!

इस अवस्था में (निम्नतम) आप नियम का तोड़ने से बचते हैं क्योंकि आपको दंड पाने का डर है। आप अच्छी और बुरी क्रिया को शारीरिक परिणाम के आधार पर निर्धारित करते हैं। यहाँ जो अंतःविवेक कार्य करता है वह स्व-रक्षण है।

PDF Compressor Free Version

अवस्था 2 : व्यक्तिगत पुरस्कार अभिविन्यास

उसे परीक्षा में सफल होना ही था क्योंकि उसे शायद, अच्छे अंक प्राप्त करने पर पुरस्कार मिले। तथापि, शायद उसे नकल नहीं करना चाहिए क्योंकि अध्यापक उसे फेल कर देगा।

इस अवस्था में व्यक्तिगत आवश्यकताएं सही और गलत का निर्धारण करती हैं तथा इस प्रकार अंत:विवेक चालाक प्रतीत होता है। आपका व्यवहार प्रमुख रूप से इस बात पर निर्धारित होता है कि आपको पुरस्कार में क्या मिलेगा।

(ii) **कन्वेन्शनल स्तर :** इस स्तर पर निर्णय लेने की प्रक्रिया दूसरों की सहमति, परिवार की अपेक्षाओं, पारंपरिक मूल्यों, सामाजिक कानून तथा देश के प्रति निष्ठा पर आधारित होता है। यह स्तर अवस्था 3 और 4 को शामिल करता है।

अवस्था 3 : अच्छा लड़का-अच्छी लड़की अभिविन्यास

वह केवल परीक्षा पास करना चाहता था इसके लिए वह नकल वाले कागज के टुकड़े का उपयोग कर रहा था। इसका अर्थ यह नहीं है कि उसे भौतिकी का ज्ञान नहीं था। यह सब वह परीक्षा के दबाव के कारण कर रहा था। वह केवल अपने माता-पिता की अपेक्षाओं को पूरा करना चाहता था।

यह अवस्था सामाजिक सहमति की अवस्था है। आपका व्यवहार इस बात पर निर्भर करता है कि दूसरों को क्या अच्छा लगता है और दूसरे लोगों की राय क्या है। यहाँ पर विश्वास और सम्मान का पारस्परिक संबंध बनाये रखना चाहिए यदि वह आपसे अपेक्षित सामाजिक भूमिका के अनुरूप हो। इस अवस्था में अंत:विवेक निष्ठा है।

अवस्था 4 : कानून और व्यवस्था अभिविन्यास

परीक्षा में नकल करना गलत है क्योंकि यह विद्यालय में परीक्षा के नियमों के विरूद्ध है।

आपसे अपेक्षा की जाती है कि आप कानून का सम्मान करें तथा सामाजिक व्यवस्था बनाये रखें। सामाजिक योगदान देना तथा सामाजिक कर्त्तव्यों को पूरा करना सही है। यहाँ पर अंत:विवेक अच्छा नागरिक है।

(iii) **पोस्ट - कन्वेन्शनल स्तर** : अंतिम दो अवस्थाएं (5 और 6) इस स्तर में शामिल हैं। इस स्तर पर निर्णय लेने की प्रक्रिया अमूर्त, अधिक व्यक्तिगत सिद्धान्तों, जो आवश्यक नहीं हैं कि समाज के नियमों द्वारा परिभाषित हो, पर आधारित होती है।

अवस्था 5 : सामाजिक संविदा अभिविन्यास

परीक्षा में नकल करना सही नहीं है क्योंकि यह नैतिक मूल्यों के विरूद्ध है।

यह अवस्था सामाजिक उपयोगिता और व्यक्तिगत अधिकारों की अवस्था है। आपकी निष्ठा ईमानदारी की ओर है। इस अवस्था में आप न केवल व्यक्तियों के मध्य सामाजिक संविदा के बारे में ही अवगत होते हैं अपितु दूसरों के भिन्न-भिन्न नैतिक दृष्टिकोणों से भी आप अवगत होते हैं। इस अवस्था में अंत:विवेक तर्क है।

PDF Compressor Free Version

अवस्था 6 : सार्वभौमिक नैतिक सिद्धान्त अभिविन्यास

यह नैतिकता की सबसे उच्च अवस्था है। इस अवस्था में आपको चयनित नैतिक सिद्धान्तों का अनुसरण करने का अहसास होता है। आपका चयन दूसरों के हितों पर आधारित होता है चाहे वह कोई भी हो। अतः इस अवस्था में अंतःविवेक व्यक्तिगत सत्यनिष्ठा है।

कोलबर्ग के नैतिक द्वन्द्व के सिद्धान्त को बेहतर ढंग से समझने के लिए आइये Heinz की कहानी पर विचार करते हैं जिसे उसने 'हिन्ज द्वन्द्व' शीर्षक दिया।

हिन्ज द्वन्द्व

यूरोप में एक महिला को एक प्रकार के कैन्सर से ग्रस्त पाया गया तथा वह मृत्यु के कगार पर थी। डॉक्टर की राय के अनुसार केवल एक दवाई ही उसे बचा सकती थी, जो कि एक प्रकार का रेडियम था जिसकी खोज उस शहर के एक फार्मासिस्ट ने किया था। परन्तु वह रेडियम के दाम के दस गुना कीमत की माँग कर रहा था अर्थात् $ 2000 और वह भी बहुत ही छोटी खुराक के लिए। बीमार महिला के पति, हीन्ज ने पैसे एकत्रित करने का बहुत प्रयास किया परन्तु उस राशि का केवल आधा ही एकत्रित कर पाया। वह फार्मासिस्ट से प्रार्थना करता है कि वह दवाई उसे उधार में दे दें क्योंकि सचमुच ही इस दवाई की आवश्यकता उसकी पत्नी को थी परन्तु फार्मासिस्ट ने दवाई देने से मना कर दिया। हीन्ज अत्यन्त व्यथित हुआ तथा उसने फार्मासिस्ट की दुकान तोड़कर अपनी पत्नी के लिए दवाई चुरा ली है।

कोलबर्ग की नैतिकता की सभी अवस्थाओं में हिन्ज के द्वन्द्व का अध्ययन करते हैं।

अवस्था 1 : हिन्ज को दवाई नहीं चुरानी चाहिए क्योंकि वह शायद पकड़ा जाए और दंड प्राप्त करे या हिन्ज जेल नहीं जायेगा क्योंकि वह कोई बहुत बड़ी चोरी नहीं कर रहा है तथा सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि पहले उसने इसके लिए फार्मासिस्ट से प्रार्थना किया तथा पैसे देने के लिए तैयार था।

अवस्था 2 : अपनी पत्नी का जीवन बचाकर अपने परिवार को खुशी देने के लिए हिन्ज शायद दवाई चुराए। परन्तु शायद उसे लम्बे समय तक जेल की सजा मिले जिसके लिए वह तैयार नहीं था।

अवस्था 3 : हिन्ज गलत नहीं कर रहा था। वह अपनी प्रिय पत्नी की जान बचाना चाहता था। फार्मासिस्ट मनमाने दाम माँग रहा था। उसे कठोर दंड नहीं मिलेगा क्योंकि न्यायाधीश परिस्थिति के सभी पहलुओं को ध्यान में रखकर सजा सुनाये।

अवस्था 4 : हिन्ज को दवाई नहीं चुराना था क्यों कि यह कानून के विरूद्ध है या यदि उसने दवाई चुराई थी तो उसे दंड के लिए भी तैयार रहना होगा अन्यथा यदि सभी अपने अनुसार चलने लगें तो अव्यवस्था फैलेगी।

अवस्था 5 : जीवन सम्पत्ति से अधिक महत्त्वपूर्ण है और हिन्ज को अपने पत्नी के जीवन की रक्षा करनी चाहिए चाहे इसके लिए उसे चोरी करना पड़े। नैतिक और विधिक दृष्टिकोण को मिलने दें या हिन्ज को चुराना नहीं चाहिए क्योंकि यद्यपि उसकी पत्नी बीमार थी उसका कार्य सही नहीं ठहराया जा सकता है।

अवस्था 6 : हिन्ज को दवाई चुराना चाहिए क्योंकि मानव जीवन किसी व्यक्ति के संपत्ति के अधिकार से अधिक कीमती है या हीन्ज को दवाई चुराना नहीं चाहिए क्योंकि हो सकता है किसी अन्य व्यक्ति को इस दवाई की ज्यादा जरूरत हो।

स्रोत : कोलबर्ग से लिया गया (1963, p.19)

PDF Compressor Free Version

आइये कुछ केस हल करके और अधिक अभ्यास करते हैं।

क्रियाकलाप — 3

जब पूरब की माँ काम के लिए जा रही थी तो उसने पूरब को अपने कमरे की सफाई दिन में किसी समय करने को कहा। पूरब ने जवाब दिया कि उसने पहले ही अपने मित्रों के साथ उस दिन बैडमिंटन खेलने का प्लान बना चुका है। दोपहर के आसपास पूरब और उसके दो मित्रों ने कुछ प्लान बनाया जिसमें उस शाम को उसे अपने माँ की कार की आवश्यकता थी। पूरब ने बैडमिंटन खेलने का प्लान समाप्त करके अपना कमरा पहले साफ करने का निर्णय लिया।

(i) पूरब का निर्णय किस स्तर पर था? क्यों?

....

....

....

....

(ii) आप अपने किसी विद्यार्थी पर, जो कोलबर्ग के शोध से अपरिचित हो, हीन्ज द्वन्द्व का प्रयोग कीजिए। कोलबर्ग की अवस्थाओं के अनुसार उसके जवाब की व्याख्या कीजिए।

....

....

....

....

अब आप जान गये होंगे कि क्यों कोलबर्ग और पियाजे को संज्ञानात्मक विकासात्मक विचारक कहा जाता है। यद्यपि केरोल गिलीयन जो कि हारवर्ड विश्वविद्यालय में कोलबर्ग के विद्यार्थी और सह-शोधार्थी थे, ने नैतिक विकास का एक दूसरा दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। केरोल गिलीयन का नैतिक विकास पर क्या शोध था? उसका सिद्धान्त किस प्रकार कोलबर्ग के सिद्धान्त से भिन्न था। आइये इस पर चर्चा करें।

6.3.4.4 गिलीगन का देखभाल की नैतिकता की अवस्था

केरोल गिलीगन (1982) ने नैतिक विकास की एक अलग ही शृंखला देखभाल की नैतिकता के रूप में प्रस्तुत की। उसने तर्क दिया कि कोलबर्ग की अवस्था का सिद्धान्त पुरुषों की तरफदारी करता है तथा पक्षपात पूर्ण है तथा महिलाओं में नैतिक तार्किकता किस प्रकार विकास करती है उसका प्रतिनिधित्व नहीं करता है क्योंकि उन्होंने केवल पुरुषों का अध्ययन किया। गिलीगन के अनुसार महिलाएं सही और गलत के बारे में देखभाल और संबंधों के आधार पर चिंतन करती हैं जबकि पुरुष नियमों और न्याय को ध्यान में रखकर चिंतन करने की प्रवृत्ति रखता है। उसने नैतिक तार्किकता की तीन अवस्थाएं प्रस्तुत की।

अवस्था 1 : प्री कन्वेन्शनल नैतिकता : इस अवस्था में लक्ष्य व्यक्तिगत उत्तरजीविता है। यह स्वार्थपरक से दूसरों के प्रति जिम्मेदार होने की एक संक्रमणकालीन अवस्था है। आपके लिए क्या श्रेष्ठ है यह बात ध्यान में रखकर आप कार्य करने के लिए प्रेरित होते हैं।

PDF Compressor Free Version

अवस्था 2 : कन्वेन्शनल नैतिकता : यह अवस्था कहती है कि स्व-आहुति अच्छी है। इस अवस्था में संक्रमण अच्छाई से परिस्थिति की सच्चाई की ओर होता है। दूसरों को किस प्रकार लाभ पहुँच सकता है इस बात को ध्यान में रखकर आप कार्य करने को प्रेरित होते हैं।

अवस्था 3 : पोस्ट कन्वेन्शनल नैतिकता : यह अवस्था अहिंसा के सिद्धान्त का समर्थन करती है। यह दूसरों और स्वयं को हानि न पहुँचाने का समर्थन करती है। आप महसूस करते हैं कि जितना दूसरों के हितों की अवहेलना करना गलत है उतना ही अपने हितों की अवहेलना करना भी गलत है। आप इस निर्णय पर पहुँचते हैं कि संबंध दो व्यक्तियों के बीच स्थापित होता है तथा यदि उनमें से कोई भी एक तिरस्कृत होता है तो संबंधों में दरार आ सकती है।

अपनी प्रगति जाँचें – 3

नोट: (अ) नीचे दिये गए स्थान में अपने उत्तर लिखें।
(ब) अपने उत्तर की तुलना इकाई के अंत में दिये गए उत्तरों से करें।

i) यदि आप कानून का पालन मुख्यतः दंड के डर से करते हैं, तो आप निम्न में से किस अवस्था में है।

(अ) पोस्ट-कन्वेशनल नैतिकता (ब) प्री कन्वेशनल नैतिकता

(स) कन्वेशनल नैतिकता (द) नान कन्वेशनल नैतिकता

ii) गिलीगन के अनुसार पुरुषों की तुलना में, महिलाएं नैतिक रूप से व्यवहार करने के लिए निम्न प्रेरणा का अनुसरण करने के लिए प्रवृत्त होती हैं।

(अ) न्याय के लिए सरोकार (ब) दूसरों की देखभाल और सहानुभूति

(स) क्या करना सही है के बारे में चिंतित होना

(द) इस बात का ध्यान रखना कि उनका परिवार क्या सोचेगा,

iii) गिलीगन के 'देखभाल की नैतिकता' की अवस्था महिलाओं की आवाज है क्यों?

....

....

....

....

नैतिक तार्किकता एक ऐसे व्यक्ति के रूप में हमारा विकास करती है जो अपनी व्यक्तिगत नैतिकता के साथ सामाजिक वातावरण में रहता है। यह हमें बच्चे के विकास के एक अन्य क्षेत्र में ले जाता है जो 'मनोसामाजिक विकास' कहलाता है।

6.3.5 मनोसामाजिक विकास

विकास, मनोवैज्ञानिक विकास, भावनात्मक आवश्यकताओं तथा व्यक्ति अपने वातावरण से किस प्रकार अन्तःक्रिया करता है, के मध्य एक अंतः संबंध को प्रतिबिम्बित करता है। मैं कौन हूँ? मेरा घनिष्ठ मित्र मेरे बारे में क्या सोचता है? मैं दूसरों से किस प्रकार भिन्न हूँ? क्या मैं एक बच्चा हूँ या एक वयस्क हूँ? आप जानते हैं कि इस प्रकार के प्रश्न बाल्यावस्था में नहीं

PDF Compressor Free Version

उत्पन्न होते हैं वरन् किशोरावस्था के दौरान उभरते हैं। किशोर पहचान के इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर ढूँढने के लिए व्यग्र रहते हैं। एरिक एरिकसन वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने स्वयं की पहचान की समझ बनाने में इस प्रकार के प्रश्नों की महत्ता को महसूस किया। हम एरिक एरिकसन के सिद्धान्त के बारे में अगले भाग में अध्ययन करेंगे।

6.3.5.1 मनोसामाजिक विकास का सिद्धान्त - एरिक एरिकसन

एरिक एरिकसन (1963, 1972) ने आठ मनोसामाजिक स्तरों की एक शृंखला का वर्णन किया जिसमें हमारी आजादी, पहचान और स्व-योग्यता का शायद विकास हो या बरबादी हो, इस बात पर निर्भर करता है कि किस प्रकार हम दूसरों के साथ अन्त:क्रिया करते हैं और मुद्दों का हल निकालते हैं। आप सारणी 6.2 में एरिकसन के मनोवैज्ञानिक विकास के स्तरों का अध्ययन कर सकते हैं जिसमें बाल्यावस्था और किशोरावस्था में मनोवैज्ञानिक समस्या का विस्तृत वर्णन किया गया है।

सारणी 6.2 : एरिकसन के मनोसामाजिक विकास के स्तर

स्तर	अनुमानित आयु	वर्णन
1. आधारभूत विश्वास बनाम आधारभूत अविश्वास	जन्म से 12-18 मास तक	नवजात शिशु देखमाल करने वाले से प्यार, विश्वास का संबंध बनाता है और यदि अवहेलना या शोषण किया जाता है तो अविश्वास का भाव उत्पन्न हो सकता है।
2. स्वायत्तता बनाम लज्जा/संदेह	18 मास से 3 वर्ष तक	बच्चे की ऊर्जा शारीरिक कौशलों जैसे चलना, पकड़ना, अवरोध का संचालन आदि के विकास की ओर निर्देशित होती है। बच्चा संचालन करना सीखता है परन्तु हो सकता है लज्जा या संदेह उत्पन्न हो यदि ठीक प्रकार से उसे संभाला नहीं गया।
3. पहल बनाम अपराधबोध	3 से 6 वर्ष	बच्चा लगातार अधिक निश्चयात्मक (हठधर्मी) बन जाता है तथा अधिक पहल करता है परन्तु बलपूर्वक काम करने वाला भी हो सकता है जो कि अपराधबोध की ओर ले जा सकता है।
4. श्रम बनाम हीन भावना	6 से 12 वर्ष	बच्चा नये कौशल सीखने की आवश्यकता महसूस करे अन्यथा निकृष्टता, असफलता और अयोग्यता का भाव उत्पन्न होने का खतरा होता है।
5. पहचान बनाम भूमिका की असमंजसता	किशोरावस्था	किशोरों को अपनी पहचान बनाना चाहिए अन्यथा व्यवसाय, लिंग,

PDF Compressor Free Version

		भूमिका, राजनीति और धार्मिक असमंजसता की स्थिति का सामना करना पड़ सकता है।
6. अंतरंगता बनाम निष्क्रियता	युवा वयस्कता	युवा वयस्क अंतरंग संबंध स्थापित करें या एकाकीपन के भाव से ग्रसित हो सकते हैं।
7. सक्रियता बनाम निष्क्रियता	मध्य वयस्कता	प्रत्येक वयस्क अगली पीढ़ी की सहायता और संतुष्टि के लिए अवश्य कोई रास्ता निकाले।
8. अहंनिष्ठा बनाम निराशा	पश्च वयस्कता	परमोत्कर्ष स्वयं को स्वीकार करने का भाव तथा संतुष्टि का भाव है।

स्रोत : वुलफोक, ए. (2006), एजूकेशनल साइकोलॉजी, नई दिल्ली, पियर्सन एजूकेशन, डोर्लिंग किन्डर्सले (इन्डिया) प्राइवेट लिमिटेड, पृ. 100

जब बच्चा प्राथमिक विद्यालय (6-12 वर्ष की आयु) में पहुँचता है वह शीघ्रता से यह सीख लेता है कि वयस्कों से प्रशंसा, कार्य का संपादन करके, प्राप्त की जा सकती है, जैसे लिखित कार्य, आर्ट, प्रोजेक्ट, ड्रामा आदि के माध्यम से। जब बच्चों को वस्तु बनाने या कार्य करने की स्वतंत्रता दी जाए, प्रेरित किया जाए तथा जब उनकी उपलब्धियों की प्रशंसा की जाए तो वे उद्योग का प्रदर्शन करना प्रारम्भ कर देते हैं। अतः उद्योग, कठिन मेहनत, लम्बे समय तक कार्य करने के लिए उत्प्रेरित रहने तथा मनोरंजन से पूर्ण कार्य को प्राथमिकता देने का एक पैटर्न है। परन्तु जब बच्चों को उनके प्रयासों के लिए दंड दिया जाता है या जब वे पाते हैं कि वे अपने अध्यापक और अभिभावक की अपेक्षाओं को पूरा नहीं कर सकते तो उनमें नकारात्मकता (हीन भावना) का भाव उत्पन्न हो सकता है तथा वे अपने आप को अयोग्य मान सकते हैं।

केस 7 नीरज अपने विचारों, भावों और आइडिया को कविता के माध्यम से व्यक्त करता है। जब भी वह कविता लिखता है हर बार उसके माता-पिता उसे प्रेरित करते हैं तथा हौसला बढ़ाते हैं। धीरे-धीरे उसकी लिखने की कला में निखार आता चला जाता है तथा एक दिन उसकी कविता संग्रह का प्रकाशन हो जाता है। यह उद्योग का प्रदर्शन है।

केस 8 रवि 10 वर्ष का लड़का है। वह कला में अच्छा है परन्तु पढ़ने और लिखने में उसे कठिनाई होती है। न तो उसके माता-पिता और न ही उसके अध्यापक उसकी परेशानी को समझते हैं। उसे हमेशा दंड दिया जाता है तथा एक लापरवाह लड़का कहा जाता है। इसलिए वह एक समूह में अपने आपको निकृष्ट पाता है तथा धीरे-धीरे वह चित्र बनाने की कला से दूर होता चला जाता है?।

केस 7 उद्योग का एक उदाहरण है जबकि केस 8 हीन भावना को प्रदर्शित करता है।

यद्यपि जैसे-जैसे बच्चे बाल्यावस्था से वयस्कता की ओर अग्रसर होते हैं, किशोर उन भूमिकाओं के बारे में चिंतन करते हैं जो उन्हे वयस्क दुनिया में निभाना है। शुरूआत में उन्हें अपनी भूमिका को लेकर दुविधा हो सकती है कि किस प्रकार वे समाज में खुद को स्थापित करेंगे तथा वे शायद कई प्रकार के व्यवहारों और क्रियाकलापों के साथ प्रयोग करें जैसे सह शैक्षणिक क्रियाकलापों में भाग लेना, किसी विशेष समूह के साथ जुड़ना

PDF Compressor Free Version

आदि। अंततः अधिकांश किशोर अपने लिए पहचान बना लेते हैं कि वे कौन हैं तथा उनका जीवन किस ओर अग्रसर हो रहा है। उदाहरण के लिए 15 वर्ष की रिया अपने आप को एक फैशन माडल कहती है जिसे तड़क भड़क वाला जीवन पसंद है तथा जो दूसरों की नजरों में बने रहने का एक जरिया है। वह सदैव उच्च स्तरीय कपड़े पहनने तथा विशेष सामग्री लेकर चलने पर बल देती है ताकि लोगों के मध्य उसकी छवि एक स्टाइल-स्टार की हो।

अपनी प्रगति जाँचें – 4

नोट: (अ) नीचे दिये गए स्थान में अपने उत्तर लिखें।

(ब) अपने उत्तर की तुलना इकाई के अंत में दिये गए उत्तरों से करें।

i) एरिकसन के सिद्धान्त को क्यों मनोसामाजिक दृष्टिकोण के रूप में देखा जाता है?

....

....

....

....

ii) प्राथमिक स्तर पर बच्चों तथा किशोरों के लिए एरिकसन के मनोसामाजिक विकास के क्या स्तर हैं?

....

....

....

....

अब तक, हमने बाल विकास के सभी आयामों पर चर्चा कर ली है। तथापि हमने जो कुछ पढ़ा और चर्चा किया वह अलग-अलग रूप में था। आइये हम विकास के समग्र उपागम को समझने का प्रयास करते हैं जो कि एक व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास के लिए जिम्मेदार है।

6.4 विकास की समग्र समझ

उपरोक्त भाग में आपने बाल विकास के विभिन्न आयामों के बारे में पढ़ा। परन्तु क्या आप सोचते हैं कि एक बच्चे में ये विकास अलग-अलग होते हैं। क्या होगा यदि वे एक दूसरे से अन्तःक्रिया न करें तो? यदि ऐसा होता है तो बच्चा अपने वातावरण से सौहार्दपूर्ण ढंग से संबंध स्थापित करने के योग्य नहीं होगा। बच्चा पूर्ण रूप में विकसित नहीं होगा। आइये इसे एक छोटी सी कहानी के माध्यम से समझने का प्रयास करते हैं।

केस 9 लीना 13 वर्ष की है तथा अपने विद्यालय के अंतिम वर्ष तक आल-राउन्डर थी परन्तु कुछ महीनों पूर्व उसके व्यवहार में अचानक परिवर्तन हुआ। अपने मित्रों के बहकावे में आकर वह अपनी छवि को लेकर काफी चिंतित रहने लगी। अतः उसने जिम में प्रवेश लिया और प्रतिदिन अत्यधिक अभ्यास करने लगी। वह अपने खान पान के प्रति बहुत सचेत हो गई तथा कई बार भोजन भी नहीं करती थी। शीघ्र ही उसने अपना वजन घटा लिया तथा अपने मित्रों को प्रभावित करने लगी। तथापि इस दिनचर्या ने उसके स्वास्थ्य को बहुत प्रभावित किया। उसका वजन लगातार घटने लगा तथा उसे अब भूख भी नहीं लगती थी। इसके अतिरिक्त उसने कक्षा में ध्यान

PDF Compressor Free Version

देना भी कम कर दिया और उसके विद्यालय प्रदर्शन में गिरावट आने लगी। सामाजिक जीवन महत्ता उसके लिए लगातार कम होती जा रही थी तथा वह अपने माता-पिता और मित्रों से मिलने से भी कतराने लगी। उसके माता-पिता उसके स्वास्थ्य को लेकर चिंतित हो गये। उन्होंने अपने एक पारिवारिक डॉक्टर को अपनी बेटी को दिखाने का प्लान बनाया। लीना यह सुनकर अत्यंत क्रोधित हो गई, रोने लगी तथा डॉक्टर के पास जाने के लिए मना करती रही जब तक उसके अभिभावक ने दबाव नहीं डाला। डॉक्टर ने पाया कि उसका वजन अत्यंत कम है। डॉक्टर ने उसे बाल चिकित्सक और एक खास मनोवैज्ञानिक से मिलने की सलाह दी जो कि उसके परिवार से अलगाव और अपने आप तक सीमित रहने की समस्या का हल निकाले जिसका सामना लीना और उसके अभिभावक पूर्व किशोरावस्था से ही कर रहे हैं।

उपरोक्त कहानी को पढ़ने के पश्चात् आपको स्पष्ट हो गया होगा कि बाल विकास के विभिन्न आयामों के मध्य एक अन्तः संबंध स्थापित होता है।

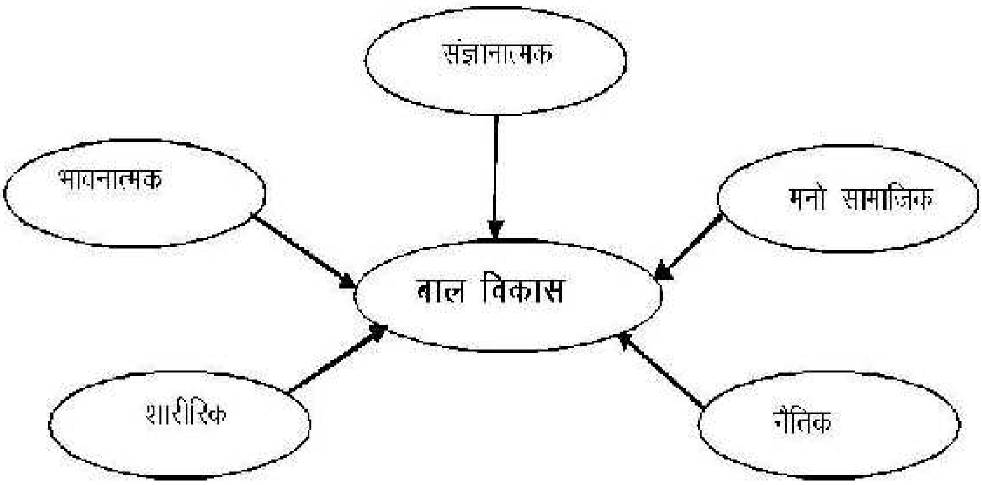

चित्र 6.5 : पूर्ण रूप में एक बच्चे का विकास

हम इस अन्तः संबंध को निम्नांकित उदाहरणों की सहायता से समझ सकते हैं :

(i) शारीरिक रूप से अस्वस्थ व्यक्ति स्वयं की जिम्मेदारियों, परिवार और समाज की जिम्मेदारियों को नहीं निभा सकता है।

(ii) भावनात्मक रूप से तनावग्रस्त बच्चा शारीरिक रूप से अस्वस्थ, सामाजिक रूप से अक्षम तथा संज्ञानात्मक रूप से पिछड़ा हो सकता है।

(iii) एक बच्चा जो कम सामाजिक अन्तःक्रिया करता है वह अकेलापन महसूस कर सकता है जो कि आगे चलकर भावनात्मक अशांति तथा संज्ञानात्मक और भाषाई कठिनाई का कारण बन सकता है।

(iv) संज्ञानात्मक विकास पर अनुचित बल देने से एक व्यक्ति के व्यक्तित्व का भावनात्मक और शारीरिक पक्ष कमजोर हो सकता है।

हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि एक व्यक्ति को पूर्ण रूप में समझा जाना चाहिए। इसलिए एक बच्चे के समग्र विकास के लिए उपागम निर्धारित करते समय यह ध्यान रखना चाहिए

PDF Compressor Free Version

कि बाल विकास के सभी आयाम अंतः संबंधित और अंतःनिर्भर हो। विकास में एक अध्यापक की क्या भूमिका हो सकती है इसके बारे में हम अगले भाग में चर्चा करेंगे।

6.5 बच्चों के विकास में सुगमकर्ता के रूप में अध्यापक की भूमिका

अविश्वसनीय रूप से एक बच्चे के जीवन को आप एक अध्यापक के रूप में सचमुच बदल सकते हैं।

पढ़ाते समय जब कभी भी आपको बच्चों की किसी विशेष शारीरिक आवश्यकताओं के बारे में जानकारी होती है तो आप उसी के अनुरूप अपने कार्यक्रम का निर्धारण करें। उदाहरण के लिए कमजोर नजर वाले बच्चे को कक्षा की पहली कतार में बैठाए, या श्यामपट पर बड़े अक्षरों में लिखना, उच्च स्तरीय श्रवण यंत्र का उपयोग करना, इत्यादि। शारीरिक वृद्धि और विकास के पैटर्न की जानकारी यदि अध्यापक को हो तो उसे सह शैक्षणिक गतिविधियों का निर्धारण करने में सहायता मिलती है। इसके अतिरिक्त, आप बच्चों को सही ढंग से बैठने, नियमित मेडिकल चेकअप, नियमित एक्सरसाइज, क्रियाकलाप करने तथा पोषक आहार लेने पर जोर दें।

एक बच्चे के संज्ञानात्मक विकास के लिए तैयारी करने में अत्यधिक सावधानी की जरूरत है। आप सुनिश्चित करें कि विद्यार्थी नये अनुभव और पूर्वज्ञान के मध्य संज्ञानात्मक संतुलन बनाये रखें। उनकी अतार्किक व्याख्या को चुनौती दें तथा उन्हें उनके तर्क, की व्याख्या करने को कहें। अमूर्त और ठोस वस्तु की परिकल्पित आइडिया और अवलोकनीय घटना में संबंध बनाए। इस प्रकार का संतुलित अभिज्ञान उन्हें भावनात्मक रूप से विकास करने में सहायता करता है।

व्यक्ति के समग्र व्यक्तित्व विकास के लिए स्थायी भाव महत्त्वपूर्ण हैं। एक अध्यापक के रूप में आपकी भूमिका अपनी कक्षा के सभी बच्चों से समान व्यवहार करना, क्रियाशील गतिविधियों की योजना बनाना, संतुलित भावनात्मक व्यवहार, विश्वसनीय वातावरण की रचना करना तथा विद्यार्थियों को दूसरों की भावनाओं की पहचान करना तथा अपने स्वयं की भावनाओं को व्यक्त करने के योग्य बनाना शामिल है।

इसके अतिरिक्त यहाँ पर मनोवैज्ञानिक व्यवहार का विकास करने में अध्यापक की भूमिका के रूप में विद्यार्थियों को समूह कार्य के माध्यम से उनमें कठिन श्रम के महत्त्व और कार्य संपादन करने की जिम्मेदारी का निर्वहन करने के लिए प्रेरित करना तथा साथ ही निकृष्ट भाव से बचने के लिए अत्यधिक प्रतियोगिता की भावना को निरूत्साहित करें विभिन्न समूहों में सामाजिक अन्तःक्रिया को बढ़ावा देना जैसे विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थी के साथ अन्य सहपाठी का समूह बनाना ताकि वे आपसी समझ बना सकें। यह उनमें नैतिक रूप से विकास करने में भी सहायक हो सकता है।

आप उचित नैतिक व्यवहार के मॉडल के द्वारा बच्चों में नैतिक विकास को बढ़ावा दे सकते हैं। आप उन कारणों के बारे में चर्चा करें कि क्यों कुछ व्यवहार अनुचित हैं। जैसे च्यूइंगम को इधर-उधर फेंकना जिसके कारण किसी के कपड़े या बाल खराब हो सकते हैं। इसके अलावा, कक्षा चर्चा के दौरान नैतिक मुद्दों और द्वन्द्वों को शामिल कर सकते हैं जैसे दो देशों के मध्य युद्ध। विद्यार्थियों को एक सकारात्मक पुनर्बलन प्रदान करने से विद्यार्थियों में नैतिक रूप से वांछित व्यवहार को बढ़ावा देने में सहायता मिल सकती है।

PDF Compressor Free Version

अपनी प्रगति जाँचें – 5

नोट : (अ) नीचे दिये गए स्थान में अपने उत्तर लिखें।

(ब) अपने उत्तर की तुलना इकाई के अंत में दिये गए उत्तरों से करें।

i) एक बच्चे को पूर्ण रूप में विकसित करना क्यों आवश्यक है?

....

....

....

....

ii) एक बच्चे में विकास करने के लिए आप क्या योजना बना सकते हैं?

....

....

....

....

इस प्रकार एक अध्यापक बच्चे के पूर्ण विकास में मदद कर सकता है। आइए हम निष्कर्ष प्रस्तुत करें।

6.6 सारांश

मानव विकास को चार अवस्थाओं शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था और वयस्कावस्था में बाँटा गया है। प्रत्येक अवस्था को शारीरिक, भावनात्मक, संज्ञानात्मक, नैतिक और मनोवैज्ञानिक विकास तथा कुछ विशिष्ट विशेषताओं के माध्यम से समझा जा सकता है। बाल्यावस्था (पूर्व बाल्यावस्था 3-6 वर्ष तथा पश्च बाल्यावस्था 7-12 वर्ष) यौवनारम्भ के आगमन तक रहती है, इन्द्रियाँ तथा पेशियाँ परिपक्व होती हैं तथा बच्चे के साइज और ताकत तथा गत्यात्मक कौशल में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन होता है जोकि यौन परिपक्वता की ओर किशोरावस्था तक बढ़ता है। बाल्यावस्था में ये बच्चे अत्यंत तीव्रता के साथ प्यार, घृणा, डर, ईर्ष्या के साथ स्वायत्तता, लज्जा, संघर्ष, निकृष्टता और व्यग्रता का अनुभव करते हैं। जबकि किशोरावस्था में भाव जैसे अशांति, तनाव तथा स्व प्रेम उत्कर्ष पर होता है। संज्ञानात्मक रूप से बच्चे सेन्सरीमोटर, प्री आपरेशनल, कांक्रीट और औपचारिक आपरेशनल अवस्था से गुजरते हैं व अन्तर्केन्द्रिकता से विकेन्द्रीकरण की ओर बढ़ते हैं तथा अंत में अमूर्त चिंतन की ओर अग्रसर होते हैं। उनका परिवेश से अनुकूल का विकास दो पूरक प्रक्रियाओं के माध्यम होता है- समायोजन और आत्मसातीकरण। संकेतपरक प्रदर्शन, संरक्षण, व्युत्क्रमशीलता, शृंखलाबद्ध वर्गीकरण तथा परिकल्पित निगमनात्मक तर्क महत्त्वपूर्ण विकासात्मक अभिज्ञान है। नैतिक रूप से बच्चा विषमविधिक नैतिकता से स्वायत्त नैतिकता की ओर अग्रसर होता है। कोलबर्ग और गिलीयन ने प्री कन्वेन्शनल तथा पोस्ट कन्वेन्शनल नैतिकता की अवस्थाओं का प्रतिपादन किया जो कि पियाजे के सिद्धान्त से अलग है। इसके अतिरिक्त व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक विकास का आठ स्तरीय सिद्धान्त एरिकसन ने प्रस्तुत किया। उन्होंने उद्योग बनाम निष्क्रियता अवस्था बाल्यावस्था के लिए तथा पहचान बनाम भूमिका असमंजसता अवस्था किशोर बच्चों के लिए प्रस्तुत किया।

PDF Compressor Free Version

उपरोक्त सभी विकासात्मक आयाम सामूहिक रूप से बच्चे को एक पूर्ण व्यक्ति रूप में विकास, एक दूसरे के बीच अन्तःक्रिया तथा अनिवार्य अन्तः संबंधों को प्रतिबिम्बित करते हुए, करता है। इन विकासों को सहज बनाने के लिए एक अध्यापक शिक्षण विधि, शिक्षण रणनीति, क्रियाकलापों और रोल मॉडल के माध्यम से महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

6.7 इकाई-अन्त्य अभ्यास

1. पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त की विभिन्न अवस्थाओं की व्याख्या करें।
2. किशोरावस्था में भावनात्मक विकास की विशेषताओं की उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।
3. कोलबर्ग और गिलीगन के नैतिक विकास के आइडिया की तुलना तथा विभेद कीजिए।
4. बच्चों के विकास को सहज बनाने में अध्यापक की भूमिका का विश्लेषण कीजिए।

6.8 प्रगति जाँच के उत्तर

1. (i) ऊँचाई, वजन, शारीरिक अनुपात, स्वास्थ्य, गति तथा अन्य शारीरिक क्रियाकलापों में सापेक्ष परिवर्तन।

   (ii) लड़कियों में स्तन में वृद्धि, जननांगों के आसपास तथा कांख में बाल उगना, नितम्ब की हड्डियों का चौड़ा होना, मासिक चक्र, चाल और आवाज में परिवर्तन।

   लड़कों में, सुडौल कंधे, चौड़ी छाती, मांसपेशियों का विकास, जननांगों के आसपास और कांख तथा चेहरे पर बाल उगना, जननांग में वृद्धि, आवाज में भारीपन।

2. (i) विषमविधिक और स्वायत्त नैतिकता के सन्दर्भ में।

3. (i) b (ii) b (iii) गिलीगन का सिद्धान्त इस तर्क पर आधारित है कि कोलबर्ग का सिद्धान्त पुरुष प्रधान है अतः उन्होंने महिलाओं के सापेक्ष अच्छे और बुरे की व्याख्या करके अपने सिद्धान्त में उन्हें जगह दिया।

4. (i) क्योंकि यह एक बच्चे के विकास के सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, व्यक्तिगत आयामों का समावेश करता है।

   (ii) सारणी 6.2 देखें।

5. (i) संपूर्ण व्यक्तित्व विकास, परिवेश के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध।

   (ii) भाग 6.9 को देखें।

6.9 संदर्भ और उपयोगी सामग्री

बैरॉन, आर. (2005). सायकोलॉजी. नई दिल्ली : पियर्सन एजूकेशन इन.

बार्स्टन, एम.ए. (1999). डेवलप्मेन्टल सायकोलॉजी : एन एड्वान्सड टेक्स्ट बुक. न्यू जर्सी : लॉरेन्स इर्लबम एसोसिएट्स, पब्लिशर्स.

PDF Compressor Free Version

चौहान, एस.एस. (2009). एड्वांस्ड एजूकेशनल सायकोलॉजी, नोएडा : विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा.लि.

क्रेन, डब्लू.सी. (1985), कोहलबर्ग्स स्टेजेज ऑफ मारेल डेवेलपमेंट, थियरीज ऑफ डेवेलपमेंट, प्रेन्टिस हॉल, http://facultyplts.edu/gpence/html/Kohlberg.htm से 05/11/2015 को लिया गया।

दाश, बी.ए. (2005). ए टेक्स्ट बुक ऑफ एजूकेशनल सायकोलॉजी. नई दिल्ली : डॉमिनेन्ट पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स.

डिवी, जे. (2011). सायकोलॉजी, नई दिल्ली : खेल साहित्य केन्द्र.

फेलमैन, आर. (2004). अंडरस्टैन्डिंग सायकोलॉजी. नई दिल्ली : टाटा माइग्रा-हिल पब्लिशिंग कंपनी लि.

कोहलबर्ग, एल. (1963), द डेवेलमेंट ऑफ चिल्ड्रेन्स ओरिएन्टेसन्स टूवर्ड्स ए मोरल आर्डर:1 सिक्वेन्स इन द डेवेलपमेंट ऑफ मोरल थॉट, विटा हुमाना 6, 11–33.

क्रसे, के., एण्ड बक्नर, एस.ए. (2007). एजूकेशनल सायकोलॉजी फॉर लर्निंग ऐण्ड टीचिंग. आस्ट्रेलिया : थमसन पब्लिकेशन.

अर्मर्ड, जे. (2000). एजूकेशनल सायकोलॉजी : डेवेलपिंग लर्नर्स. न्यू जर्सी : प्रेन्टिस-हॉल इंच. सैन्ट्रॉक, जे. (2007), एडोलेसेन्स. नई दिल्ली : टाटा मायग्राव-हिल पब्लिशिंग कंपनी लि.

सेन्ट्रक जे. (2007). एडोलेसैन्स, नई दिल्ली : टाटा माग्रव–हिल पब्लिशिंग कंपनी लि.

स्किनर, सी. (2006). एजूकेशनल सायकोलॉजी. नई दिल्ली : प्रेन्टिस हॉल ऑफ इंडिया प्रा. लि.

वुलफॉक, ए. (2006). एजूकेशनल सायकोलॉजी. नई दिल्ली : पियर्सन एजूकेशन, डॉर्लिंग किंडर्सले (इंडिया) प्रा.लि.

PDF Compressor Free Version

इकाई 7 बच्चों और किशोरों के अध्ययन की विधियाँ

संरचना

7.1 परिचय

7.2 उद्देश्य

7.3 बच्चों को समझने के लिए कक्षाकक्ष अनुसंधान

7.4 कक्षाकक्ष अनुसंधान का अर्थ एवं प्रक्रिया

7.4.1 क्रियात्मक अनुसंधान

7.4.2 केस स्टडी

7.5 अनुसंधान के उपकरण

7.5.1 अवलोकन

7.5.2 स्व रिपोर्ट

7.5.3 बच्चों के साथ अन्तःक्रिया

7.5.4 बच्चों की डायरी

7.5.5 संचयी रिकार्ड

7.5.6 उपाख्यानात्मक रिकार्ड

7.5.7 चिंतनशील पत्रिकाएँ

7.6 अनुसंधान के निहितार्थ तथा कक्षाकक्ष की सामान्य समस्याएं

7.7 सारांश

7.8 इकाई-अन्त्य अभ्यास

7.9 प्रगति जाँच के उत्तर

7.10 संदर्भ और उपयोगी सामग्री

7.1 परिचय

पिछली इकाई में आपने पढ़ा कि किस प्रकार बच्चे विकास के विभिन्न चरणों से गुजरते हुए वयस्क बनते हैं। इस प्रक्रिया में बच्चे विकास से संबंधित कई प्रकार की समस्याओं का सामना करते हैं तथा कक्षाकक्ष में व्यवहारात्मक समस्याओं को व्यक्त करते हैं। एक अध्यापक या भावी अध्यापक के रूप में बच्चों की विकासात्मक जरूरतों को समझने और हल करने के लिए आप एक समस्या हल करने वाले के रूप में होते हैं। या भावी अध्यापक के रूप में कक्षाकक्ष अनुसंधान एक लघुस्तरीय अनुसंधान है जिसे कक्षाकक्ष में बच्चों को समझने तथा कक्षाकक्ष की समस्याओं को हल करने के लिए आयोजित किया जाता है। एक अध्यापक के रूप में आपने यह जानने के लिए अपनी कक्षा में अनुसंधान किया होगा कि बच्चे शैक्षणिक रूप से, व्यावहारिक रूप से, तथा भावनात्मक रूप से किस प्रकार की समस्याओं का सामना करते हैं। तदनुसार अध्यापक बच्चों की आवश्यकतानुसार अपनी शिक्षण विधि या अपने व्यवहार में परिवर्तन कर सकता है। आपने बच्चों की विषयवस्तु को समझने, अध्यापक और सहपाठियों के साथ तालमेल बनाने में तथा विद्यालय के नियमों व नियमनों का पालन करने संबंधी समस्याओं पर अवश्य ध्यान दिया होगा। ये कारक कक्षाकक्ष अनुसंधान की अनिवार्यता को बताते है।

PDF Compressor Free Version

7.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आप :

- कक्षाकक्ष अनुसंधान के अर्थ की व्याख्या कर पायेंगे;
- केस अध्ययन और क्रियात्मक अनुसंधान के मध्य अंतर स्पष्ट कर पायेंगे;
- कक्षाकक्ष अनुसंधान के उपकरण का वर्णन कर सकेंगे;
- कक्षाकक्ष की सामान्य समस्याओं का विश्लेषण कर पायेंगे; और
- कक्षाकक्ष अनुसंधान के लिए विभिन्न उपकरणों की पहचान तथा उपयोग कर पायेंगे।

7.3 बच्चों को समझने के लिए कक्षाकक्ष अनुसंधान

निम्नलिखित केस का अध्ययन कीजिए :

> **केस 1** : रश्मि ने कक्षा viii की अध्यापिका के रूप में एक ग्रामीण क्षेत्र में स्थित सरकारी विद्यालय में अपना कार्यभार संभाला। पहले ही दिन उसने ध्यान दिया कि नवीन अन्य बच्चों की अपेक्षा अलग ढंग से व्यवहार करता है। उसका मनपसंद विषय सामाजिक अध्ययन है तथा रश्मि उससे दुरूह तथ्य प्राप्त करती है। अन्य विषयों में उसके प्राप्तांक कम होते हैं यद्यपि सामूहिक क्रियाकलाप में उसकी योग्यता उच्च स्तरीय है। नवीन सभी समूहों में जाता है और अपने मित्रों से बात करता है। कक्षाकक्ष नियमों के बारे में लगातार याद दिलाने के रश्मि के प्रयास करने के बावजूद नवीन उसी प्रकार व्यवहार करता है।

आपने अपने कक्षाकक्ष में इस प्रकार की समस्या का सामना किया होगा। नवीन की समस्या क्या है? समूह क्रियाकलाप में नवीन को व्यस्त रखना क्यों कठिन है? यदि आप नवीन के अध्यापक होते तो क्या करते? इन प्रश्नों का उत्तर अध्यापक द्वारा अपने बच्चों को समझने की आवश्यकता में सन्निहित है। हम अपने बच्चों को किस प्रकार समझते हैं। ऐसे कौन से तरीके हैं जिनके माध्यम से हम बच्चों को समझ सकते हैं? ये ऐसे प्रश्न हैं जिनका उत्तर प्राप्त करने में अनुसंधान सहायता करता है।

एक अध्यापक के रूप में हम अनुसंधान कर सकते हैं कि हमारे कक्षाकक्ष में क्या हो रहा है तथा कैसे समस्याओं का हल निकाला जाए। बच्चे को समझने के तरीके ढूंढ़ने तथा क्या घटित होता है और क्यों घटित होता है की व्याख्या करने की आवश्यकता के लिए हमें यह करने की आवश्यकता है। यहाँ अध्यापक की भूमिका और बढ़ जाती है कि जिसके बारे में लोगों को ज्ञान नहीं है उसका पता लगाए।

7.4 कक्षाकक्ष अनुसंधान का अर्थ एवं प्रक्रिया

सामान्यतः हम अनुसंधान को नए सिद्धान्तों के विकास या समस्याओं के समाधान या नई खोजों की ओर ले जाने वाले एक मुद्दे के बारे में एक सुव्यवस्थित ढंग से जानकारी प्राप्त करने के रूप में परिभाषित कर सकते हैं। इसे सुव्यवस्थित इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह एक विधि का अनुसरण करता है जिसे न्यायसंगत, वैध, ठहराया जा सकता है तथा दोहराया जा सकता है। इसे खोज इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह मुख्य समस्या के साथ प्रारम्भ होता है। आप सहमत होंगे कि कक्षाकक्ष अनुसंधान का लक्ष्य अध्यापक को स्वयं तथा बच्चों के बारे में बेहतर समझ बनाना है। कक्षाकक्ष अनुसंधान का अन्य संदर्भों में सामान्यीकरण

PDF Compressor Free Version

नहीं किया जा सकता है। लक्ष्य प्राप्त तथ्यों के व्यावहारिक महत्त्व पर केन्द्रित होता है न कि सांख्यिकीय या सैद्धान्तिक महत्त्व पर। कक्षाकक्ष अनुसंधान औपचारिक रूप से शिक्षण-अधिगम तथा कक्षाकक्ष में बच्चे किस प्रकार व्यवहार करते हैं, का अध्ययन करता है। यह मूलभूत प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास करता है।

- विद्यार्थी कितना सीख रहे हैं?
- बच्चे किस प्रकार व्यवहार करते हैं?
- अध्यापक कितने प्रभावशाली ढंग से पढ़ा रहे हैं?

जब हम कक्षाकक्ष अनुसंधान की विशेषताओं का परीक्षण करें तो निम्नांकित बिन्दुओं का ध्यान रखें :

(1) विद्यार्थी केन्द्रित : कक्षाकक्ष अनुसंधान का लक्ष्य विद्यार्थियों की आवश्यकता के अनुरूप अधिगम को सुसाध्य बनाने पर केन्द्रित है।

(2) अध्यापक-निर्देशित : अध्यापक बच्चों के कक्षाकक्ष अधिगम की आवश्यकताओं के अनुसार अनुसंधान के संबंध में निर्णय लेते हैं।

(3) सहयोगात्मक : सभी हितधारक जैसे अध्यापक, विद्यार्थी, अभिभावक तथा समुदाय अनुसंधान में भाग ले सकते हैं।

(4) संदर्भ-विशिष्ट : एक विशेष क्षेत्र में विद्यार्थियों के एक विशेष समूह जो कि अद्वितीय हों, के साथ अध्यापक अध्ययन कर सकता है तथा दूसरे कक्षाकक्ष में स्थिति भिन्न हो सकती है।

(5) अध्येता के रूप में : अध्यापक, नीतियों तथा नैतिकता का ध्यान रखते हुए, संबंधित साहित्य की समीक्षा विशेषज्ञों के साथ विचार विमर्श करने के पश्चात् एक व्यवस्थित तरीके से अनुसंधान करता है।

(6) व्यावहारिक एवं प्रासंगिक : चूँकि चयनित समस्या अध्यापक की आवश्यकता पर आधारित होती है इसलिए अध्ययन का परिणाम अध्यापक तथा उसके विद्यार्थी के लिए उपयोगी तथा प्रासंगिक होगा।

(7) सततता : कक्षाकक्ष अनुसंधान पृथक् रूप से नहीं हो सकता यह शृंखलाबद्ध खोजों की ओर ले जाता है।

सामान्यतः कक्षाकक्ष में हम दो प्रकार के कक्षाकक्ष अनुसंधान का उपयोग करते हैं। ये हैं :

(i) क्रियात्मक अनुसंधान

(ii) केस स्टडी

7.4.1 क्रियात्मक अनुसंधान

कर्ट लेविन ने 1946 में अपने पेपर **"क्रियात्मक अनुसंधान तथा अल्पमत समस्याएँ"** में **"क्रियात्मक अनुसंधान"** का पहली बार प्रयोग किया। आप कुछ अन्य शब्दों जैसे 'भागीदारी अनुसंधान', सहयोगी खोज, मुक्तिपरक अनुसंधान, क्रियात्मक अधिगम और प्रासंगिक क्रियात्मक अनुसंधान से शायद परिचित हों जो कि क्रियात्मक अनुसंधान के अन्य नाम हैं। क्रियात्मक अनुसंधान **'करके सीखना'** का एक उदाहरण है- व्यक्तियों का समूह एक समस्या की पहचान करता है, इसका हल निकालने का प्रयास करता है, देखता है उनका प्रयास कितना सफल रहा और यदि वे संतुष्ट नहीं होते हैं तो पुनः प्रयास करते हैं। यह अध्यापक को अपने कक्षाकक्ष में शिक्षण और अधिगम की जाँच करने का अवसर प्रदान करता है। हम कह सकते हैं कि क्रियात्मक अनुसंधान, व्यक्तियों द्वारा अपनी व्यावसायिक क्रिया के बारे में व्यवस्थित चिंतन, खोज तथा क्रियान्वयन की एक प्रक्रिया है।

PDF Compressor Free Version

आप जानते हैं कि क्रियात्मक अनुसंधान के कक्षाकक्ष में अनेक उपयोग हैं, जैसाकि नीचे दिया गया है :

(क) शिक्षण विधि : एक नवीन विधि का प्रयोग करना।

(ख) अधिगम युक्तियाँ : अध्यापक विद्यार्थियों की अधिगम युक्ति के बारे में जानकारी एकत्रित कर सकता है तथा शिक्षण विधि में उसी के अनुरूप सुधार कर सकता है।

(ग) मूल्यांकन प्रक्रिया : खुली पुस्तक के साथ परीक्षा का आयोजन करना।

(घ) अभिवृत्ति तथा मूल्य : रोल प्ले या ड्रामा के माध्यम से जीवन कौशल शिक्षा।

(ङ) अध्यापकों का सतत् व्यावसायिक विकास : बेहतर शिक्षण कौशल, अधिगम की नई विधि का विकास, विश्लेषण क्षमता की वृद्धि, स्व-संतुष्टि में वृद्धि।

(च) प्रबंधन और नियंत्रण : कक्षाकक्ष प्रबंधन के लिए व्यवहार सुधार की तकनीकों का क्रमिक परिचय।

(छ) प्रशासन : विभिन्न तकनीकों के माध्यम से समुदाय की भागीदारी को बेहतर बनाना।

आइये क्रियात्मक अनुसंधान के चरणों के बारे में एक उदाहरण के माध्यम से चर्चा करते हैं। निम्नलिखित केस का अध्ययन करते हैं।

केस 2 : नौवीं कक्षा की एक अध्यापिका अनीता पाती हैं कि उनके विद्यार्थी अप्रत्यक्ष प्रश्नों का उचित रूप से उत्तर लिखने में असमर्थ हैं तथा उनमें चिंतन कौशल की कमी है। वह एक शिक्षण युक्ति अपनाना चाहती हैं जो विद्यार्थियों में चिंतन कौशल का विकास करने में सहायता करे। इसको ध्यान में रखकर एक क्रियात्मक अनुसंधान का विकास निम्नलिखित तरीके से किया जा सकता है :

चरण 1 : समस्या की पहचान करना

अनीता ने अवलोकन किया कि अधिकांश बच्चे अप्रत्यक्ष प्रश्नों को उचित तरीके से हल करने में असमर्थ हैं। उसने इस समस्या की पहचान कक्षाकक्ष में अप्रत्यक्ष प्रश्न पूछते समय तथा उत्तर पुस्तिका की जाँच करते समय किया। चिंतन कौशल की कमी के रूप में समस्या की पहचान करने के पश्चात् अनीता बच्चों में चिंतन कौशल का विकास करने का निर्णय लेती है।

चरण 2 : योजना बनाना

दूसरे दिन अनीता ने "शिक्षा में जेन्डर असमानता" विषय पर शिक्षण करने का निर्णय लिया। शिक्षा में जेन्डर असमानता के बारे में प्रत्यक्ष रूप से व्याख्या न करके वह श्यामपट पर निम्नांकित आँकड़ों को लिखकर कक्षा की शुरूआत करती है।

सारणी 7.1 : भारत में 2011-12 में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के लिए जेन्डर के अनुसार 7 वर्ष की आयु और उससे अधिक आयु के व्यक्तियों में साक्षरता दर

(प्रति 1000 व्यक्ति)

व्यक्ति की श्रेणी	ग्रामीण	शहरी	ग्रामीण-शहरी
पुरुष	791	911	827
महिला	606	803	633

(स्रोत : भारत में शैक्षणिक और व्यावसायिक प्रशिक्षण की स्थिति (एनएसएस 68वाँ राउन्ड) (सितम्बर 2015), (राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण कार्यालय, सांख्यिकी एवं कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय, भारत सरकार, पृ. 27)।

PDF Compressor Free Version

अनीता : आप लोग इस सारणी को देखें। आप किस प्रकार के ट्रेन्ड देख सकते हैं? भारत में सन् 2011-12 के दौरान ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में रहने वाले 7 वर्ष तथा उससे अधिक आयु के व्यक्तियों के साक्षरता स्तर, जेन्डर के अनुसार, देख सकते हैं। मैं चाहती हूँ कि आप तीन प्रश्नों के बारे में चिंतन करें। पहला प्रश्न, आप पुरुष और महिलाओं के साक्षरता स्तर की तुलना करने पर क्या सूचना प्राप्त कर सकते हैं? दूसरा प्रश्न, महिलाओं के कम साक्षरता स्तर का क्या कारण है? तीसरा प्रश्न, इस असमानता के लिए विद्यालय आधारित कुछ कारण क्या हो सकते हैं?

चरण 3 : क्रियान्वयन प्रक्रिया का चयन

अनीता कक्षा को तीन समूहो में बाँटती है। यह करके वह बच्चों को समूह कार्य में संलग्न रखना चाहती है। प्रत्येक समूह दिये गए मुद्दे पर कार्य करना प्रारम्भ करते हैं।

चरण 4 : आँकड़ा एकत्रीकरण

क्रियात्मक अनुसंधान की इस प्रक्रिया के दौरान अनीता प्रत्येक समूह का अवलोकन करती है। वह प्रत्येक विद्यार्थी के योगदान को अपनी डायरी में नोट करती हैं तथा वह यह भी देखती है कि समूह में कुछ विद्यार्थी भाग नहीं ले रहे हैं। यदि बच्चों को जरूरत है तो विशेष सूचना उन्हें उपलब्ध कराना महत्त्वपूर्ण है।

चरण 5 : विश्लेषण

इस चरण में विभिन्न समूह के जवाबों की जाँच की जाती है। उसने ध्यान दिया कि प्रश्न संख्या 2 के लिए सभी समूह इस बात पर सहमत थे कि लड़कियों को घर का काम करना पड़ता है इसलिए उन्हें विद्यालय छोड़ना पड़ता है। जबकि कुछ समूहों ने अन्य कारण बताया जो इस प्रकार हैं -

- विद्यालय पहुँच से बाहर है।
- अपने भाई-बहनों की देखभाल करने की जिम्मेदारी।
- विद्यालय में लड़कियों के लिए अलग शौचालय का न होना।
- पढ़ाई को आवश्यक नहीं माना जाता है।

अनीता इस चरण की समाप्ति श्यामपट पर उन उत्तरों को लिखकर करती है जिनके लिए सबसे अधिक प्रामाणिक समर्थन प्राप्त हुआ।

चरण 6 : आँकड़ों का व्यवस्थीकरण एवं रिकार्डिंग

इसके पश्चात् अनीता बच्चों में चिंतन कौशल विकसित करने के अपने प्रयास के परिणाम को व्यवस्थित करके लिखने का निर्णय लेती हैं। वह अपने अनुभव को अपने सहकर्मियों के साथ बाँटती हैं तथा इस अनुसंधान के आधार पर एक पेपर प्रकाशित करने का निर्णय लेती हैं।

चरण 7 : निष्कर्ष को समाविष्ट करना

अनीता अपने कक्षाकक्ष में व्याख्यान शिक्षण विधि को बदल कर खोजी युक्ति अपनाने का निर्णय लेती हैं जिससे विद्यार्थियों के चिंतन कौशल में वृद्धि होने की संभावना है। वह उन बच्चों को भी प्रेरित करती हैं जो कक्षा में बोलने से हिचकिचाते हैं। इस प्रकार वह अनुसंधान के परिणाम को कक्षाकक्ष अभ्यास में शामिल करती हैं। इस तरह क्रियात्मक अनुसंधान अनीता को उसके कक्षाकक्ष में बच्चों को बेहतर ढंग से समझने में सहायता करता है।

PDF Compressor Free Version

चरण 8 : समीक्षा

अधिगम विधि में बदलाव करने के पश्चात् अगला कदम समीक्षा करना है। इस चरण में जो प्रश्न उभरते हैं वे हैं – मेरी नयी शिक्षण विधि कितनी सफल है? बच्चों के चिंतन कौशल को बेहतर बनाने के लिए क्या अन्य विधियों को शामिल करने की आवश्यकता है? इस अनुसंधान से क्या मैं खोज के लिए नये क्षेत्रों को ढूँढ सकता हूँ?

अपनी प्रगति जाँचें – 1

नोट: (अ) नीचे दिये गए स्थान में अपने उत्तर लिखें।
(ब) अपने उत्तर की तुलना इकाई के अंत में दिये गए उत्तरों से करें।

i) अपनी कक्षा के लिए अपने पसंद की एक विषयवस्तु पर क्रियात्मक अनुसंधान के चरणों का वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

7.4.2 केस स्टडी

केस स्टडी, एक व्यक्ति, समूह, घटना या समुदाय का एक गहन अध्ययन है। यह एक विधि है जिसके माध्यम से बहुत जटिल मुद्दों या अनुसंधान के क्षेत्र का अध्ययन प्रारम्भिक रूप से किया जाता है। एक केस स्टडी या केस हिस्ट्री विभिन्न स्रोतों से अलग-अलग तकनीकों और विधियों का उपयोग करके एकत्रित विश्वसनीय आँकड़ों से बना होता है। जैसे अस्पताल में एक मरीज की केस हिस्ट्री तैयार की जाती है। बच्चे से संबंधित सभी महत्त्वपूर्ण सूचनाएं विभिन्न स्रोतों, जैसे स्वास्थ्य, पारिवारिक पृष्ठभूमि, शैक्षणिक पहलू, रूचि, अभिवृत्ति और योग्यता, से एकत्रित की जाती हैं। अध्यापक या मार्गदर्शक परिस्थिति के अनुसार आँकड़े एकत्रित करने की विधियों का चयन करते हैं। एकत्रित सूचनाएं बच्चे की वर्तमान स्थिति, पूर्व अनुभव तथा परिवेशीय कारकों का समावेश करती हैं। यद्यपि अध्यापक या मार्गदर्शक का घटना पर शायद नियंत्रण न हो, तथापि विभिन्न कारकों का विश्लेषण हमें केस से संबंधित घटनाओं का सजीव वर्णन प्राप्त करने में सहायता करता है। यह केस से संबंधित प्रासंगिक घटनाओं की कालक्रम शृंखला उपलब्ध करता है।

एक बच्चे के केस अध्ययन का आयोजन करने में निम्नलिखित प्रक्रियाओं का अनुसरण किया जा सकता है।

(a) बच्चे के अध्ययन करने की न्यायसंगतता

केस स्टडी का उद्देश्य स्पष्ट होना चाहिए। यह एक बच्चे की कठिनाइयों का सामना करने में सहायता करने या उत्कृष्ट निष्पादन का प्रदर्शन करके दूसरों के लिए आदर्श स्थापित करने के लिए होना चाहिए।

(b) बच्चे की पहचान करना : तथ्यात्मक सूचनाओं जैसे नाम, कक्षा, आयु और पते के माध्यम से बच्चे की पहचान करना।

PDF Compressor Free Version

(c) पारिवारिक पृष्ठभूमि : माता-पिता की शैक्षणिक और व्यावसायिक जानकारी, माता-पिता बच्चे की देखभाल कैसे करते हैं, बच्चे से संबंधित अपेक्षाएं तथा अन्य प्रासंगिक सूचनाएं जैसे परिवार के सदस्यों के मध्य आपसी संबंध।

(d) स्वास्थ्य रिकार्ड : बीमारी, ऊँचाई, वजन, पोषक-स्थिति का रिकार्ड तथा शारीरिक अक्षमता और अन्य विवरण जैसे चाल या बोलने में होने वाली कठिनाई।

(e) शैक्षणिक आँकड़े : कक्षा टेस्ट, वार्षिक परीक्षा में निष्पादन, कक्षाकक्ष चर्चा में भागीदारी तथा सह-शैक्षणिक क्रियाकलाप, गृहकार्य आदि कुछ उदाहरण हैं।

(f) मनोवैज्ञानिक और सामाजिक आँकड़े : अवलोकन, असंरचित और अर्ध-संरचित साक्षात्कार के माध्यम से बच्चे के सामाजिक व्यवहार और बौद्धिक स्तर का अनुमान हम लगा सकते हैं। मनोवैज्ञानिक टेस्ट रिपोर्ट जैसे बुद्धि परीक्षण टेस्ट समाजमिति तथा योग्यता परीक्षण रिपोर्ट का भी उपयोग किया जा सकता है।

(g) अवलोकन के अन्तर्गत घटना की स्थिति निर्धारण करना।

(h) केस के संभावित पूर्ववृत्त का निर्धारण।

(i) सभी हितधारकों के लिए उचित सुधारात्मक तरीकों का सुझाव देना।

(j) एक रिपोर्ट बनाइए।

केस स्टडी रिपोर्ट में कुछ निश्चित घटक/अवयव होते हैं जैसे परिचय, विहंगावलोकन/विश्लेषण, स्थिति रिपोर्ट, केस समस्या तथा परिशिष्ट। निम्नांकित सारणी में प्रत्येक अवयव का संक्षिप्त विवरण दिया गया है।

सारणी 7.2 : एक केस स्टडी के अवयव

क्रम संख्या	घटक/अवयव	विवरण
1.	**परिचय**	न्याय संगतता या तर्क परिचय में देना चाहिए।
2.	**विहंगावलोकन/ विश्लेषण**	सभी सूचनाओं को जैसे पारिवारिक पृष्ठभूमि, शैक्षणिक आँकड़े, मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक आँकड़ों के एकत्रीकरण के पश्चात्, सभी विवरणों का विश्लेषण प्रमुख कारकों की पहचान करने तथा संबंध स्थापित करने में सहायता करता है।
3.	**स्थिति रिपोर्ट**	स्थिति रिपोर्ट बच्चे की वर्तमान स्थिति को इंगित करते हुए उसकी स्थिति का वर्णन करती है।
4.	**सुधार के लिए सुझाव**	विद्यार्थी, अध्यापक, अभिभावक, सहपाठी के लिए सुझाव दिया जाता है तथा आगे किए जाने वाले कार्यक्रम की रूपरेखा का भी समावेश किया जाता है।

PDF Compressor Free Version

5.	परिशिष्ट	केस स्टडी में जितनी आवश्यकता है उतने ही परिशिष्ट का समावेश होता है। अवलोकन, उपाख्यान, डायरी, लेख, चर्चा की रिकार्डिंग, मार्कलिस्ट, मनोवैज्ञानिक टेस्ट रिपोर्ट, सोशियोग्राम का समावेश किया जा सकता है।

एक बेहतर केस अध्ययन का आयोजन करने के लिए सुझाव -

एक अच्छे केस अध्ययन का आयोजन करने के लिए निम्नलिखित सुझावों का अनुसरण किया जा सकता है :

(a) अपनी कक्षा के एक बच्चे का चयन करना।

(b) कक्षा अध्यापक और माता-पिता से केस अध्ययन का आयोजन करने के लिए आज्ञा लेना।

(c) बच्चे के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध बनाना।

(d) कई स्रोतों से सूचना एकत्रित करना।

(e) विद्यालय में अपने मार्गदर्शक के साथ चर्चा करके सुधारात्मक कदम उठाने के लिए सुझाव देना।

ऐसी स्थितियाँ जब केस अध्ययन तैयार करने की आवश्यकता होती है-

(a) उत्कृष्ट रूप से उच्च उपलब्धियाँ या रचनात्मकता।

(b) उत्कृष्ट रूप से कला या खेलों में उच्च स्तरीय योग्यता।

(c) शारीरिक रूप से अक्षम बच्चे : शारीरिक, इन्द्रियजन्य, श्रवण संबंधी तथा अधिगम।

(d) व्यावहारिक समस्या वाले बच्चे : विद्यालय से भागना, उग्रता, चोरी करना, नशा करना।

(e) समायोजन समस्या वाले बच्चे।

(f) घर के वातावरण की समस्याओं से ग्रस्त बच्चे।

(g) एक केस स्टडी का उदाहरण नीचे दिया हुआ है :

केस 3 : एक पब्लिक विद्यालय के कक्षा viii c में जीव विज्ञान की एक अध्यापिका राधा ने पाया कि उनका एक विद्यार्थी कक्षा में अव्यवस्था फैला रहा था। उसका नाम धाज था जो शांतचित्त नहीं बैठ सकता था, वह सदैव इधर-उधर देख रहा होता था। जब कभी राधा उससे प्रश्न पूछती थी तो वह उत्तर नहीं दे पाता था। वह कक्षा में ध्यान नहीं दे पाता था। जब राधा ने उसके कक्षा अध्यापक से धाज के बारे में पूछा तो वे भी राधा के अवलोकन से सहमत थे। उसे कक्षा में ध्यानपूर्वक पढ़ने-लिखने में समस्या आ रही थी राधा ने एक केस अध्ययन के माध्यम से आगे खोज करने का निर्णय लिया। कक्षा अध्यापक से आज्ञा लेकर राधा ने उसके माता-पिता से मिलकर उनकी अनुमति लिया। तत्पश्चात् वह बच्चे के बारे में सभी विवरण उसके माता-पिता, सहपाठियों तथा अन्य अध्यापकों से एकत्रित करना प्रारम्भ किया ताकि उसके व्यवहार के कारण का पता लगाया जा सके तथा उसी के अनुसार सुधारात्मक कदम उठाने हेतु सुझाव दिया जा सके। वह उच्च मध्यमवर्गीय परिवार से संबंध रखता था। शैक्षणिक आँकड़ों को भी एकत्रित किया गया।

PDF Compressor Free Version

स्थिति रिपोर्ट

धाज शारीरिक शिक्षा में अच्छा प्रदर्शन कर रहा था तथा अन्य विषयों में प्रदर्शन बहुत ही खराब था। वह केवल खेलों में रूचि लेता था। उसे पढ़ने और लिखने में ध्यान केन्द्रित करने में परेशानी हो रही थी। वह औसत बौद्धिक स्तर वाला विद्यार्थी था। वह अतिसक्रिय और आवेगी था। वह अपने सहपाठियों के साथ सहयोग नहीं करता था।

केस समस्या

सभी सूचनाओं का विश्लेषण करने के पश्चात् राधा ने पाया कि बच्चा अधिगम अक्षमता से ग्रस्त है। वह निकृष्ट भाव से भी ग्रस्त था क्योंकि उसकी तुलना सदैव उसके भाई से की जाती थी। उपलब्धि स्तर उच्च था। माता-पिता ने कभी भी उसे प्रोत्साहित नहीं किया। प्रायः उसका मजाक उड़ाया जाता था। उसके अध्यापक ने धाज पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान देना प्रारम्भ किया तथा उसे अपने विचार अभिव्यक्त करने का अवसर दिया जिससे धाज को सक्रिय अधिगम प्रक्रिया में लाया जा सका।

क्रियाकलाप : 1

अपने कक्षाकक्ष अनुभव के आधार पर एक बच्चे की व्यावहारिक समस्या से संबंधित केस अध्ययन तैयार करें।

7.5 अनुसंधान के उपकरण

क्रियात्मक अनुसंधान समस्या-समाधान का एक समग्र उपागम है न कि आँकड़े एकत्रीकरण और विश्लेषण करने के लिए मात्र एक विधि है। इस प्रकार प्रोजेक्ट का आयोजन करते समय यह कई प्रकार के अलग-अलग अनुसंधान उपकरण का उपयोग करने की इजाजत देता है। ये विभिन्न विधियाँ जो कि प्रायः कक्षाकक्ष अनुसंधान प्रारूप के लिए समान होती हैं। इसमें अवलोकन, स्व-रिपोर्ट, बच्चों के साथ अन्तःक्रिया, बच्चों की डायरी, संचित रिकार्ड, उपाख्यान रिकार्ड और विमर्शी जर्नल शामिल हैं।

7.5.1 अवलोकन

अवलोकन प्रत्यक्ष रूप से कक्षाकक्ष घटना या व्यवहार को देखकर विद्यार्थी के व्यवहार का मापन करने की एक विधि है। यह बच्चों के प्राकृतिक स्थिति के अवलोकन द्वारा प्राथमिक सूचना को एकत्र करने की प्रक्रिया है। सामान्यतः इस प्रक्रिया से एकत्रित आँकड़े कक्षाकक्ष में घटित होने वाले विशिष्ट व्यवहार या विभिन्न व्यवहार की आवृत्ति पर केन्द्रित होते हैं तथा उसकी समयावधि का मापन करते हैं। कक्षाकक्ष अवलोकन कक्षाकक्ष अनुसंधान के लिए तथा कक्षाकक्ष निष्पादन मूल्यनिरूपण के लिए एक विधि के रूप में विस्तृत रूप से उपयोग किया जाता है।

अनुसंधान तकनीक या विधि के रूप में अवलोकन कई विशेषताओं की ओर इंगित करता है।

(अ) प्रमाणों का एकत्रीकरण।

(ब) प्रमाणों का विश्लेषण एवं परीक्षण।

PDF Compressor Free Version

(स) प्रमाण तथा परवर्ती निहितार्थ जैसे स्वीकृत मान्यताओं में बदलाव और सुधार के आधार पर महत्त्वपूर्ण निर्णय लेना।

अवलोकन के प्रकार

एक कक्षाकक्ष में कई प्रकार के अवलोकन का उपयोग किया जा सकता है। सामान्यतः अवलोकन को हम तीन प्रकार से विभाजित कर सकते हैं।

(i) नियंत्रित (ii) प्राकृतिक (iii) प्रतिभागी अवलोकन

नियंत्रित अवलोकन : इस प्रकार के अवलोकन में आप पहले से ही यह योजना बनाते हैं कि अवलोकन कब, कहाँ करना है तथा प्रतिभागियों के समूह, जिन पर अवलोकन अनुसंधान करना है, की पहचान कर लेते हैं। आप प्रतिभागियों का अवलोकन करने के लिए एक मानक प्रक्रिया का उपयोग कर सकते हैं। अवलोकित व्यवहार को व्यवस्थित रूप से विशिष्ट श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता है। व्यवहार की तीव्रता का मापन करने के लिए स्केल का उपयोग किया जा सकता है तथा विशेषताओं का वर्णन करने के लिए अक्षर या संख्या का उपयोग करके कोडिंग किया जा सकता है। उदाहरण के लिए यदि आप खेल के मैदान में लड़के एवं लड़कियों के व्यवहार के पैटर्न का अवलोकन करना चाहते हैं तब अनुसंधानकर्त्ता शायद ध्यान दें कि लड़कियों की तुलना में लड़के शारीरिक गतिविधि से संबंधित खतरनाक व्यवहार में अधिक संलग्न होते हैं। इसका कारण ढूँढने के लिए आपको कुछ निश्चित अवलोकन करना होगा तथा उनका वर्गीकरण करना होगा। खेल के मैदान में लड़कों की संख्या अधिक होने के कारण यह देखा जा सकता है कि लड़के अधिक खतरनाक व्यवहार में संलग्न हो रहे हैं। अवलोकन किया जा सकता है कि वास्तव में दो या तीन व्यक्ति ही खतरों से भरा व्यवहार करने वाले उपस्थित हैं तथा अन्य सामान्य रूप से नियमों का पालन कर रहे हैं। लड़कों की संख्या की गिनती करने के अतिरिक्त आपको क्रियाकलाप संलग्न व्यक्तियों का भी रिकार्ड रखना है। इस उदाहरण में, आप व्यक्तियों के व्यवहार के साथ घटित हुई घटनाओं की संख्या का भी रिकार्ड रखेंगे।

प्राकृतिक अवलोकन : इस प्रकार के अवलोकन में घटनाओं की रिकार्डिंग और वर्गीकरण के लिए आप व्यवस्थित नियमों के एक सेट का उपयोग कर सकते हैं। अवलोकन जहाँ तक संभव हो सके वस्तुनिष्ठ होना चाहिए तथा प्रक्रिया में अवलोकन कर्त्ता का निम्नतम हस्तक्षेप होना चाहिए। परिणाम को सांख्यिक रूप में व्यक्त करना चाहिए। उदाहरण के लिए आप किशोरों के खतरों से भरे क्रियाकलाप में संलग्नता का अध्ययन करना चाहते हैं जैसे– पर्वतारोहण, रॉक क्लाइम्बिंग, बंजी जम्पिंग और रिवर राफ्टिंग आदि क्रियाकलापों में संलग्न करना। तब आप किशोरों का अवलोकन करेंगे तथा प्रत्येक स्थिति (क्रियाकलाप) में खतरे लेने वाली घटना का रिकार्ड रखेंगे।

प्रतिभागी अवलोकन : इस प्रकार के अवलोकन में प्रतिभागी और अवलोकनकर्त्ता के मध्य प्रत्यक्ष संबंध होता है। इस प्रकार के अवलोकन के लिए विभिन्न प्रकार के टूल जैसे चेकलिस्ट, रेटिंगस्केल फील्ड नोट तथा दृश्य-श्रव्य रिकार्डिंग का उपयोग किया जा सकता है। उदाहरण के लिए आप माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के मनपसंद विषयों का अध्ययन करना चाहते हैं। इसके लिए आप कक्षा अवलोकन करेंगे तथा एक विशेष विषय में सक्रिय रूप से भाग लेने वाले बच्चों का रिकार्ड रखेंगे। बच्चों के शैक्षणिक निष्पादन के आधार पर आप अपने विद्यार्थियों के चयन के बारे में जान पायेंगे तथा ऐसी युक्तियों को अपनायेंगे जिससे वे अन्य विषयों में रूचि लें तथा उनका समग्र निष्पादन बेहतर हो सके।

PDF Compressor Free Version

अपनी प्रगति जाँचें – 2

नोटः (अ) नीचे दिये गए स्थान में अपने उत्तर लिखें।
(ब) अपने उत्तर की तुलना इकाई के अंत में दिये गए उत्तरों से करें।

मान लिजिए आप कक्षाकक्ष अधिगम में विद्यार्थियों की भागीदारी का अवलोकन करना चाहते हैं। आप किस आधार पर अवलोकन करेंगे? कक्षाकक्ष में विद्यार्थियों की भागीदारी का अवलोकन करने के लिए मापदंड निर्धारित कीजिए।

....

....

....

....

....

....

7.5.2 स्व-रिपोर्ट

आँकड़े एकत्रित करने की एक और विधि स्व-रिपोर्ट है। इसमें आप स्वयं के बारे में विभिन्न मुद्दे जैसे व्यक्तित्व, मूड, विचार, अभिवृत्ति, रूचि और व्यवहार संबंधी प्रश्नों का उत्तर देते हैं। स्व-रिपोर्ट ऐसी विधि है जिसमें किसी प्रतिभागी से उसकी भावनाओं, अभिवृत्ति, विश्वास आदि से संबंधित प्रश्न पूछे जाते हैं। वास्तव में सामाजिक विज्ञान का अधिकांश ज्ञान और सिद्धांत स्व-रिपोर्ट आँकड़ों पर आधारित है। स्व-रिपोर्ट अनुसंधान में सैम्पल के सभी सदस्यों से मानकीकृत परिमाणात्मक रूप से सूचना एकत्रित करने की आवश्यकता होती है। सभी अनुसंधान प्रतिभागियों से, तुलनात्मक आँकड़े प्राप्त करने के लिए, वही प्रश्न पूछा जाना चाहिए। स्व-रिपोर्ट उपागम में व्यक्ति को अपने बारे में प्रश्नों या वक्तव्यों की शृंखला का उत्तर देना होता है। उदाहरण के लिए एक स्थानीय विद्यालय के बारे में सर्वे में आप उत्तरदाता से प्रश्न जैसे क्या आप मानते हैं कि हमारे समाज में शिक्षा की कीमत बहुत उच्च है? उत्तरदाता अपना विचार 'हाँ', 'अनिश्चित' या 'नहीं' पर चिन्ह लगाकर स्व-रिपोर्ट देंगे।

स्व-रिपोर्ट का सबसे प्रचलित रूप साक्षात्कार तथा प्रश्नावली है।

प्रश्नावली

प्रश्नावली स्व-रिपोर्ट का एक रूप है जो लिखित रूप से प्रश्नों का एक उच्चस्तरीय संरचित सेट होता है। इसका उपयोग तब किया जाता है जब उत्तरदाता से तथ्यात्मक उत्तर की आवश्यकता होती है। परीक्षार्थी को प्रश्नावली में कई प्रश्न दिए जाते हैं तथा वह उनका उत्तर अपने इच्छानुसार देते हैं। अगले अनुच्छेद में हम विभिन्न प्रकार की प्रश्नावलियों के बारे में चर्चा करेंगे।

प्रश्नावली के प्रकार

परिमितोत्तर प्रश्न : इस प्रकार की प्रश्नावली ऐसे प्रश्नों से बनी होती है जिसके विकल्प उत्तरों की संख्या निश्चित होती है। उत्तरदाताओं को दिए गए विकल्पों की जाँच करके उनके अनुसार उचित विकल्प का चयन करने को कहा जाता है। इस प्रकार की प्रश्नावली

PDF Compressor Free Version

का उत्तर हाँ/नहीं/सहमत/असहमत के रूप में हो सकता है। उदाहरणार्थ "राजनीति एक खेल है जिसे कोई भी खेल सकता है।" "सहमत/असहमत" दूसरी और यह उत्तरदाता को वर्गों की कोई टिप्पणी, योग्यता तथा व्याख्या करने की आज्ञा नहीं देता है।

मुक्त प्रश्नावली

मुक्त प्रश्न वे प्रश्न हैं जिनमें उत्तरदाता से अपेक्षा की जाती है वह अपना उत्तर स्वयं उपलब्ध कराएँ तथा गुणात्मक आँकड़ें उपलब्ध कराएँ। इस प्रकार की प्रश्नावली उन प्रश्नों से बनी होती है जिसमें उत्तरदाता को मुक्त रूप से उत्तर देने की आवश्यकता होती है। अधिकतम शब्दों की संख्या निर्धारित की जा सकती है। उदाहरण के लिए "शिक्षा में गिरावट के दो कारण दीजिए।" मुक्त प्रश्न उपयोगी होता है जहाँ संभावित उत्तर अज्ञात होता है या प्रश्नावली अन्वेषणात्मक हो। मुक्त प्रश्नावली उत्तरदाताओं को उनके इच्छानुसार उत्तर देने के योग्य बनाता है तथा पेचीदा मुद्दों, जिनका सरल उत्तर उपलब्ध नहीं कराया जा सकता, की जाँच के लिए विशेष रूप से उपयुक्त है। यद्यपि इस प्रकार के प्रश्नों का विश्लेषण करना अधिक कठिन होता है लेकिन यह वर्गों के द्वारा उत्तर सीमित न करके उत्तर दाता वास्तव में क्या सोचते हैं का गहन उत्तर उपलब्ध कराता है।

साक्षात्कार

चित्र 7.1 : एक साक्षात्कारकर्त्ता एवं एक साक्षात्कार अभ्यर्थी के मध्य वार्तालाप

आप जानते हैं कि साक्षात्कार दो व्यक्तियों-साक्षात्कार देने वाले तथा साक्षात्कार लेने वाले के मध्य आमने-सामने बातचीत करना है। साक्षात्कार संरचित हो सकता है। जहाँ पूर्व निर्धारित प्रश्नों का सेट हो या असंरचित हो, जहाँ प्रश्नों का निर्धारण पूर्व में नहीं किया गया होता है।

कई प्रकार के साक्षात्कार होते हैं। आगे हम तीन प्रकार के साक्षात्कार के बारे में चर्चा करेंगे।

(i) संरचित साक्षात्कार (ii) अर्ध संरचित साक्षात्कार (iii) असंरचित साक्षात्कार

संरचित साक्षात्कार : इसमें साक्षात्कार लेने वाला व्यक्ति पूर्व निर्धारित कार्यक्रम का सख्ती से पालन करता है तथा उपलब्ध कराए गये प्रश्नों को क्रम के अनुसार प्रश्न पूछता है। साक्षात्कार देने वाले व्यक्ति का उत्तर साक्षात्कार लेने वाले व्यक्ति के प्रश्न की प्रकृति को प्रभावित नहीं करता है।

संरचित साक्षात्कार की विशेषताएँ

- प्रत्येक उत्तरदाता से साक्षात्कारकर्त्ता प्रश्नों के समान शृंखला से प्रश्न पूछता है।
- साक्षात्कार से पहले प्रश्नों की रचना की जाती है।
- प्रायः अधिक परिमितोत्तर प्रश्नों का समावेश किया जाता है।
- चूँकि एक प्रकार के प्रश्नों की पुनरावृत्ति की जाती है अतः एक साक्षात्कार से दूसरे साक्षात्कार में अनुरूपता बनी रहती है।
- साक्षात्कार में साक्षात्कारकर्त्ता अपना विचार कभी नहीं देता है।

PDF Compressor Free Version

अर्ध-संरचित साक्षात्कार

अर्ध-संरचित साक्षात्कार में साक्षात्कारकर्त्ता के पास विषयों की एक सूची होती है जिस पर चर्चा की जाती है। साक्षात्कारकर्त्ता प्रश्न पूछता है तथा उपलब्ध कराए गए उत्तर के आधार पर सूची को बदल सकता है या उसे हटा सकता है। यहाँ लक्ष्य क्रम का अनुसरण करना है परन्तु उत्तर के आधार पर क्रियान्वीकरण प्रक्रिया में परिवर्तन किया जा सकता है।

अर्ध-संरचित साक्षात्कार की विशेषताएँ

- संरचित साक्षात्कार की तरह प्रश्नों की सूची के अनुरूप साक्षात्कार आयोजित किया जाता है परन्तु साक्षात्कारकर्त्ता स्थिति के अनुसार प्रश्न जोड़ सकता है या हटा सकता है।
- स्थिति के अनुसार कार्य करने के लिए साक्षात्कारकर्त्ता की जिम्मेदारी बढ़ जाती है।

असंरचित साक्षात्कार

असंरचित साक्षात्कार का आयोजन तब किया जात है जब अनुसंधानकर्त्ता के पास उसके विषय में गहन और व्यापक अनुभव व समझ हो तथा चर्चा के लिए स्पष्ट रूप से कार्य सूची का निर्धारण किया गया हो जो उत्तरदाता के पुनरीक्षण के लिए खुली हो।

असंरचित साक्षात्कार की विशेषताएँ

- साक्षात्कार का स्वरूप एक चर्चा के रूप में होगा जिसमें साक्षात्कारकर्त्ता सरल प्रश्न पूछ कर एक सहज माहौल तैयार कर सकता है तत्पश्चात् कार्य सूची के अनुसार साक्षात्कार आगे बढ़ाए।
- उद्देश्य के अनुसार साक्षात्कारकर्त्ता चर्चा को दिशा प्रदान करता है।
- इस प्रकार के साक्षात्कारों में मुक्त प्रश्न पूछा जाता है तथा साक्षात्कारकर्त्ता के पास उत्तरदाता के जवाब पर बहुत कम नियंत्रण रह सकता है।

स्व रिपोर्ट के लाभ

स्व रिपोर्ट के निम्न लाभ हैं :

(1) उत्तरदाता अपने स्वयं के अनुभव का वर्णन करता है।

(2) अनुसंधानकर्त्ता बहुत बड़े सैम्पल से कम कीमत पर आँकड़े एकत्रित कर सकता है।

(3) अनुसंधानकर्त्ता अचरों की बहुत बड़ी संख्या का समावेश कर सकता है।

स्व रिपोर्ट की हानियाँ

स्व-रिपोर्ट विधि की हानियाँ इस प्रकार हैं :

(1) सहभागी सहयोग नहीं करते और दिग्भ्रमित कर सकते हैं।

(2) सहभागी ईमानदार नहीं हो सकते हैं।

(3) भाषायी समस्या के कारण प्रश्नों को सही ढंग से नहीं समझा जा सकता है।

(4) भेजी गई प्रश्नावली का जवाब देने की दर अत्यधिक निम्न है।

(5) जवाब देने वाले को एक विशिष्ट उत्तर देने के लिए प्रश्न निर्देशित कर सकता है।

PDF Compressor Free Version

अपनी प्रगति जाँचें – 3

नोट: (अ) नीचे दिये गए स्थान में अपने उत्तर लिखें।

(ब) अपने उत्तर की तुलना इकाई के अंत में दिये गए उत्तरों से करें।

i) प्रश्नावली एवं साक्षात्कार के मध्य अंतर बताएं।

....

....

....

....

क्रियाकलाप - 2

क्या आपने अध्ययन या नौकरी के लिए कभी कोई साक्षात्कार दिया है? यह किस प्रकार के साक्षात्कार की श्रेणी में आता है और क्यों? कारण बतायें।

7.5.3 बच्चों के साथ अंतःक्रिया

जब हम देखते है कि शिक्षक प्रतिदिन वास्तव में क्या करते है जो यह बच्चों के जीवन में एक भिन्नता लाता है तब यहाँ स्पष्ट साक्ष्य है कि यह दैनिक अंतःक्रिया ही है जो शिक्षक बच्चों के साथ करते हैं जो सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। यह शिक्षक एवं अधिगमकर्त्ताओं के मध्य हो सकता है या स्वयं अधिगमकर्त्ताओं के बीच या तो सामूहिक रूप से या व्यक्तिगत। आप जानते हैं कि एक कक्षाकक्ष में अंतःक्रिया शिक्षक एवं अधिगम के साथ-साथ अधिगमकर्त्ता एवं अधिगमकर्त्ता के बीच होता है। अधिगमकर्त्ता पाठ से अधिक ज्ञान प्राप्त करेंगे जब वे अपने अधिगम में सक्रियता से भाग लेते हैं या शिक्षक जब उन्हें अधिगम गतिविधियों में भागीदार बनाता है। इसे शिक्षक-अधिगमकर्त्ता अंतःक्रिया कहा जाता है।

प्रभावी शिक्षक-शिक्षार्थी-अंतःक्रिया सृजित करता है :

संवेदनात्मक समर्थन मुश्किलों में बच्चों को समझना और उनका समर्थन सुनिश्चित करना।

कक्षाकक्ष संगठन कक्षा की गतिविधियों में पृथक रहने वाले बच्चों को सम्मिलित करना।

निर्देशात्मक समर्थन उपचारी कक्षायें या सहपाठी शिक्षण की व्यवस्था करना।

अपनी प्रगति जाँचें – 4

नोट: (अ) नीचे दिये गए स्थान में अपने उत्तर लिखें।

(ब) अपने उत्तर की तुलना इकाई के अंत में दिये गए उत्तरों से करें।

एक कक्षाकक्ष अंतःक्रिया का अवलोकन करें। वर्णन करें कि आपने क्या अवलोकन किया। यह किस प्रकार के प्रभावी शिक्षक-शिक्षार्थी अंतःक्रिया की श्रेणी में आता है और क्यों?

....

....

....

PDF Compressor Free Version

7.5.4 बच्चों की डायरी

बच्चों को अपनी व्यक्तिगत स्मृति के लिए अनुभव प्रदान करने के लिए दैनिक जीवन के बारे में लिखने को प्रोत्साहित किया जा सकता है। ये डायरियाँ बहुत व्यक्तिगत होती हैं फिर भी कुछ बाद में प्रकाशित हो जाती हैं। निःसंदेह कोई भी रूप हो एक डायरी दैनिक जीवन के कार्यों और अनुभवों को सुरक्षित रखने का एक सार्थक तरीका है।

डेटा संग्रहण की अन्य विधियों की अपेक्षा इन डायरियों के बहुत से फायदे हैं। ये इस प्रकार हैं :

(1) अत्यधिक सटीक विवरण प्राप्त होते हैं।

(2) अत्यधिक सूचना प्राप्त होती है, और

(3) सूचना प्राप्त करने की अन्य विधियों के माध्यम से वे पूरक सूचना संग्रहित करती हैं।

आत्मकथात्मक परंपरा के अंतर्गत डायरियाँ जीवन के दस्तावेजों में से एक हैं, जो एक स्व-उद्‌घाटन करने वाली रिकार्ड हैं जो जाने-अनजाने लेखक के मानसिक जीवन की संरचना, गति और कार्य के संबंध में सूचना प्रदान करती हैं। (अलपोर्ट, 1943)।

विद्यार्थी डायरी का नमूना

अरूणा की डायरी

कक्षा X की विद्यार्थी

सोमवार

आज कक्षा की जाँच परीक्षा है, मैं देर से जगी। मैं अलार्म लगाना भूल गई थी। मेरी बस 8.30 बजे सुबह पहुँचेगी। जल्दी से स्नान किया, गणवेश पहनी और बैग के साथ बस स्टाप की ओर दौड़ी। मैने नाश्ता नहीं किया और अपनी पालतू बिल्ली को नहीं देखा। किसी प्रकार मैं विद्यालय समय पर पहुँच गई। मैं परीक्षा के बारे में चिंतित हो गई जो आज ही होनी है। पिछली कक्षा जाँच परीक्षा बुरी नहीं थी। किंतु मैं निबंध के प्रश्न को करते समय घबरायी हूँ, कि क्या मुझे प्रश्नों को पूरा करने के लिए समय मिलेगा। शिक्षकों ने कहा कि अभ्यास से मैं ऐसा करने में सक्षम होऊँगी। मैंने निर्धारित समय में निबन्धात्मक प्रश्नों के जवाब लिखने के लिए घर पर अभ्यास करने का निर्णय लिया।

क्रियाकलाप - 3

उसकी डायरी से आपने क्या परिणाम निकाला? इसका परीक्षण करें।

7.5.5 संचयी रिकार्ड

संचयी रिकार्ड एक बच्चे के बारे में सूचना का एक व्यवस्थित लेखा जोखा है। यह एक मूल्यांकन उपकरण है जो प्रत्येक विद्यार्थी के विभिन्न पहलुओं जैसे - शारीरिक, शैक्षिक, नैतिक, सामाजिक और स्वास्थ्य की उपलब्धि का एक समग्र रिकार्ड है। संचयी रिकार्ड में लिखी गई सूचना कालांतर में विभिन्न स्रोतों से संग्रहित की जाती है। यह बच्चे की वृद्धि और विकास को दिखाने वाला एक रिकार्ड है, जबकि विद्यालय में यह उसके विद्यालय जीवन के प्रारंभ से अंत तक सभी पहलुओं का रिकार्ड है। माध्यमिक शिक्षा आयोग ने संचयी रिकार्ड के महत्त्व को निम्नलिखित शब्दों में व्यक्त किया है :

PDF Compressor Free Version

"न तो बाह्य परीक्षा न ही आंतरिक परीक्षा अकेले या एक साथ बच्चे की शिक्षा की किसी विशेष स्तर पर उसकी समग्र प्रगति का सही और पूर्ण स्थिति का परिचय दे सकती है फिर भी बच्चे के अध्ययन के पाठ्यक्रम या भविष्य के पेशे को सुनिश्चित करने के क्रम में उसका आकलन करना हमारे लिए महत्त्वपूर्ण है। इस उद्देश्य के लिए बच्चे द्वारा दिन प्रतिदिन, महीने दर महीने, सत्र दर सत्र और वर्ष दर वर्ष किये गये कार्य को दिखाने वाले विद्यालय रिकार्ड की एक उपयुक्त प्रणाली होनी चाहिए। ऐसा विद्यालय रिकार्ड शिक्षा के सफल चरणों को विभिन्न बौद्धिक क्षमता रखने वाले बच्चों की उपलब्धि का एक स्पष्ट और सतत् रिकार्ड होगा।"

संचयी रिकार्ड की जरूरत

एक विद्यार्थी के संचयी रिकार्ड की जरूरत निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं के लिए है :

- विभिन्न क्षेत्रों जैसे शारीरिक, शैक्षिक, नैतिक, सामाजिक और स्वास्थ्य में विद्यार्थी की संपूर्ण प्रगति की एक पूर्ण तस्वीर देने के लिए।
- विद्यार्थी की संक्षमताओं, रूचियों, मनोवृत्तियों और प्रतिभा का आकलन करने के लिए।
- विद्यार्थी की शैक्षिक एवं सह-शैक्षिक उपलब्धियों पर गौर करते हुए उचित दिशा निर्देश और सोच समझ प्रदान करने के लिए।
- अध्ययन पूर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी के नियोजन में अभिभावकों एवं शिक्षकों की मदद करने के लिए।
- जो बच्चे अध्ययन में कमजोर हैं उनके व्यवहार में असामान्यता को पहचानने में मदद करने में।
- विद्यार्थी की समस्याओं का समाधान करने में मदद करने के लिए।

एक संचयी रिकार्ड कार्ड की विषय वस्तु

संचयी रिकार्ड विद्यार्थी के विकास के विभिन्न पहलुओं के संदर्भ में निम्नलिखित सूचना को दर्ज करता है :

व्यक्तिगत आँकड़े : व्यक्तिगत डेटा एक बच्चे के बारे में प्रारंभिक सूचना देता है जैसे उसका नाम, लिंग, जन्म तिथि, आयु, स्थायी पता, अभिभावक का नाम और पारिवारिक पृष्ठभूमि।

शैक्षिक आँकड़े : पूर्व में पढ़े गये विद्यालयों, वर्तमान कक्षा, अनुक्रमांक, सम्मिलित हुई परीक्षाओं, परिणाम, श्रेणी, प्रतिशत, अंकों के बारे में सूचना देता है।

स्वास्थ्य सम्बन्धी आँकड़े : यह ऊँचाई, वजन, रक्तदाब, संक्रमणशील बीमारी, किया गया इलाज, भोजन की आदत, अभ्यास, पैतृक बीमारी के संबंध में सूचना उद्घाटित करता है।

सह-शैक्षिक गतिविधियों के आँकड़े : बच्चे की विभिन्न सह शैक्षिक गतिविधियों में भागीदारी, नेतृत्व क्षमता, प्राप्त प्रमाणपत्रों, पुरस्कारों और प्राप्त मेडल का रिकार्ड इसमें दर्ज होता है।

व्यक्तित्व की विशेषताएं : यह मनोवैज्ञानिक पहलू जैसे बौद्धिक क्षमता, आत्मविश्वास, संवेदनात्मक स्थायित्व, नेतृत्व का गुण, उत्तर दायित्व की समझ आदि को उद्घाटित करता है।

परामर्श एवं दिशा निर्देश का रिकार्ड : बच्चे में पायी गई कोई समस्या, साक्षात्कार की तिथि, खोजे गए कारण, उपचारी कदम, अनुवर्तन कार्यक्रम आदि वर्णित होते हैं।

PDF Compressor Free Version

समग्र सामान्य टिप्पणी : छात्र की प्रतिभा और निष्पादन पर कक्षाध्यापक और मुख्याध्यापक द्वारा की गई सामान्य टिप्पणियाँ।

> **क्रियाकलाप - 4**
>
> सीआरसी (CRC) में ऊपर दी गई विषय वस्तुओं के आधार पर विद्यार्थी का संचयी रिकार्ड कार्ड तैयार करें।

7.5.6 उपाख्यानात्मक रिकार्ड

एक उपाख्यानात्मक रिकार्ड विद्यार्थी का अवलोकित व्यवहार है। यह एक विद्यार्थी के जीवन की कुछ सार्थक कड़ी है जो आचरण, सोच, कौशलों और उसके व्यक्तित्व के बारे में उद्घारित सार्थक लक्षणों पर प्रकाश डालता है (सीसीई, सीबीएसई)।

शिक्षक द्वारा सृजित उपाख्यानात्मक रिकार्ड बच्चे के शैक्षणिक अनुभव के आंतरिक परिप्रेक्ष्य को बताता है। उपाख्यानात्मक रिकार्ड में विद्यालय में घटित घटनाओं, गतिविधियों, निष्पादन का वर्णन शामिल होता है जो बस स्टॉप, प्रार्थना सभा, कक्षाकक्ष, खेल के मैदान, समूह गतिविधि, प्रयोगशाला, भोजनकक्ष, या निष्पादन जिसे बच्चे ने कभी भी, कहीं भी पूर्ण किया हो शामिल होते हैं। आप निम्नलिखित उद्देश्यों के लिए उपाख्यानात्मक रिकार्ड का उपयोग कर सकते हैं :

- प्रत्येक बच्चे के जीवन में व्यवहारात्मक बदलावों के लम्बवत गुणात्मक तस्वीर प्राप्त करने के लिए।
- एक बच्चे के शारीरिक, सामाजिक, आर्थिक, सौंदर्यात्मक और संज्ञानात्मक विकास को जानने के लिए।
- अधिगमकर्त्ताओं का आकलन कक्षाकक्ष के साथ-साथ बाहर की गतिविधियों में करने के लिए।
- विद्यार्थी की वृद्धि और झुकावों के दस्तावेज रिकार्ड करने के लिए।
- बच्चे की मनोवृत्ति, वर्तमान कौशल स्तर, रूचियों और कौशलों को पहचानने के लिए।
- एक बच्चे के विशिष्ट व्यवहार या दो बच्चों के बीच बातचीत के बारे में गुणात्मक सूचना जैसे विवरणों को दर्ज करने के लिए।
- एक बच्चे से संबद्ध दृष्टांत, समूह में भागीदारी, लड़ाई झगड़े, नियत कार्य को पूर्ण करने में असफलता आदि का सकारात्मक के साथ नकारात्मक एवं वैध अवलोकन को लिखने के लिए।

उपाख्यानात्मक रिकार्डों को लेते समय निम्नलिखित बिन्दुओं को मस्तिष्क में रखना होगा :

- तिथि, बच्चे का नाम और अवलोकन का समय दर्ज करना।
- आपने जो देखा और सुना केवल उसे ही नोट करना।
- न्यायपरक शब्दों का उपयोग करने से बचना।
- शक्तियों और जरूरतों के लिए आपके द्वारा संग्रहित सूचना का विश्लेषण करना।
- अपनी व्याख्या को आपके पास बच्चे की जो अन्य जानकारी है उससे संबद्ध करना।
- निर्देशात्मक योजना के लिए सूचना का उपयोग करना।

आप उपाख्यानात्मक रिकार्ड का एक नमूना नीचे देख सकते हैं :

PDF Compressor Free Version

नाम : रोहन शर्मा कक्षा-9 खण्ड-ब अनुक्रमांक : 24 मास : अक्टूबर

क्रम संख्या	अवसर एवं तिथि	शिक्षक द्वारा अवलोकित स्थिति	शिक्षक का सुझाव, टिप्पणी एवं हस्ताक्षर
1.	प्रार्थना सभा 20/10/2015	(1) रोहन ने अपने मित्र रजत को भाषण के लिए लेख दिया और इसे सीखने में उसकी मदद की। (2) उसने अपने मित्र रजत की प्रार्थना सभा में बोलने में मदद की। यह उसके मजबूत सामाजिक कौशल के साथ-साथ भाषायी कौशल को दिखाता है।	रोहन बुद्धिमान एवं सहयोगी है।
2.	भाषा की कक्षा	(1) उसने अंग्रेजी बोलने की कक्षा में बेहतरीन संप्रेषण कौशल दिखाया। (2) उसकी शब्दावली और शब्दों का चयन बेहतरीन था।	रोहन को वाद-विवाद में भाग लेना चाहिए। बोलते समय उसे अपने चेहरे के भावों को सुधारने की जरूरत है। वह एक विश्वस्त विद्यार्थी है।

क्रियाकलाप - 5

किसी विद्यार्थी का अवलोकन प्रार्थना सभा/खेल के मैदान/कक्षाकक्ष में करें। दिये गए नमूने के आधार पर उसका उस दिन का उपाख्यानात्मक रिकार्ड लिखें।

7.5.7 चिंतनशील पत्रिकाएँ

विचारशील पत्रिकाएँ वह नोटबुक होती हैं जो बच्चों द्वारा उनके विद्यालय की गतिविधियों के बारे में लिखी गई होती हैं तथा उनके अपने विचारों को व्यक्त करती हैं। चिंतनों, विचारों, भावनाओं और उनके अपने अधिगम को व्यक्त करने वाले कार्य बच्चों के बहुसंज्ञानात्मक कौशलों के विकास को प्रोत्साहित करते हैं, विद्यार्थियों के स्व-मूल्यांकन में मदद करते हैं और पता लगाते हैं कि वे क्या जानते हैं और क्या नहीं जानते हैं। यह लेखन का एक हिस्सा है जो विद्यार्थियों के चिंतनों को रिकार्ड करने की स्वीकृति देता है और उनके अपने अधिगम अनुभवों के बारे में अर्न्तदृष्टि की स्वीकृति देता है। यह विद्यार्थियों के अधिगम के पुनरावलोकन और उसको समेकित करने, निष्पादन का मूल्यांकन करने, बीते हुए अधिगम अनुभव पर आधारित भविष्य के अधिगम की योजना करने को प्रोत्साहित करता है। इस प्रकार बच्चे अपने अधिगम को संभालने में सक्षम होते हैं और क्रमशः स्वतंत्र, दीर्घकालीन अधिगमकर्त्ताओं के रूप में विकसित होते हैं। किसी के अपने विचारों और भावनाओं का परीक्षण करने की प्रक्रिया विशेष रूप से उन विद्यार्थियों के लिए लाभप्रद है जो नई संकल्पनाओं को सीख रहे

PDF Compressor Free Version

हैं या जो जटिल मुद्दों को पकड़ना प्रारंभ कर रहे होते हैं जो सही और गलत जवाबों से परे होता है।

विचारशील पत्रिकायें बच्चों द्वारा संरक्षित रिकार्ड हैं जिसमें वे अपने विद्यालय या पड़ोस की कुछ गतिविधियों से संबद्ध अपने अनुभवों को लिखते हैं। शिक्षक उन्हें जो कुछ भी भिन्न दिखाई दे उसे लिखने को कहते हैं तथा जो उनके चिंतन को बढ़ाता है। फाइल में एक नोट बनाने के लिए उन्हें शिक्षक द्वारा सलाह दी जाती है और जब भी जरूरत हो उस पर वे अपना दृष्टिकोण व्यक्त करते हैं। पत्रिका विषय विशेष की भी हो सकती है जहाँ विद्यार्थी कठिन बिन्दुओं को लिख सकते हैं और मित्रों तथा शिक्षकों से जवाब प्राप्त करते हैं। पत्रिकाओं के लिए विद्यार्थी की लेखन शैली अनौपचारिक हो सकती है तथा कभी-कभी अनुपयुक्त हो सकती है। फिर भी विद्यार्थियों की एक विषय विशेष या विषय वस्तु को अच्छी तरह समझने में मदद करने के लिए आप विद्यार्थियों से अपेक्षा कर सकते हैं कि वे सही शब्दावली, तथ्यों और पाठ्यक्रम के विषय वस्तु से जुड़ी चीजों का उपयोग कर अधिक औपचारिक प्रविष्टियाँ लिखें। विचारशील पत्रिका एक उपकरण है जो विद्यार्थियों को अधिगम के बारे में लिखने और उसको प्रदर्शित करने की स्वीकृति देता है। वे सफलताओं और चुनौतियों की पहचान और उन पर विचार व्यक्त कर सकते हैं। विद्यार्थी जो सोचते और अनुभव करते हैं उनसे आप बिना धमकी दिये सूचना प्राप्त कर सकते हैं। विचारशील अधिगम पत्रिका का एक उदाहरण नीचे दिया गया है।

अपनी विचारशील अधिगम पत्रिका लिखना

बी.एड. कार्यक्रम में आपने 4 सप्ताह तक विद्यालयों का अवलोकन किया होगा। आपने विद्यालय के कार्यों, शिक्षकों के कर्तव्यों, विद्यार्थियों की भूमिका और विद्यालय में उनकी गतिविधियों तथा कक्षाकक्षों का भी अवलोकन किया होगा। 4 सप्ताह के पश्चात् आपने अपने अवलोकन पर एक रिपोर्ट दी होगी। इसके लिए आपने पत्रिका लेखन का अभ्यास किया होगा। पत्रिका की प्रत्येक प्रविष्टि में आपको अपनी प्रतिक्रिया, टिप्पणी और व्यक्तिगत अनुभव, शिक्षण-अधिगम गतिविधियों को सुधारने के लिए देना चाहिए। उदाहरणार्थ, आप सोचने से प्रारंभ कर सकते हैं :

- विद्यालय के बारे में मेरा विचार क्या है?
- क्या विद्यालय एक समावेशी प्रकृति को व्यक्त करता है?
- विद्यालय प्रमुख की नेतृत्व शैली किस प्रकार की है?
- कक्षाकक्ष के अतिरिक्त मुझे किन कर्तव्यों का निष्पादन करना है?
- मुझे मेरी कक्षा में क्या उपागम अपनाना होगा?
- मैंने जो पाठ्यक्रम में सीखा है उसे मैं विद्यालय की शिक्षण-अधिगम गतिविधियों से कैसे संबद्ध कर सकता हूँ?

नोट :
- दिये गये उपरोक्त प्रश्न स्वतंत्र ढाँचे में होने चाहिए। इसके लिए उसे गहन चिन्तन का अवसर दिया जाना चाहिए।
- केवल कुछ मार्ग–निर्देशित प्रश्न दीजिए ताकि बच्चों के अधिगम का गुणात्मक चिन्तन सम्भव हो।

PDF Compressor Free Version

इसे कैसे प्रयुक्त किया जाये?

- एक इकाई, टॉपिक या प्रोजेक्ट के दौरान विद्यार्थी के चिंतन के लिए।
- कक्षा के अंत में विद्यार्थी के स्व-आकलन के लिए एक तीव्र और सामान्य उपकरण के रूप में।
- विद्यार्थियों को उनकी सफलताओं और चुनौतियों को पहचानने एवं व्यक्त करने में समर्थ करने के लिए।
- विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के लिए एक संप्रेषण उपकरण के रूप में।
- विद्यार्थियों के अधिगम को पुनः केन्द्रित करने की एक प्रक्रिया के रूप में।

इसके उपयोग का महत्त्व :

- यह एक सामान्य प्रक्रिया है।
- यह विद्यार्थियों में उच्च स्तर के चिंतन को प्रोन्नत करता है तथा उन्होंने जो प्राप्त किया है उसे व्यक्त करने में समर्थ करता है। जहाँ भविष्य के प्रयास और समर्थन अगले सत्र में केन्द्रित होना चाहिए।
- यह विद्यार्थियों की स्व-आकलन में मदद करता है और उनके भविष्य के अधिगम के लिए लक्ष्यों को निर्धारित करने में मदद करता है।
- यह बहुत से विद्यार्थियों को उनके अधिगम में शामिल करता है और उन्हें मालिकाना एवं नियंत्रण की एक समझ देता है।
- यह विशेष रूप से अधिगम क्षेत्रों जैसे गणित, कला, विज्ञान, आई.सी.टी. और अन्तर्वैयक्तिक विकास में साक्षरता को प्रोन्नत करता है।

क्रियाकलाप - 6

भाषा के अपने विद्यार्थियों द्वारा लिखी जाने वाली विचारशील पत्रिका के लिए प्रश्नों को तैयार करें।

7.6 अनुसंधान के निहितार्थ तथा कक्षाकक्ष की सामान्य समस्यायें

बच्चे विद्यालय, कक्षाकक्ष, खेल के मैदान या फिर घर में विविध प्रकार की समस्याओं का सामना कर सकते हैं। ये समस्यायें व्यवहारात्मक, शैक्षिक या संवेदनात्मक हो सकती हैं। एक शिक्षक के रूप में आप कक्षाकक्ष शोध का आयोजन कर इन समस्याओं का समाधान कर सकते हैं। कुछ सामान्य समस्यायें और उनके निहितार्थ इस प्रकार हैं :

शारीरिक और लैंगिक परिपक्वता :

किशोर अपने अध्ययन, अपने शरीर तथा शारीरिक बदलावों और विकासात्मक चरणों जिससे वे गुजर रहे होते हैं से संबद्ध कई प्रकार की समस्याओं का सामना करते हैं। लैंगिक परिपक्वता दूसरी समस्या है जिसका किशोर सामना करते हैं। इस आयु के दौरान विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण एक अद्भुत अनुभव है जिस पर चर्चा करने में वे कठिनाई महसूस करते हैं।

PDF Compressor Free Version

तात्पर्य : विद्यार्थियों को बदलावों और किशोरों की समस्याओं के बारे में जागरूक किया जाना चाहिए। विद्यालय को किशोर शिक्षा कार्यक्रम का आयोजन करना चाहिए। अभिभावकों को अपने बच्चों के साथ लिंग और लैंगिक परिपक्वता से संबद्ध समस्याओं पर चर्चा करनी चाहिए। अभिभावकों द्वारा उन्हें जागरूकता प्रदान किया जाना चाहिए कि सेक्स कोई गुनाह नहीं है बल्कि यह सामाजिक मान्यताओं और सामाजिक स्वीकृति के अनुरूप होना चाहिए।

दिशा निर्देश का अभाव

बड़े विद्यार्थियों द्वारा सामना किया जाने वाली एक अन्य समस्या है जीवन वृत्ति के लिए दिशा निर्देश का अभाव। माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तरों पर विषयों और उससे संबद्ध जीवन वृत्ति का चयन आसान नहीं हैं। वे बहुत भ्रम का अनुभव करते हैं क्योंकि उन्हें जीवन वृत्ति के अवसरों और कार्य के संसार का अल्प ज्ञान होता है।

तात्पर्य : शिक्षकों, अभिभावकों और विद्यालय के परामर्शदाताओं को एक साथ कार्य करना चाहिए और विद्यार्थियों को विविध जीवन वृत्तियों, उनके लिए योग्यता की जरूरत का ज्ञान देना चाहिए। किशोरों को उनकी रूचियों, योग्यताओं, अभिरूचियों के बारे में परामर्श देने की जरूरत है तथा उनके भविष्य के लिए एक सुनिश्चित योजना बनाने में मदद करने की जरूरत है।

किशोरों का भ्रम

किशोर प्रायः अपनी स्थिति (विद्यालय में घर या साथियों के बीच) के बारे में भ्रमित अनुभव करते हैं। यदि कोई व्यक्ति कड़ी मेहनत के बावजूद अच्छे अंक प्राप्त करने में सक्षम नहीं होता तो वह भ्रमित हो जाता है कि उसने अच्छे से अध्ययन नहीं किया था, कि उसने उत्तर पुस्तिका में प्रश्नों का सही जवाब नहीं दिया। धीरे-धीरे वे अपने अभिभावकों से अपने शैक्षणिक परिणामों या ग्रेडों के बारे में बातचीत करने से भयभीत होने लगते हैं। वे अपने स्वयं के अस्तित्व पर संदेह करना प्रारंभ कर देते हैं।

तात्पर्य : किशोरों को उनके शिक्षकों द्वारा निर्देशित किये जाने की जरूरत हैं। शिक्षक अपने विद्यार्थियों में विश्वास पैदा करते हैं। उन्हें अधिगम की रणनीतियाँ संप्रेषित करनी चाहिए और उनके ज्ञान को कॉपी में सही-सही एवं प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने के कौशल को विकसित करना चाहिए। शिक्षक को तनाव से जूझने की रणनीति भी विकसित करनी चाहिए ताकि विद्यार्थी तनाव मुक्त वातावरण में सीख सकें और जी सकें।

अधिगम स्तर से संबद्ध समस्यायें :

बहुत से बच्चों को एक विशेष कार्य को लम्बे समय तक करने में समस्यायें प्रतीत होने लगती हैं। उनका शैक्षणिक निष्पादन एक या अधिक विषयों में खराब हो सकता है। वे अधिगम में बेहतर निष्पादन के बारे में नहीं सोचते हैं और इन विद्यार्थियों में उपयुक्त ध्यान और एकाग्रता का अभाव होता है।

तात्पर्य : शिक्षक को सभी विद्यार्थियों को सभी प्रकार के अधिगम में शामिल करने की कोशिश करनी चाहिए। जब भी किसी विद्यार्थी को जरूरत हो उसे शिक्षक द्वारा दिशा निर्देश प्रदान किया जाना चाहिए। उन्हें विद्यार्थियों की अल्प उपलब्धि के कारणों को पहचानना चाहिए। समस्या को जानने के पश्चात् शिक्षक को तदनुसार कार्य करना चाहिए।

सहपाठियों के साथ समस्यायें

कुछ बच्चे दूसरों को मारते, पीटते और झगड़ते रहते हैं तथा धमकी देते और बेइज्जती करते रहते हैं और प्रायः अस्वाभाविक गुस्सा अपने सहपाठियों के प्रति दिखाते हैं। व्यवहारात्मक

PDF Compressor Free Version

समस्याओं वाले कुछ बच्चे दूसरों को शारीरिक या मौखिक रूप से प्रताड़ित करने की ओर प्रवृत्त हो जाते हैं। ये कक्षाकक्ष में खतरा उत्पन्न कर सकते हैं । अपने सहपाठियों को दिखाने के लिए कि उनका निष्पादन सर्वोत्तम है वे नियम के विरूद्ध व्यवहार करते हैं और इस कारण से कक्षाकक्ष के आकर्षण के केन्द्र बन जाना चाहते हैं।

तात्पर्य : आपको कक्षाकक्ष में समूह गतिविधियों की पहल करनी चाहिए और सहपाठियों के साथ सहयोगी एवं अंतःक्रियात्मक अधिगम पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। आपको न केवल अधिगम के सुसाधक के रूप में कार्य करना चाहिए बल्कि विद्यार्थियों के बीच सहयोग को भी प्रोत्साहित करना चाहिए।

अपनी प्रगति जाँचें – 5

नोट: (अ) नीचे दिये गए स्थान में अपने उत्तर लिखें।

(ब) अपने उत्तर की तुलना इकाई के अंत में दिये गए उत्तरों से करें।

i) किन्हीं दो सामान्य समस्याओं को लिखें जिन्हें आपने अपने कक्षाकक्ष में अवलोकित किया है। आप इन समस्याओं को कैसे सुलझायेंगे?

....

....

....

....

7.7 सारांश

कक्षाकक्ष शोध शिक्षण और अधिगम का औपचारिक अध्ययन है। कक्षाकक्ष शोध एक शोध है जो बच्चों को समझने और कक्षाकक्ष की समस्याओं का समाधान करने के क्रम में कक्षाकक्ष में आयोजित किया जाता है। विद्यार्थी शैक्षिक रूप से, व्यवहारात्मक रूप से और संवेदनात्मक रूप से जिन समस्याओं का सामना कर रहे हैं उसको समझने के लिए शिक्षक कक्षाकक्ष में शोध का आयोजन करता है। यह दो मूलभूत प्रश्नों का जवाब देने का प्रयास करता है - (i) विद्यार्थी कितनी अच्छी तरह से सीख रहे हैं? (ii) शिक्षक कितने प्रभावी ढंग से पढ़ा रहे हैं? क्रिया शोध है - " समस्या के समाधान को कर के सीखना।" लोगों का एक समूह एक समस्या की पहचान करता है, इसे हल करने के लिए कुछ करता है, देखता है कि उसके प्रयास कितने सफल थे और यदि इससे संतुष्ट नहीं है तो पुनः प्रयास करता है। क्रिया शोध प्रक्रिया एक समस्या का पता लगाना प्रारंभ करता है और फिर समस्या के लिए संभाव्य क्रियाओं का सूत्रण करता है, एक क्रिया को अपनाता है और अंततः क्रिया के परिणाम का मूल्यांकन करता है। केस अध्ययन एक व्यक्ति, समूह, घटना या समुदाय की गहन जाँच पड़ताल है। यह एक ऐसी विधि है जो शोध के एक विस्तृत क्षेत्र को संकीर्ण बनाती है। क्रिया शोध और केस अध्ययन शोध की विधियों के रूप में कुछ विविध शोध उपकरणों के उपयोग को अनुमति देता है जैसे अवलोकन, स्व-रिपोर्ट, बच्चों के साथ अंतःक्रिया, बच्चों की डायरी, संचयी रिकार्ड, उपाख्यानात्मक रिकार्ड और विचारशील पत्रिकायें आदि। ये डेटा का त्रिकोणात्मक उपयोग करते हैं। बच्चे विद्यालय, कक्षाकक्ष, खेल का मैदान या घर में विविध समस्याओं का सामना करते है। ये समस्यायें व्यवहारात्मक, शैक्षणिक या संवेदनात्मक हो सकती हैं। एक शिक्षक और विद्यालयी लोग कक्षाकक्ष शोध का आयोजन कर इन समस्याओं का समाधान कर सकते हैं।

PDF Compressor Free Version

7.8 इकाई अंत्य अभ्यास

(1) 'कक्षाकक्ष शोध' शब्द से आप क्या समझते हैं? क्रिया शोध की प्रक्रिया को परिभाषित करें।

(2) शोध की एक विधि के रूप में केस अध्ययन पर चर्चा करें। इसकी खूबियों एवं कमियों को भी लिखें।

(3) कौन-कौन से विविध उपकरण हैं जिनका उपयोग कक्षाकक्ष शोध में होता है? विस्तार से लिखें।

(4) कक्षा IX के विद्यार्थियों की शैक्षणिक एवं पारिवारिक समस्याओं के अध्ययन पर एक सर्वेक्षण का आयोजन करें।

7.9 प्रगति जाँच के उत्तर

1. खण्ड 7.4.1 देखें।
2. अपने उत्तर स्वयं लिखें।
3. प्रश्नावलियाँ स्व-रिपोर्ट विधि की एक प्रकार हैं जिनमें प्रश्नों का एक समुच्चय होता है जो प्रायः एक लिखित संरचना में होते हैं जबकि साक्षात्कार दो व्यक्तियों साक्षात्कारकर्ता एवं साक्षात्कार देने वाले के बीच एक मुखाभिमुख बातचीत है।
4. अपने स्वयं के अवलोकन लिखें।
5. खण्ड 7.6 देखें।

7.10 संदर्भ और उपयोगी सामग्री

- चेरी, के. (एन.डी.). नेच्यूरलिस्टिक ऑबजर्वेशन. क्लासरूम, स्टडीज इन लिटरेचर ऐण्ड लैंग्वेज, वॉल. 1, नं. 4. से लिया गया।
- कोहेन, एल., मैनिअन, एल., ऐण्ड मॉरिसन, के. (2005). रिसर्च मेथड्स इन एजूकेशन, फिफ्थ एडिशन. लंदन न्यूयॉर्क : रॉवटलेज फाल्मर
- गेय, एल.आर., ऐण्ड ऐरासियन, पी. (1999). एजूकेशनल रिसर्च, सिक्स्थ एडिसन. न्यू जर्सी : प्रेन्टिस हॉल.
- गुलौटा, टी.पी., एड्म्स, जी.आर., ऐण्ड मार्कस्ट्रोम, सी.ए. (1999). द एडोलेसेन्ट एक्सपिरिएन्स (फोर्थ एडीसन), सैन डियागो : एकेडेमिक प्रेस. पृ. 38
- हेक्साव, पॉल (2001). क्लासरूम रिसर्च : गेटिंग स्टार्टेड इन स्मॉल-स्केल रिसर्च प्रोजेक्ट्स इन द क्लासरूम. पी.ए.सी. 3 कान्फेरेन्स प्रोसिडिंग्स.क्योटो इंसटिट्यूट ऑफ टेक्नॉलॉजी. http://psychology.about.com/od/nindex/g/naturalistic.htm से 10/1/2016 को लिया गया।
- जोशी, ए. (एन.डी.). गाइड लाइन्स फॉर मेन्टेनिंग क्युमुलेटिव रिकार्ड कार्ड इन स्कूल्स. रिट्राइव फ्रम http://www.preservearticles.com/201105116440/cumulative-records/cards.html से लिया गया।

PDF Compressor Free Version

- मैकलियॉड, एस. (2008). केसी स्टडी. http://www.simplypsychology. org/case-study.html. से 05/10/2015 को लिया गया।
- मेजरिंग ऐण्ड इंप्रूविंग टीचर-स्टूडेन्ट इंटरैक्संस इन पी के- 12 सेटिंग टू इन्हांस स्टूडेन्ट्स लर्निंग (एन.डी.) http://www.curry.virgini.edu/castl से 11/1/2016 को लिया गया।
- मर्टलर, सी.ए. (2013). क्लासरूम बेस्ड एक्सन रिसर्च : रिविजिटिंग द प्रोसेस एज कस्टमाइजेबल ऐण्ड मीनिंगफुल प्रोफेसनल डेवेलप्मेंट फॉर एडूकेटर्स. जर्नल फॉर पेडागाजिक डेवेलप्मेन्ट, 3(3), pp. 38-41. http://www.beds.ac.uk/_data/assets/pdf_file/0005/2981-30. classroom-based-action-research-revisiting-the-process-as-customizable-andmeaningful-professional-development for education.pdf को लिया गया।

मुहम्मद, के.वी., ऐण्ड मोहमेदुन्नी, एम.एन. (2013). हाउ टीचर्स कैन रिकोग्नाइज ऐण्ड डील विथ बिहैवियर्लस प्रॉब्लेम्स ऑफ एडोलेसेन्ट्स इन द क्लासरूम? कनफलक्स जर्नल ऑफ एडूकेशन. वाल्यूम 1. इस्यू 2 पृ. 19

निस्बेत, जे., ऐण्ड वाट, जे. (1984). केस स्टडी : कन्डक्टिंग स्मॉल-स्केल इंवेस्टिगेसंस इन एडूकेशनल मैनेजमैन्ट. लंदन : हार्पर ऐण्ड रॉ.

ओ ब्रेइन, रॉरी. (1998). एन ओवरविवु ऑफ द मेथॉडालॉजिकल एप्रोच-ऑफ ऐक्सन रिसर्च http://www.web.ca/-robrien/paper/arfinal.html से 20/01/2015 को लिया गया।

रिसर्च इंटरव्यूज : फॉर्म्स ऑफ इंटरविव. (एन.डी.). http://www.informat.org/researchmethods/researchmethods-2-00.html से 05/10/2015 को लिया गया।

सस्मैन, जी.आई. (1983). ऐक्सन रिसर्च : ए सोशियो-टेक्निकल सिस्टम्स पर्सपेक्टिव. लंदन : सेज पब्लिकेशन्स.

वाटकिन्स, एल. (एन.डी.). रिफ्लेक्टिव जर्नल्स. http://www.education.vic.gov.au/studentlearning/assessment/preptoyear10/tools/ से 05/10/2015 को लिया गया।

वैक्समैन, एच.सी. (एन.डी.). क्लासरूम ऑब्जर्वेसन. http://education.stateuniversity.com/pages/1835 से 05/10/2015 को लिया गया।

यिन, आर.के. (1984). केस स्टडी रिसर्च : डिजाइन ऐण्ड मेथॉड्स. न्यूबरी पार्क, सी ए: सेज पब्लिकेशन्स।

ज्हांग, बेन्नान (एन.डी.). गेजिंग एबाउट विथ ए चेकलिस्ट' ऐज ए मेथोड ऑफ क्लासरूम आब्जर्वेशन इन द फील्ड एक्सपिरियन्स सुपर विजन ऑफ प्री-सर्विस टीचर्स : ए केस स्टडी, सेकेण्ड सिम्पोजियम ऑन फील्ड एक्सपिरियन्स. हाँग काँग इंस्टिट्यूट ऑफ एजूकेशन. www.ied.edu.hk/fesyon/2A03-005fullpaper.pdf. से 06/10/2015 को लिया गया।